**यीशु कौन है**

मसीही जीवन श्रंखला

यीशु कौन है

7वाँ संस्करण

लेखकः एल्टन जी. हिल

ग्लोबल यूनिवर्सिटी

आपके क्षेत्र में ग्लोबल यूनिवर्सिटी के कार्यालय का पताः

ग्लोबल यूनिवर्सिटी स्टाफ की मदद से विकसित

रूपरेखा

प्राक्कथन

मसीही जीवन कार्यक्रम

शुरू करने से पहले

इकाई एक

अध्याय

1 यीशु के बारे में जानना

2 यीशु, वायदारत मसीहा

3 यीशु, परमेश्वर का पुत्र

4 यीशु, मनुष्य का पुत्र

5 यीशु, वचन

इकाई दो

अध्याय

6 यीशु, जगत की ज्योति

7 यीशु, चंगाईकर्ता एवं बपतिस्मादाता

8 यीशु, मुक्तिदाता

9 यीशु, पुनरूत्थान और जीवन

10 यीशु मसीह, प्रभु

इकाई मुल्यांकन

इकाई

1 मूल्यांकन

2 मूल्यांकन

अंतिम शब्द

**प्राक्कथन**

यीशु मसीह का जन्म लगभग 2000 साल पहले हुआ। उसके बारे में हम इस पाठ्यक्रम का अध्ययन क्यों करें? उसके बारे में जानने से हम पर क्या फर्क पड़ता है? सवाल मायने रखता है। आप इसी का जवाब इन अध्यायों में पाएँगे।

इतिहास के किसी भी समय से अधिक आज संसार में लोगयीशु मसीह के बारे में बातें कर रहे हैं। करोड़ों लोग उसके अनुयायी होने का दावा करते हैं। क्यों? आपका धर्म कोई भी हो, आप यीशु के बारे में जानकारी पाने के लिए स्वयं के प्रति कर्जदार हैं - उसका जीवन, उसकी शिक्षाएँ और उसके दावे।

शायद आप इस पाठ्यक्रम का अध्ययन यीशु के जीवन और शिक्षाओं को जानने की स्वयं की जिज्ञासा के कारण कर रहे होंगे। या शायद आपने यीशु को अपना मुक्तिदाता मान लिया है और उसके बारे में अधिक जानना चाहते हैं। आप अपने जीवन में आत्मिक सच्चाईयों को जानना, अपने विश्वास को सुदृढ़ बनाना या यह देखना चाहते होंगे कि क्या यीशु के पासआपके जीवन की समस्याओं का समाधान है।

आपका मकसद कुछ भी हो, इस बात को अवश्य मन में रखना। इस अध्ययन को आप जितना अधिक अपने जीवन में लागु करोगे, आपको इनमें उतनी ही अधिक भलाईयाँ मिलेंगीं।

एल्टन जी. हिल

**इकाई एक**

**अध्याय**

1 यीशु के बारे में जानना

2 यीशु वायदारत मसीहा

3 यीशु परमेश्वर का पुत्र

4 यीशु मनुष्य का पुत्र

5 यीशु वचन

**अध्याय 1**

**यीशु के बारे में जानना**

आपके विचार में, यीशु कौन है? कुछ लोग कहते हैं कि वह एक महान शिक्षक थे। कुछ कहते हैं, वह एक भविष्यद्वक्ता हैं, एक तत्वशास्त्री हैं, एक पाश्चात्य ईश्वर हैं, या एक भले व्यक्ति हैं जिन्हे हम अपना आदर्श बना सकते हैं।

परंतु यीशु मात्र एक शिक्षक, भविष्यद्वक्ता अथवा तत्वशास्त्री से बढ़कर थे। और वो पश्चिम देशों से नही थे इसलिए हम उन्हे पाश्चात्य ईश्वर भी नही कह सकते हैं। यीशु मसीह का जन्म करीब 2000 साल पहले मध्य पूर्वी देश में हुआ था। यद्यपि उन्होने कोई स्मारक स्थल नही बनाया, या किसी सेना को आदेश नही दिया, उनके जीवन ने संपूर्ण संसार पर प्रभाव डाला। और यद्यपि वे हजारों साल पहले जन्मे, आज भी लोग उन्हे व्यक्तिगत रूप से जानने का दावा करते हैं। वे कहते हैं कि यीशु ने उनके जीवन को बदला है, और वे उसके लिए मरने के लिए भी तैयार हैं। तो, यीशु है कौन?

इस पहले अध्याय में हम पता करेंगे कि यीशु कौन हैं। हम उसके बारे में जानने के दो तरीकों से प्रारंभ करेंगे।

**योजना**

1. बाइबल यीशु को प्रकट करती है

2. व्यक्तिगत अनुभव बताता है कि यीशु कौन है।

**लक्ष्य**

1. यह जानना कि यीशु के बारे में जानने के लिए आप बाइबल पर निर्भर क्यों हों

2. यह विचार विमर्श करना कि अपने व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा कैसे जान सकते हैं कि यीशु कौन है।

अ. बाइबल यीशु को प्रकट करती है

लक्ष्य 1： यह जानना कि यीशु के बारे में जानने के लिए आप बाइबल पर निर्भर क्यों हों

**बाइबल की सटीकता**

यीशु के बारे में सही जानकारी पाने के लिए हम उस पुस्तक में जाते हैं जिसमें उसके जीवन और शिक्षाओं के बारे में लिखा है - बाइबल। बाइबल पैंतीस से चालीस लेखकों के द्वारा लिखी गई छियासठ किताबों का संग्रह है।

बाइबल के लेखक विभिन्न व्यवसायों को करने वाले थे। वे व्यवसायी, चरवाहे, किसान, मछुवारे, भविष्यद्वक्ता, याजक, चिकित्सक, विद्वान, सरकारी कर्मचारी और राजा भी थे। वे 1600 सालों के दर्मियान विभिन्न समयों में जीए, परंतु उन सबमें निम्न बातें समान थीं：

1. उन सबने एक परमेश्वर - यहोवा - संपूर्ण सृष्टि के कर्ता की आराधना की।

2. उन सबके सामने परमेश्वर प्रकट हुए और मानवजाति के बारे में उसके संदेश को पाया।

3. उन्होने वही लिखा जो परमेश्वर ने उन्हे लिखने को कहा।

जब इन लेखकों ने अतीत के लेखों, भविष्य में होने वाली घटनाओं, हर युग एवं परिस्थितियों के लिए परमेश्वर के संदेशों को लिखा जो परमेश्वर ने उन्हे गलतियों को करने से बचाए रखा। कई सालों पहले, परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए इन सब लेखों को एक पुस्तक में संग्रहित किया गया - पवित्र बाइबल।

क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे। (2 पतरस 1：21)

बाइबल अपने हर विवरण में सटीक है। यह ऐतिहासिक और वैज्ञानिक तौर पर सही है। राष्ट्रों और व्यक्तियों के बारे में हजारों सालों पहले की गई भविष्यद्वाणियों का पूरा होना साबित करता है कि यह वास्तव में परमेश्वर का वचन है। यह यीशु के बारे में जो बताती है उस पर हम भरोसा कर सकते हैं।

**प्रयोग**

1. बाइबल के लेखकों के बारे में लिखे निम्नलिखित कथनों में तीन सही हैं। सही कथनों पर गोला लगाएँ।

अ. वे एक समय में जीने वाले थे।

ब. उन्होने समान परमेश्वर की आराधना की।

स. उन्होने कई ईश्वरों की आराधना की।

द. उन्होने परमेश्वर से संदेशों को प्राप्त किया।

य. उन्होने वह सब लिखा जो वे लिखना चाहते थे।

र. उन्होने वह सब लिखा जो परमेश्वर लिखवाना चाहता था।

ल. उन्होने अपनी किताबों में गलतियों को लिखा।

2. बाइबल यीशु के बारे में जो बताती है, उस पर हम भरोसा कर सकते हैं क्योंकि बाइबलः

अ. कई विवरणों से भरी एक लंबी पुस्तक है।

ब. छोटी छोटी पुस्तकों का संग्रह है।

स. परमेश्वर का सटीक वचन है।

**बाइबल का विषय**

करीब 1600 सालों के दौरान चालीस लोगों के द्वारा लिखी गई छियासठ किताबों को ही एक पुस्तक में संग्रहित क्यों किया गया? इसलिए, क्योंकि इन सबमें एक समान विषय निहित है। वे सब मिलकर हमें एक तश्वीर के विभिन्न पहलू दिखाते हैं। बाइबल में लिखे इतिहास, नियम, गीत, भविष्यद्वाणी, जीवकथा, एवं प्रायोगिक शिक्षाओं में एक समान केंद्रीय विषय दौड़ता है। वो विषय है प्रेमी परमेश्वर के द्वारा पापी मानवजाति को दिया गया उद्धार अथवा मोक्ष।

बाइबल के दोनों भाग - पुराना नियम एवं नया नियम - लोगों की मसीहा की जरूरत एवं परमेश्वर के द्वारा मसीहा - प्रभु यीशु मसीह - के प्रबंध को दिखाते हैं। यीशु के जन्म से पहले लिखे गए पुराने नियम में उसके बारे में भविष्यद्वाणियाँ लिखी हैं। नया नियम बताता है कि किस प्रकार उद्धारकर्ता आया और हम मोक्ष कैसे पा सकते हैं। पूरी बाइबल का केंद्रीय विषय - संपूर्ण मानवजाति का उद्धार - सारे लोगों के उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह पर आधारित है।

प्रयोग

3. बाइबल का विषय .................. के द्वारा पूरी मानवजाति का उद्धार है

अ. बेहतर नियमों

ब. उद्धारकर्ता यीशु मसीह

स. एक अच्छे माहौल

द. विकसित धर्म

4. दाँयी ओर लिखे दो विकल्पों में से सही विकल्प की संख्या को रिक्त स्थान में भरें

अ. ........... बताता है कि उद्धारकर्ता आया।

1. पुराना नियम

ब. ........... उद्धारकर्ता के जीवन और उद्धार पाने

2. नया नियम के तरीके को बताता है

स. ..........में मसीहा के बारे में अनेक भविष्यद्वाणियाँ हैं

यीशु मसीह के बारे में नये नियम के लेख

नये नियम में हम निम्न बातों का लेख पाते हैं：

1. यीशु का जीवन और शिक्षाएँ

2. उसके द्वारा स्थापित कलीसिया

3. यीशु के पीछे चलने के निर्देश

4. यीशु के पुनरागमन की भावी घटनाएँ

हम नये नियम की सटीकता पर भरोसा कर सकते हैं। परमेश्वर ने इसे लिखने के लिए लोगों को चुना और इसके हर ब्यौरे के साथ उन्हे प्रेरित किया। तीन बातें हमें नये नियम की सटीकता के बारे में बताती हैः 1) दैवीय प्रेरणा, 2) लेखकों की आँखोंदेखी गवाही एवं 3) तथ्यों की क्रमबद्ध जाँच।

मती, मरकुस, लूका और यूहन्ना ने अपने नाम से पुकारे गये चार सुसमाचारों को लिखा। वे नये नियम की पहली चार पुस्तकें हैं। उन्हे सुसमाचार कहते हैं क्योंकि सुसमाचार का अर्थ है खुशखबरी। यीशु मसीह के मनुष्यों को अनंत जीवन देने के आगमन के बारे में बताने वाली यह खुशखबरी एक सर्वश्रेष्ठ खबर है।

हम लोगों को विभिन्न नजरियों से देखते हैं। एक जानकार व्यक्ति की कल्पना करें। एक व्यक्ति के लिए वो एक पड़ोसी है, तो दूसरे के लिए वो एक मित्र है, तो किसी और के लिए पति, पिता या सहकर्मी है। हर कोई उस व्यक्ति के बारे में लिख सकता है परंतु विभिन्न दृष्टिकोणों एवं बल के द्वारा।

परमेश्वर ने मती, मरकुस, लूका और यूहन्ना को यीशु के बारे में विभिन्न नजरियो से लिखने का बल दिया।

ऽ मती यीशु को राजा दिखाता है - संसार पर धार्मिकता के साथ राज करने वाला दाउद का वंशज।

ऽ मरकुस यीशु को परमेश्वर की इच्छा पूरी करने वाला परमेश्वर का दास दिखाता है - पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों में वर्णित कष्ट सहने वाला दास जो हमारे पापों के बदले मरने आया।

ऽ लूका, एक चिकित्सक, यीशु को मनुष्य का पुत्र दिखाता है - मानवजाति का सही प्रतिनिधि एवं पूरी मानवजाति की हर बुराईयों का समाधान।

ऽ यूहन्ना अपना सुसमाचार यीशु को परमेश्वर का पुत्र दिखाने के लिए लिखता है - संसार का उद्धारकर्ता।

यूहन्ना की पुस्तक उस व्यक्ति के जीवन की कथा का लेख है जिसे वो जानता और करीब है। यूहन्ना एक गवाह के रूप में साबित करता है कि यीशु कौन है। उसका मकसद सुसमाचार को पढ़ने वाले हर व्यक्ति को यह समझाना है कि यीशु मात्र एक मनुष्य से बढ़कर है - वह मनुष्य के भेष में आया परमेश्वर है। और वो एलान करता है कि यीशु पर विश्वास करने वाला हर व्यक्ति उद्धार पाएगा। यह एक महत्वपूर्ण - एकदम सच्चा कथन है। और हम बाइबल में देख सकते हैं कि यीशु के दूसरे अनुयाईयों के द्वारा लिखी गई बातों में वे आपस में सहमत हैं। यीशु के बारे में कहे गए उनके शब्द सच्चे हैं।

मती और यूहन्ना यीशु के साथ सेवकाई में साढ़े तीन साल का समय बिता चुके बारह चेलों मे से दो चेले थे। उन्होने जो चमत्कार देखे, जो शिक्षाएं सुनीं और जो उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान के बारे में व्यक्तिगत तौर पर अनुभव किया, उन सब बातों को लिखा।

यूहन्ना यीशु मसीह की दैविकता को प्रमाणित करता एवं उस पर विश्वास करने की जरूरत पर जोर देता है। मती को यीशु का चेला बनने से पहले औद्योगिक कागजातों के साथ कार्य करने की पहचान थी। एक एक बिन्दु के द्वारा उसने प्रमाणित किया कि यीशु मसीह पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों में वर्णित मसीहा ही है। वह भविष्यद्वाणियों एवं उनके पूरे होने का उल्लेख करता, यीशु के राजकीय वंश को दिखाता एवं उसके राज्य के सिद्धांत को बताता है।

सूचनाः हम ‘सेवकाई’ शब्द का इस्तेमाल अक्सर करते हैं। एक अर्थ में, ‘सेवकाई’ धर्म की सेवा का कार्य है। परंतु इसका एक और अर्थ, किसी का कार्य करना है। एक सेवक, कलीसिया के क्लर्जी की भांति धार्मिक कार्य करने वाला अथवा सार्वजनिक लाभ करने वाला कार्यकर्ता हो सकता है। सरकार में, कई सरकारी विभागों के मंत्री (मिनिस्टर) एवं उनका मुखिया प्रधानमंत्री होता है। तो ‘यीशु की सेवकाई’ से हमारा तात्पर्य उसके द्वारा पूरी मानवजाति को लाभ पहुँचाने के लिए किए गए कार्य हैं।

मरकुस यीशु मसीह की सेवकाई के समय का एक नौजवान था। वह उस भीड का भाग था जिसे यीशु मसीह के प्रचार को सुना, चमत्कारों को देखा और क्रूसीकरण को देखा। बाद में, यही मरकुस पतरस का साथी बन गया और उसी से अपने सुसमाचार में लिखे विवरण की जानकारी पाई।

चिकिस्तक लूका ने यीशु से संबंधित जानकारियों को सावधानीपूर्वक एकत्रित किया। उसने दो पुस्तकों (सुसमाचार एवं प्रेरितों के काम) को लिखा जिसमें उसने मसीह के जीवन और उसकी कलीसिया की उन्नति से संबंधित सही जानकारियों को प्रस्तुत करता है। लूका ने यीशु मसीह के चमत्कारिक जन्म, जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान की सुचनाओं को प्राप्त करने के लिए यीशु की माता मरियम और दूसरों का इंटरव्यू किया। उसने यीशु के द्वारा की गई कई चंगाईयों और उनसे संबंधित घटनाओं के बारे में जानकारी ली।

नये नियम के दूसरे लेखक, पतरस, याकुब, यहूदा और पौलुस, भी यीशु के बारे में बताने के लिए पूरी तरह से निपुण थे। पतरस, यीशु के साथ उसके चेले के रूप में, साढ़े तीन साल तक रहा था। याकुब और यहूदा यीशु के भाई थे। पौलुस यीशु मसीह और उसके अनुयाईयों का कट्टर दुश्मन था। परंतु उसकी यीशु के साथ एक अद्भुत मुलाकात हुई और उसका जीवन पूर्णतया बदल गया। उस समय से पौलुस अपना पूरा जीवन यीशु के बारे में बताने में लगा दिया।

परमेश्वर ने इन लोगों को हमारे लिए (और उनके समय के लोगों के लिए भी) वो सारी लिखने के लिए प्रेरित किया जो वे यीशु के बारे में जानते थे। उन सबके लेख एक दूसरे से सहमत हैं। अपने अनुभवों से वे बताते हैं कि हम भी कैसे यीशु को जान सकते और उसके द्वारा मिलने वाले जीवन का पूरा आनंद उठा सकते हैं। यूहन्ना इसका सार लिखता हैः

जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।(1 यूहन्ना 1：3)

**प्रयोग**

5. 1 यूहन्ना 1：3 याद करें

6. यीशु से संबंधित नये नियम का लेख

अ. यीशु के जानने वालों और उससे संबंधित लोगों की जानकारियों को पाकर लिखा गया।

ब. पहली शताब्दी की किसी किवदंती के एक कथा-पात्र से संबंधित ब्यौरा है।

स. लिखे जाने से पहले, मौखिक तौर पर पीढ़ी से पीढ़ी की ओर स्थानांतरित कहानियाँ हैं।

7. यीशु मसीह के बारे में बाइबल के कथनों को सही दिखाने वाले वाक्यों के अक्षरों पर गोला लगाएँ।

अ. बाइबल में लिखी गई अधिकतर घटनाएँ कई सालों पहले मध्य पूर्वी देशों में संपन्न हुईं हैं।

ब. सुसमाचारों को यीशु के जानने वालों ने लिखा अथवा उससे संबंधित लोगों से जानकारियों को पाकर लिखा।

स. बाइबल के सभी लेखक परमेश्वर के द्वारा प्रेरित थे।

द. बाइबल में गीत, इतिहास और नियम लिखे हैं।

य. बाइबल में लिखीं सैंकड़ों भविष्यद्वाणियाँ पूर्ण रूप से पूरी हो चुकी हैं।

ब. व्यक्तिगत अनुभव बताता है कि यीशु कौन है।

लक्ष्य 2： यह विचार विमर्श करना कि अपने व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा कैसे जान सकते हैं कि यीशु कौन है।

यीशु जीवित हैं और हम उन्हे व्यक्तिगत रूप से जान सकते हैं। यह सुसमाचार की खुशखबरी का हिस्सा है। यीशु आज भी अपने लोगों के लिए वही करते हैंजो उन्होने सालों पहले किए थे।

**दूसरों का अनुभव**

क्या आप किसी को जानते हैं जो यीशु मसीह को व्यक्तिगत तौर पर जानता या जानती हो? यहाँ केवल यीशु को जानने अथवा किसी मसीही कलीसिया का हिस्सा बनने की बात नही हो रही है। यीशु को व्यक्तिगत रूप से जानने वाले के जीवन में परिवर्तन नजर आता है। आज संसार में यीशु को करोड़ों लोग जानते हैं। वे आपको यीशु के बारे में बताने में खुश होंगे। उनमें से कुछ लोग कहते हैं किः

* मैं हर एक से घृणा किया करता था परंतु जब मैं यीशु से मिला तो उसने मुझे बदल दिया। अब मैं लोगों से प्रेम करता और उनकी मदद करना पसंद करता हूँ।
* मेरे अंदर हमेशा गलती का एक बहुत बड़ा बोझ बना रहता था, परंतु जब मैं प्रभु यीशु से मेरे सारे पापों की क्षमा माँगी तो उसने मेरे सारे बोझ को दूर कर दिया। उसने मुझे खुशी, शांति और शुद्ध विवेक प्रदान किया।
* यीशु मसीह ने मुझे सता रहे हर डर को दूर कर दिया। वह मुझे हर समस्या का सामना करने की ताकत देता है।
* यीशु मसीह मुझे जीने की वजह, मेरे जीवन का मकसद प्रदान करता है।
* यीशु मसीह मेरी हर समस्या का समाधान हैं। मैं हर चीज को प्रार्थना में उसके पास ले जाता हूँ। वह मुझे बताता है कि क्या करूँ और मेरी हर जरूरत को पूरा करता है।
* मैं अब अकेला नही हूँ। यीशु सदा मेरे साथ है।
* मैं नशे की लत में पड़ चुका था, परंतु जब मैने अपना जीवन यीशु के हाथों में सौंपा, तो उसने नशे के प्रति मेरी हर लालसा को दूर हटा दिया।

ऽ यीशु मसीह ने मेरी प्रार्थनाओं को सुनकर कई बार मुझे चंगाई दी है।

ये कहानियाँ और यीशु को व्यक्तिगत रूप से जानने वालों की ऐसी अनगिनत गवाहियाँ परमेश्वर के द्वारा कहे गए सच को साबित करती हैं। इब्रानियों 13：8 सत्यापित करता है, ‘‘यीशु मसीह, कल, आज और सदा सर्वदा एक समान है।’’

**प्रयोग**

8 इब्रानियो 13：8 को याद करें।

9 सोचिएः जब आप लोगों के द्वारा उनके यीशु से मिलने की व्यक्तिगत गवाहियों को सुनते हैं जैसे कि कुछ उदाहरण ऊपर लिखे थे, तो आप क्या सोचते हैं? क्या आप भी यीशु को व्यक्तिगत तौर पर जानना चाहेंगे? क्या ये गवाहियाँ ऐसा विश्वास करने में आपकी मदद कर पा रही हैं कि यीशु मसीह पर व्यक्तिगत तौर पर विश्वास करने से आपकी समस्याएँ दूर हो सकती हैं?

**आपका व्यक्तिगत अनुभव**

आप कैसे जान सकते हैं कि यीशु कौन है? आप उसके बारे में बाइबल को पढ़ने से जान सकते हैं। वहाँ आप उसके जीवन और शिक्षाओं के बारे में जान सकते हैं। आप जान सकते हैं कि वह इस दुनिया में क्यों आया और उसने आपके लिए क्या किया। बाइबल यह भी बताती है कि यीशु अब क्या कर रहे हैं और भविष्य में क्या करेंगे। आप दूसरों के अनुभवों से भी यीशु के बारे में जान सकते हैं। सालों से आज इस घड़ी तक, लोगों ने यह पाया है कि यीशु उनके सामने स्वयं को अवश्य प्रकट करते हैं जो वास्तव में उसे जानना चाहते हैं। और उससे भी बेहतर, आप स्वयं उसे व्यक्तिगत तौर जान और अनुभव कर सकते हैं कि बाइबल उसके बारे में जो कहती है, वह सच है।

आपने शायद यीशु को अपने जीवन भर जाना होगा, या फिर उसके बारे में आपको अधिक पता नही होगा। आप शायद उसे जानते होंगे, उससे प्रेम करते हों, या फिर, शाऊल की तरह, जो यीशु का दुश्मन था परंतु उससे व्यक्तिगत मुलाकात करते ही उसका जीवन बदल गया, आप भी सुसमाचार के विरोधी होंगे। यीशु के बारे में आपका ज्ञान और उसके प्रति आपका रवैया कैसा भी हो, इन अध्यायों के माध्यम से, आप व्यक्तिगत तौर पर उसके बारे में जान और उसके पास आ सकते हैं। और जब आप ऐसा करते हैं, तो हमारा विश्वास और आशा है कि आप यीशु के साथ मित्रता के द्वारा आने वाली हर आशीष का लाभ उठा पाएँगे।

**प्रयोग**

10 निम्नलिखित वाक्यों में उन तीन वाक्यों के अक्षरों पर गोला लगाएँ जो यीशु के बारे में जानने के बेहतर तरीकों को बताते हैं：

अ) बाइबल में उसके बारे में लिखी गई बातों का अध्ययन करें।

ब) धर्म उसके बारे में जो कहता है, उसका अध्ययन करें।

स) विभिन्न धर्मों की शिक्षाओं की तुलना कर अध्ययन करें।

द) यीशु को व्यक्तिगत तौर पर जानने वालों से सुनें कि उसने उनके लिए क्या क्या किया है।

य) स्वयं यीशु को व्यक्तिगत रूप से जानें।

र) यीशु के दुश्मनों की बातों को सुनें।

**अपने उत्तरों को जाँचें**

ध्यान दें कि अध्याय में लिखे अध्ययन प्रश्नों के उत्तरों को यहाँ सही क्रम में नही लिखा गया है। ऐसा करने की वजह केवल यह है कि आप इन उत्तरों को अध्याय पूरा होने से पहले ही न देख लें। जिस संख्या के प्रश्न को कर रहे हैं, उसे ही देखें। प्रश्न करने से पहले ही उत्तर को देखने की कोशिश न करें।

4 अ) 2) नया नियम

अ) 2) नया नियम

स) 1) पुराना नियम

1 इ उन्होने समान परमेश्वर की आराधना की।

क उन्होने परमेश्वर से संदेशों को प्राप्त किया।

उन्होने वह सब लिखा जो परमेश्वर लिखवाना चाहता था।

6. अ) यीशु के जानने वालों और उससे संबंधित लोगों की जानकारियों को पाकर लिखा गया।

2 स) परमेश्वर का सटीक वचन है।

7. सभी कथन सही हैं, तौभी इ) ब) और म) यीशु मसीह के बारे में बाइबल के कथनों को सही दिखाने वाले वाक्य हैं।

3 ब) उद्धारकर्ता यीशु मसीह

10 अ) बाइबल में उसके बारे में लिखी गई बातों का अध्ययन करें।

क यीशु को व्यक्तिगत तौर पर जानने वालों से सुनें कि उसने उनके लिए क्या क्या किया है।

म स्वयं यीशु को व्यक्तिगत रूप से जानें।

**अध्याय 2**

**यीशु वायदारत मसीहा**

वायदे हमारे जीवन का हिस्सा हैं। माता पिता अपने बच्चों से वादा करते हैं। नेता, व्यवसायी, मित्र, वादे करते हैं। किसी के द्वारा हमसे किए गए वादों के पूरा होने का इंतजार करने का अनुभव हम सबको मिला है। कई बार हमें काफी लंबे समय तक इंतजार करना पड़ा है! और कई बार हम निराश भी हुए हैं।

परमेश्वर ने भी वायदेकिये हैं। यीशु मसीह के जन्म से कई शताब्दियों पहले, मसीहा अर्थात अभिषिक्त के आगमन का वायदा दिया गया। उसने अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बात की कि यह मसीहा कैसा होगा और क्या करेगा।

जब यीशु आए तो उसके बारे में भविष्यद्वाणियों को जानने वाले लोगों ने कुछ महत्वपूर्ण देखा। उन्होने देखा कि यीशु के कथन और कार्य उन भविष्यद्वाणियों से बिल्कुल मिलते जुलते थे। उनको पता चल गया कि यीशु मसीह परमेश्वर के वायदारत् मसीहा ही थे। परमेश्वर ने अपने वचन को पूरा किया।

इस अध्याय में, आप यीशु के बारे में लिखी गई विभिन्न भविष्यद्वाणियों के बारे में अध्ययन करेंगे। उसके बारे में लिखी गई रोचक बातों को आप देख पाएँगे।

**योजना**

अ. बाइबल की भविष्यद्वाणियों को समझना

ब. मसीहा से संबंधित सच्चाईयाँ

**लक्ष्य**

1. बाइबल की विभिन्न भविष्यद्वाणियों का वर्णन करें।

2. उन तरीकों को पहचानें जिनके द्वारा यीशु मसीह मसीहा के बारे में लिखी गई भविष्यद्वाणियों को पूरा करते हैं।

अ. बाइबल की भविष्यद्वाणियों को समझना

लक्ष्य 1. बाइबल की विभिन्न भविष्यद्वाणियों का वर्णन करें। ब. मसीहा से संबंधित सच्चाईयाँ

भविष्यद्वाणियाँ परमेश्वर के वे संदेश हैं जिसे उसने संदेशवाहकों अर्थात भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा अपने लोगों तक पहुँचाया। उनके द्वारा उसने लोगों को बताया कि वह करना चाहता था और उन्हे भविष्य में होने वाली घटनाओं के बारे में बताया।

परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं को उसके संदेश, प्रकाशन लिखने के लिए प्रेरित किया और वही आज हमारे पास बाइबल के रूप में मौजूद है। इनमें से कई सारी भविष्यद्वाणियाँ पूरी भी हो चुकी हैं जिनका थोड़ा बहुत ब्यौरा इसमें दिया गया है। बाइबल में उन अधिकतर भविष्यद्वाणियों के ऐतिहासिक तौर पर पूरे होने के बारे में लिखा गया है। बची हुई भविष्य में पूरी होंगीं।

**भविष्यद्वाणियाँ महत्वपूर्ण हैं**

बाइबल की भविष्यद्वाणियों का पूरा होना हमें बताता है कि बाइबल वही है जो यह स्वयं के बारे में कहती है - परमेश्वर का वचन। और कौन भविष्य के इन ब्यौरों के बारे में जानता है, कौन बता सकता है कि सालों बाद, भविष्य के किसी समय में, किसी जगह पर, किसके साथ क्या होने वाला है! परमेश्वर ने समय से पहले अपने मकसद को बताकर एवं भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कही गई बातों को समय पर पूरा कर यह साबित कर दिया है कि बाइबल प्रेरित अथवा प्राधिकृत है।

तीन कारण हमें बताते हैं कि आने वाले मसीहा के बारे में पुराने नियम में लिखी गई भविष्यद्वाणियाँ हमारे लिए महत्वपूर्ण क्यों हैं：

1. हम इन भविष्यद्वाणियों के आधार पर यीशु मसीह के जीवन को नापकर पता लगा सकते हैं कि वे वायदारत् मसीहा ही हैं या नही।

2. भविष्यद्वाणियों के द्वारा हम यीशु एवं उसके आगमन के मकसद को बेहतर तरीके से जान सकते हैं।

3. हम जान सकते हैं कि परमेश्वर अपने वायदों को पूरा करने वाला परमेश्वर है। जिस प्रकार यीशु के बारे में कही गई भविष्यद्वाणियों का प्रथम चरण पूरी सटीकता के साथ पूरा हुआ, भविष्य के बारे में की गई भविष्यद्वाणियाँ भी अवश्य पूरी होंगीं।

**प्रयोग**

1 भविष्य की घटनाओं से संबंधित बाइबल की भविष्यद्वाणियाँ：

अ. वे संदेश हैं जो भविष्यद्वक्ताओं से मृतकों से प्राप्त किये।

इ नक्षत्रों के अध्ययन से प्राप्त की गई जानकारियाँ हैं।

बअपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दिए गए परमेश्वर के संदेश हैं।

2 मसीहा के आगमन की भविष्यद्वाणियाँ हैं क्योंकि वेः

अ. दिखाती हैं कि परमेश्वर अपने वायदों को पूरा करता है।

इ बाइबल के समय के राजनैतिक हालातों के बारे में बताती हैं।

ब अच्छी तश्वीरों और प्रतीकों को प्रकट करती हैं।

मसीहा की भविष्यद्वाणियाँ एक के बाद एक दी गईं

उद्धारकर्ता से जुड़ी भविष्यक्षणियों को हम मसीहा भविष्यद्वाणी कहते हैं। यहाँ इब्री भाषा का शीर्षक ‘मसीहा’ का उपयोग है जिसका अर्थ है ‘‘अभिषिक्त।’’ परमेश्वर के द्वारा चुने और विशेष कार्य में नियुक्त किए जाने के लिए याजकों, राजाओं और भविष्यद्वक्ताओं को तेल से अभिषेक दिया जाता था। आ रहे मसीहा को भी पवित्र आत्मा का अभिषेक दिया जाएगा कि वो उसका कार्य कर सके। जब हम यीशु की बात करते हैं तो हम यीशु मसीहा, अभिषिक्त, मसीहा भविष्यद्वाणी के पूर्तिकरण की बात करते हैं।

मसीहा के आगमन के परमेश्वर के वायदे 4000 साल के दौरान रहने वाले लोगों को दिये गये। उनमें से कुछ यीशु मसीह के द्वारा पृथ्वी पर किए जाने वाले कार्यों को बताते हैं। तो कुछ, भविष्य के उसके अनंत राज्य के बारे में बताते हैं। इनमें से कुछ भविष्यद्वाणियाँ उस समय की स्थानीय परिस्थितियों में दिए गए संदेशों में दी गईं, उनका विस्तार उस स्थानीय हालात से लेकर मसीहा के आगमन तक था।

समय के बीतने के साथ साथ, परमेश्वर के मसीहा के बारे में और भी बातों को प्रकट करना जारी रखा, कि उसका जन्म कहाँ होगा, वे कहाँ मरेंगे, वे क्या करेंगे। वास्तव में, कुछ विद्यार्थियों ने पुराने नियम में मसीह से संबंधित 300 से ज्यादा तथ्यों को ढ़ूँढ़ निकाला है। परमेश्वर चाहता था कि जब मसीहा आए तो सारे लोग उसे पहचान सकें।

**प्रयोग**

3 मसीहा शीर्षक का अर्थ हैः

अ. अभिषिक्त

इ विजेता

ब बलिदान

4 परमेश्वर ने मसीहा संबंधी भविष्यद्वाणियाँ：

अ. मसीहा के जन्म के 4000 साले पहले दी।

इ 4000 साले के दौरान कई समयों पर दी।

ब 4000 साले जीवित अपने एक एक भविष्यद्वक्ता को दी।

**मसीहा को दिखाने वाली रस्में**

पुराने नियम के लोगों के द्वारा उपयोगी आराधना की रस्में भविष्यद्वाणीय थीं। परमेश्वर ने मसीहा के आगमन को दिखाने वाले बलिदान के एक संपूर्ण तंत्र को स्थापित कर रखा था जो लोगों को बचाने के लिए अपनी जान देगा। याजकों का कार्य यीशु के द्वारा पूरी मानवजाति को बचाने जाने के लिए किये जाने वाले कार्य की तश्वीर था। नये नियम की इब्रानियों नामक पूरी किताब साबित करती है कि प्रभु यीशु मसीह पुराने नियम में दिखाई गई भविष्यद्वाणीय तश्वीर में किस प्रकार बिल्कुल सही बैठता है।

पूरे संसार में हम उन किस प्रकार रीतियों और रस्मों की झलक को देख सकते हैं जो परमेश्वर ने मनुष्य के पाप करने की वजह से शुरू करीं। अनेक धर्मों की आराधनाओं में हम उन चिन्हों को देख सकते हैं जो वास्तव में यीशु की ओर इशारा करती हैं। इन धर्माेअ. के लोगों को उन रस्मों के सही अर्थ को समझने के लिए बाइबल को पढ़ना काफी होगा।

5क्या आप अपने आस पास हो रही धार्मिक रस्मों को जानते हैं? क्या आप उनका अर्थ बता सकते हैं?

6इस बात को समझने का एकदम सही तरीका कि प्रभु यीशु मसीह पुराने नियम में दिखाई गई भविष्यद्वाणीय तश्वीर बिल्कुल सही बैठता है, यह है कि

अ.अपने इलाके में हो रही धार्मिक रस्मों के बारे में सोचें

इबाइबल के लिखे मसीहा भविष्यद्वक्ताओं के नाम याद करें

बनये नियम की इब्रानियों नामक पुस्तक का अध्ययन करें

अ. बाइबल की भविष्यद्वाणियों को समझना

लक्ष्य 2. उन तरीकों को पहचानें जिनके द्वारा यीशु मसीह मसीहा के बारे में लिखी गई भविष्यद्वाणियों को पूरा करते हैं।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने मसीहा के बारे में कई सारी भविष्यद्वाणियाँ कीं। आपके अध्याय में उनमें से पाँच के बारे में बताया गया है।

मानुषिक एवं दैविक

हम मसीहा की पहली भविष्यद्वाणी को बाइबल की पहली पुस्तक उत्पति में पाते हैं। परमेश्वर उसे स्त्री की संतान के रूप में पेश करते हैं। वह स्त्री से जन्मेगा। प्रथम पुरूष एवं स्त्री, आदम और हव्वा ने पाप किया। परमेश्वर के दुश्मन, शैतान उन्हे परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ने के लिए प्रेरित कर चुका था। इससे वे परमेश्वर से अलग हो गए और उन पर शैतान ने ताकत पा ली। परंतु परमेश्वर ने वायदा किया कि एक उद्धारकर्ता जन्मेगा जो शैतान से लड़कर उसका नाश करेगा। परमेश्वर ने शैतानसे कहा, ‘‘मैं तेरे और स्त्री के बीच, तेरी और उसकी संतान के बीच शत्रुता उत्पन्न करूँगा।

तश्वीर पेज 33

तत्पश्चात कई शताब्दियों के दौरान, परमेश्वर ने अनेक लोगों के माध्यम से उद्धारकर्ता के बारे में बताना जारी रखा। उसका जन्म बेतलेहेम में होगा जो आज फिलिस्तीन के नाम से जाना जाता है। तौभी वह मात्र साधारण मनुष्य नही होगा। वो अनंत था। उसका अस्तित्व अनंत था, परंतु वही एक शिशु के रूप में जन्मेगा और बाद में इस्राएल के शासक के तौर पर बढ़ेगा। मीका ने भविष्यद्वाणी कीः

‘‘हे बेतलेहेम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिये एक पुरूष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करनेवाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन अनादि काल से होता आया है।’’ (मीका 5：2)

बेतलेहेम एप्राता का मतलब, एप्रातअथवा एप्राता नामक कस्बे के पास, बेतलेहेम नामक एक गाँव। (उत्पति 35：19, 48：7) (रूत 4：11 देखें) न्यायियों में इसे बेतलेहेम यहूदा के नाम से भी देख सकते हैं। (17：7) इसे अलग दिखाना जरूरी है क्योंकि इस्राएल के अन्य गोत्र स्थलों के बीच में एक और यरूशलेम भी था। (यहोशु 19：15) परंतु यह यरूशलेम यहूदा में, एप्राता या एप्रात नामक एक बड़े कस्बे के पास था।

यीशु के जन्म के 700 साले पहले, परमेश्वर ने यशायाह भविष्यद्वक्ता को दिखाया कि आने वाला मसीहा मानुषिक और दैविक दोनो होगा। उसका जन्म एक कुँवारी से, मानुषिक पिता की मदद के बिना, होगा। उसका एक नाम ‘इम्मानुएल’ होगा जिसका अर्थ है ‘‘परमेश्वर हमारे साथ।’’

‘‘और प्रभु स्वयं एक चिन्ह देगा; एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक बच्चे को जन्म देगी और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।’’ (यशायाह 7：14)

‘‘क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।’’ (यशायाह 9：6)

आप यीशु के जन्म के बारे में मती और लूका के सुसमाचारों में पढ़ सकते हैं। उसका जन्म मानुषिक पिता के बिना और एक कुँवारी के द्वारा हुआ। यह परमेश्वर - पवित्र आत्मा की सामर्थ से हुआ। मानवीय एवं दैवीय, यीशु इम्मानुएल - ‘परमेश्वर हमारे साथ’ था। यीशु के इस धरती पर कहे गए अंतिम शब्दों को देखिए, ‘‘और युग के अंत तक मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ।’’ (मती 28：20)

**प्रयोग**

7 हम जानते हैं कि यीशु मसीह पुराने नियम में बताए गए ‘इम्मानुएल’ हैं क्योंकिः

अ. उनका जन्म बेतलेहम के एप्राता में हुआ

इ उनका जन्म पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ

ब वे एक महान और बु़िद्धमान गुरू थे

बलिदान एवं उद्धारकर्ता

परमेश्वर ने अपने कई भविष्यद्वक्ताओं को दिखाया कि उद्धारकर्ता हमारे पापों के लिए खुद के प्राणों का बलिदान देगा। यीशु के आने से पहले, लोगों के पापों के लिए जानवरों की बलियाँ हुआ करती थीं। पापी व्यक्ति याजक के पास मेम्ना या बकरी लाता था कि उसे मारकर वेदी के ऊपर जलाया जाए।

यशायाह का तिरेपनवाँ अध्याय बताता है किस प्रकार परमेश्वर उद्धारकर्ता को हमारे पापों के लिए बलिदान बनाएगा और वो कैसे दुबारा जिंदा हो जाएगा। यीशु हमारे पापों के लिए बलिदान और हमारे उद्धारकर्ता बने। भविष्यद्वक्ताओं ने बताया कि कब, कहाँ और कैसे यीशु को उसका एक करीबी मित्र पकड़वाएगा, उस पर गलत आरोप लगेंगे, कैद में डाला जाएगा, अपमानित होगा, क्रूस पर चढ़ाया और दफनाया जाएगा। और फिर, वो दुबारा जिंदा हो उठेगा।

8 यीशु मसीह ने पुराने नियम में पापों के सभी रिवाजों को पूरा किया क्योंकिः

अ. वो हमारे लिए मरे

इ उन्होने कई सारे भले काम किए

ब उन्होने हमें परमेश्वर के बारे में बताया

भविष्यद्वक्ता, याजक एवं राजा

पुराने नियम की भविष्यद्वाणियाँ बताती हैं कि मसीहा का परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता, याजक एवं राजा के तौर पर अभिषेक किया था। भविष्यद्वक्ता के तौर पर, वो हमारे लिए परमेश्वर की आवाज होंगे, याजक के तौर पर, वो हमारे परमेश्वर के सामने हमारी आवाज होंगे और राजा के तौर पर, वो हमारे लिए परमेश्वर का हाथ बनकर, हमारी मदद करेंगे और हमें चलाएँगे। वह हमें जीने के स्तर प्रदान करेगा और हमारे जीवन में परमेश्वर के नियम को लागु करेगा।

जब यीशु मसीह ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई शुरू की, उसने लोगों के सामने इन मसीहाई पदों को उन्हे बताने के लिए पढ़ा कि वे उन्हे यहाँ पूरा होते हुए देख रहे हैं：

‘‘प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूँ; कि बंधुओं के लिये स्वतंत्रता का और कैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करूँ;कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूँ; कि सब विलाप करनेवालों को शान्ति दूँ।’’

भविष्यद्वक्ता। मूसा यीशु के जन्म के करीब 1400 साल पहले एक महान भविष्यद्वक्ता, धार्मिक अगुवा और यहूदियों का शासक था। परमेश्वर ने उसके द्वारा लोगों से बात की। उसने उन्हे बंधुवाई में से निकाला। उसकी सेवकाई में कई सारे चमत्कार हुए और साबित किया कि परमेश्वर ने उसे लोगों के अगुवे के तौर पर भेजा है। मूसा ने लिखा,

‘‘तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात् तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी (भविष्यद्वक्ता) को उत्पन्न करेगा; तू उसी की सुनना;’’ (व्यवस्थाविवरण 18：15)

यीशु कई तरीकों में मूसा के समान थे। परमेश्वर ने उसके द्वारा बात की। उसने महान चमत्कार किए। उसने लोगों को पाप की बंधुवाई में से निकाला। भविष्यद्वक्ता के तौर पर, उन्होने कई सारी भविष्यद्वाणियाँ कीं, जैसे कि, क्रूस पर अपनी मृत्यु, तीन दिन के पश्चात पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण, उनके अनुयायी क्या करेंगे, पवित्र आत्मा का आगमन, सुसमाचार का प्रसार, यरूशलेम मंदिर का ढ़ाया जाना इत्यादि। और ये सब यीशु के कहे अनुसार पूरा हुआ। उसकी अन्य भविष्यद्वाणियाँ आज पूरी हो रही हैं। और हम जानते हैं कि बाकी सारी भविष्यद्वाणियाँ भी पूरी होंगी।

याजक।भजनकार ने मसीहा के बारे में लिखाः ‘‘यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा, कि तू मलकीसिदक की रीति पर सर्वदा का याजक है।।’’ (भजन 110：4) पुराने नियम में सर्वप्रथम वर्णित याजक ‘मलकीसिदक’ था और ऐसा लगता है कि उसे स्वयं परमेश्वर ने चुना था। पुराने नियम के सभी याजकों ने लोगों के लिए प्रार्थनाएँ कीं और बलिदान चढ़ाए।

यीशु मसीह जब इस धरती पर थे तो अपने लोगों के लिए बहुत प्रार्थनाएँ कीं और आज भी करते हैं। हमारे पापों के लिए उन्होने अपने जीवन को ही बलिदान चढ़ा दिया। अब हम प्रभु यीशु हमारे याजक के द्वारा परमेश्वर के पास क्षमा के लिए जा सकते हैं। जब भी हम उसके पास प्रार्थना में जाते हैं, हमारा याजक हमारी जरूरतों को उसके सामने पेश करता है।

राजा। पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों के अनुसार, कितना महान और विजयी राजा होगा हमारा मसीहा! व्ह परमेश्वर और मानव, दोनों के दुश्मन, शैतान को हराएगा। वह पाप, बिमारी, दुख और मौत पर विजय हासिल करेगा। वह दुष्टता के प्रभाव को हराकर, सिद्ध न्याय एवं शांति के राज को स्थापित करेगा। वह संसार की सारी समस्याओं का समाधान करेगा। कोई शक नही कि क्यों लोग उसके आगमन की इंतजार में क्यों हैं! यशायाह 9：6 में लिखी शांति के राजकुमार की भविष्यद्वाणी इस प्रकार आगे कहती हैः

उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए ओर संभाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।’’ (यशायाह 9：7)

आप सुसमाचारों में देख सकते हैं कि कुछ लोगों ने यीशु को परमेश्वर का पुत्र कहा। वही दाऊद की गद्दी के कानूनी वारिस हैं। उसके अनुयाईयों ने उसके द्वारा किए गए चमत्कारों में मसीहा के द्वारा स्थापित होने वाले अद्भुत राज्य की झलक को देखा। कई लोग उसे उसी समय राजा बनाना चाहते थे। परंतु यीशु मसीह अपना वैश्विक राज्य स्थापित करने को तैयार नही थे। सबसे पहले, उसने हमारे दिल और जीवन में परमेश्वर के राज्य के स्तर और शर्तों को दिया। अब हम ऐसे समय में हैं कि यीशु को अपने जीवन में स्वीकार करने के लिए हम लोगों को आमंत्रित करें। वह उन सबको पाप और शैतान के चंगुल से छुड़ाता है जो उसे राजा के रूप में स्वीकार करता है।

यीशु ही संसार के वास्तविक राजा हैं। एक दिन वो इस धरती पर अपने लोगों के लिए आएँगे। वो यहाँ अपना राज्य स्थापित करेंगे जिसे हर कोई देख सकेगा और हमेशा राज करेंगे। इसीलिए यह जरूरी है कि हम यीशु के बारे में जानें कि वो कौन है और हमसे क्या चाहता है।

**प्रयोग**

9 मसीहा से संबंधित भविष्यद्वाणी की संख्या को उस सही कथन के सामने लिखें जो बताता है कि किस प्रकार यीशु ने उन्हे पूरा किया।

अ. अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान की भविष्यद्वाणी की 1) मानवीय और दैवीय

इहमारे पापों के लिए अपनी जान दी 2) बलिदान एवं उद्धारकर्ता

ब) दाऊद के सिंहासन का कानूनी वारिस था 3) भविष्यद्वक्ता

क) अपने अनुयाईयों के लिए प्रार्थना की 4) याजक

म) कुँवारी मरियम का पुत्र था 5) राजा

पवित्र आत्मा की सामर्थ से उत्पन्न हुआ

10 मान लें कि आपका मित्र पूछता है कि ‘‘आपको कैसे पता कि यीशु ही वायदारत् मसीहा है’’ तो आप क्या उत्तर देंगे? एकदम उचित लगने वाले उत्तर के अक्षर पर गोला बनाएँ।

अ. यीशु मसीह ने पुराने नियम में मसीहा के बारे में लिखी भविष्यद्वाणियों को पूरा किया।

इसभी धर्म मानते हैं कि यीशु एक भले व्यक्ति और बुद्धिमान शिक्षक थे।

बपुराने नियम के कई भविष्यद्वक्ताओं ने एक अभिषिक्त के आगमन के बारे में भविष्यद्वाणी की।

मसीहा के बारे में पुराने नियम की भविष्यद्वाणियाँ अलग अलग धागों के समान थीं। और यीशु के आने के बाद, लोगों ने जब उसमें इन सबको देखा, तब ये सब अच्छे तरीके से बुनी गईं। अगले अध्याय में हम देखेंगे कि यीशु परमेश्वर के पुत्र कैसे हैं।

अपने उत्तरों को जाँचें

6 ब नये नियम की इब्रानियों नामक पुस्तक का अध्ययन करें

1 ब अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दिए गए परमेश्वर के संदेश हैं।

7 इ उनका जन्म पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ

2 अ. दिखाती हैं कि परमेश्वर अपने वायदों को पूरा करता है।

8 अ. वो हमारे लिए मरे

3 अ. अभिषिक्त

9 अ. 3) भविष्यद्वक्ता

इ 2) बलिदान एवं उद्धारकर्ता

ब 5) राजा

क 4) याजक

म 1) मानवीय और दैवीय

1) मानवीय और दैवीय

4 इ 4000 साले के दौरान कई समयों पर दी।

10 सभी कथन सही हैं। परंतु केवल इ ही उचित सबूत को पेश करता है जो कहता है कि यीशु मसीह ने पुराने नियम में मसीहा के बारे में लिखी भविष्यद्वाणियों को पूरा किया।

5 आपका उत्तर। लोगों के द्वारा बलिदान चढ़ाना दिखाता है कि वे पापी हैं और उनका मानना है कि परमेश्वर उनसे क्रोधित है।

**अध्याय 3：**

**यीशु, परमेश्वर का पुत्र**

परमेश्वर के बारे में कुछ जानकारियाँ अन्य जानकारियों से आसान हैं। उदाहरण के तौर पर, हम बिना किसी दिक्कत के समझ सकते हैं कि परमेश्वर एक पिता के समान है। और वो इसलिए, क्योंकि पिता का होना या बनना हमारे नित दिन के जीवन का अनुभव है। हमने देखा है कि अच्छे पिता अपने बच्चों के लिए प्रबंध करते एवं उनसे प्रेम करते हैं।

परमेश्वर के बारे में अन्य तथ्य समझने में आसान नही हैं। इसमें चकित होने की कोई बात नही है! हमारा परमेश्वर महान, अनंत और महिमामयी सृष्टिकर्ता है, उसके विचार एवं मार्ग हमसे कहीं परे हैं। परमेश्वर के बारे में एक बात जो समझने में कठिन है, वो है इस अध्याय का शीर्षक, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। परमेश्वर एक है, और उसका एक पुत्र भी है जो सामर्थ, ताकत और महिमा में उसके बराबर है।

यह अध्याय विशिष्टता के साथ बताता है कि बाइबल यीशु को परमेश्वर का पुत्र कैसे बताती है। यह एक महत्वपूर्ण अध्याय है। केवल यह विश्वास करना काफी नही है कि यीशु एक अच्छा व्यक्ति था। आपको यह निश्चय होना चाहिए कि वही परमेश्वर है जो इस धरती पर मनुष्य बनकर आया। इस अध्याय को सीखते वक्त, आप देख पाएँगे कि केवल यीशु में ही आपको पाप और दुष्टता में से अब और हमेशा के लिए छुटकारा देने की सामर्थ है।

**योजना**

अ. पुत्र का पिता से रिश्ता

ब. पुत्र का अनुयाईयों से रिश्ता

**लक्ष्य**

1. विशिष्टता के साथ वर्णन करें कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

2. बताएँ कि परमेश्वर के पुत्र और उसके अनुयाईयों के रिश्ते के बारे में बाइबल क्या कहती है।

**अ. पुत्र का पिता से रिश्ता**

लक्ष्य 1： विशिष्टता के साथ वर्णन करें कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

पिता और पुत्र अनंतता से ही एक हैं

बेतलेहम में जन्म लेने से पहले ही यीशु परमेश्वर, अपने पिता के पास थे। अध्याय 2 में आप मीका 5：2 में लिखी मीका की भविष्यद्वाणी के बारे में पढ़ते हैं, जहाँ वह मसीहा की प्राचीन उत्पति के बारे में बताता है, ‘‘जिसकी शुरूआत प्राचीनकाल, अनादिकाल से ही है।’’

क्रूस पर चढ़ाए जाने से एक शाम पहले, यीशु ने प्रार्थना की, ‘‘और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहिले, मेरी तेरे साथ थी।’’ (युहन्ना 17：5)

यीशु मसीह, संसार की सृष्टि के दौरान पिता के साथ थे। यूहन्ना यीशु को वचन कहता है और अपना सुसमाचार इस प्रकार शुरू करता हैः

‘‘आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।’’ (यूहन्ना 1：1-3)

पुराने नियम में एक भेद है जिससे कई पाठक संदेह में पड़े हैं। उत्पति 1：26 परमेश्वर के कथन को कहता है कि, आओ, हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएँ।’’ परमेश्वर किससे बात कर रहा था। यूहन्ना का कथन इस भेद को समझने में मदद करता है। यीशु, परमेश्वर का पुत्र, सृष्टि के समय उसके साथ था। और जैसा कि आप अध्याय 2 से याद करते हैं, यशायाह मसीहा को ‘‘पराक्रमी परमेश्वर’’ और ‘‘अनंत पिता’’ कहता है। (यशायाह 9：6) परंतु इससे भी अधिक है।

बाइबल सिखाती है कि एकमात्र सच्चा परमेश्वर, सृष्टिकर्ता है। तौभी, पुराना नियम 2300 से भी ज्यादा बार उसके लिए बहुवचन का इस्तेमाल करता है - एलोहीम। एलोहीम - अनुवाद परमेश्वर, के कार्यों को अक्सर बहुवचन के सर्वनाम और क्रिया के साथ दिखाया जाता है। इनका इस्तेमाल सृष्टि के वर्णन में किया गया है। कई बार एलोहीम को एकवचन के रूप में इसतेमाल किया गया है जिससे लगता है कि एक से अधिक लोग ‘‘एक’’ होकर कार्य कर रहे हैं। बाइबल ‘एक’ शब्द का उपयोग एकता या संख्या दिखाने के लिए करती है। दैवीय एकता अर्थात परमेश्वर एक से अधिक व्यक्तियों से बना है।

‘‘आदि में परमेश्वर (एलोहीम) ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। ... तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडलाता था। फिर परमेश्वर (एलोहीम) ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं ...।’’ (उत्पति 1：1-2, 26)

पुराने और नये नियम में मनुष्य के सामने परमेश्वर का प्रकाशन जैसे जैसे बढ़ता जाता है, हम देखते हैं कि ये तीन व्यक्ति - पिता, पुत्र और पवित्रात्मा कहलाते हैं। हम उन्हे त्रिएक परमेश्वर या पवित्र त्रिएकता कहते हैं जिसका अर्थ है, तीन पवित्र एक व्यक्ति में। वे मकसद, सामर्थ और स्वभाव में एक हैं। उन्होने सदैव एकता और एकसारता में ही कार्य किया है। सृष्टि में ऐसा ही किया। जब यीशु धरती पर थे, तो उन्होने किया। और वे हमेशा एक साथ ही कार्य करेंगे। ‘परमेश्वर’ नाम पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के लिए इस्तेमाल किया जाता है। उनमें अंतर समझने के लिए हम पिता को परमेश्वर, पुत्र को धरती के नाम, यीशु और पवित्र आत्मा के नाम से जानते हैं।

यीशु ने अपने पिता के साथ संबंध को, मैं पिता में और पिता मुझमें जैसे कथनों से व्यक्त किया। यूहन्ना 17：21-23 कहता है कि ‘‘हे पिता, जैसा मैं आपमें और आप मुझमें हैं, वे भी हममें हों .... वे भी एक हो सकें जैसे हम एक हैं .... मैं उनमें और आप मुझमें।’’

पिता परमेश्वर ने पुत्र की प्रार्थना को स्वीकार किया जैसा हम यूहन्ना 17：5 में पढ़ते हैं। हमारे पापों के लिए मरने के पश्चात, परमेश्वर ने उसे मृतकों में जिंदा कर दिया। चालीस दिन के बाद लोगों ने उसे स्वर्ग जाते देखा। उसके बाद परमेश्वर ने कईयों को अपने दाहिने हाथ बैठे पुत्र की महिमा को देखने का अवसर दिया, जैसे स्तिफनुस ने देखा।

‘‘परन्तु उस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर की दहिनी ओर खड़ा देखा।’’ (प्रेरितों 7：55)

**प्रयोग**

1 बाइबल के अनुसार, पुत्र का पिता के साथ रिश्ता

अ. सृष्टि से शुरू हुआ

इ पहले से ही था

ब उसके जन्म से शुरू हुआ

2 पवित्र त्रिएकता का अर्थ है

अ. तीन व्यक्तियों में एक परमेश्वर

इ) दैवीय तीन एक व्यक्ति में

ब) तीन परमेश्वर, एक दूसरे के एकदम समान

3 पवित्र त्रिएकता के तीनों व्यक्तियों को दर्शाने वाला आयत

अ. मीका 5：2

इ यूहन्ना 17：5

ब प्रेरितों 7：55

**यीशु परमेश्वर को अपना पिता कहते हैं**

यीशु जानते थे कि परमेश्वर उनका पिता है और दूसरों को बताते भी हैं। उन्होने हर समय परमेश्वर को अपना पिता कहा। (उस समय भी जब वे बारह वर्ष के थे) उन्होने प्रार्थना में परमेश्वर को अपना पिता कहा। उन्होने लोगों से कहा कि परमेश्वर पर विश्वास करने वालों को वो अनंत जीवन देने आए हैं।

‘‘परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया। जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परंतु अनंत जीवन पाए।’’ (यूहन्ना 3：16)

यीशु ने अपने पिता की बातों को पूरा कर उनका सम्मान किया जिसके लिए उन्हे भेजा गया था। उन्होने लोगों को बताया कि परमेश्वर कितने अद्भुत हैं और उन्हे अपनी सामर्थ के स्रोत के बारे में बताया। यीशु ने कहा,

‘‘... मैं अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे पिता ने मुझे सिखाया ... और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूं, जिससे वह प्रसन्न होता है।’’ (यूहन्ना 8：28-29)

**प्रयोग**

4 यूहन्ना 3：16 मन कंठस्थ करें

5 सोच विचार के लिए। कुछ लोग कहते हैं कि यीशु भले व्यक्ति थे, परमेश्वर के पुत्र नही। परंतु यीशु ने स्वयं कहा कि वे परमेश्वर के पुत्र हैं। यदि यीशु ने परमेश्वर के पुत्र नही होने के बावजूद भी स्वयं को उसका पुत्र कहा तो वे झूठ बोल रहे थे। यदि वे झूठे होते तो क्या वे भले व्यक्ति हो सकते थे?

**परमेश्वर यीशु को अपना पुत्र कहते हैं**

हम जानते हैं यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं क्योंकि स्वयं परमेश्वर ने इस बात को स्पष्ट किया है। परमेश्वर अपने पुत्र का आदर करते हैं। यीशु ने कहा,

‘‘... दूसरा पिता मेरी गवाही देता है जिस ने मुझे भेजा। यीशु ने उत्तर दिया; यदि मैं आप अपनी महिमा करूं, तो मेरी महिमा कुछ नहीं, परन्तु मेरी महिमा करनेवाला मेरा पिता है, ...। (यूहन्ना 8：18, 54)

परमेश्वर ने यीशु को सम्मान दिया और गवाही दी कि यीशु उसके पुत्र हैं। उसकी गवाही 1) स्वर्गदूतों, 2) पवित्र आत्मा एवं 3) अलौकिक चमत्कारों ने दी।

स्वर्गदूतः परमेश्वर ने अपने स्वर्ग के संदेशवाहकों, स्वर्गदूतों को लोगों को बताने भेजा कि यीशु उनका पुत्र है। स्वर्गदूत ने मरियम और यूसुफ से कहा कि उनको होने वाला पुत्र परमेश्वर का पुत्र होगा। स्वर्गदूतों ने बेतलेहेम के मैदान में चरवाहों को बताया कि उद्धारकर्ता का जन्म हुआ है। यीशु के जीवन की दो कठिन घड़ियों में स्वर्गदूतों ने उसके पास आकर उन्हे साहस दिया और ढ़ाढ़स बंधाया। स्वर्गदूतों ने यीशु की कब्र पर से पत्थर लुढ़काया और कहा कि वे जिंदा हो चुके हैं। और जब यीशु स्वर्ग की ओर उठा लिए गए तो स्वर्गदूत वहाँ खड़ी भीड़ के सामने प्रकट हुए। उन्होने कहा कि जैसे तुमने यीशु को जाते हुए देखा है, वह दुबारा वापिस आएगा।

पवित्र आत्माः परमेश्वर ने अपने पुत्र का सम्मान करने एवं यह बताने कि वह कौन है, आत्मा को भेजा। पवित्र आत्मा ने इलिशिबा, जकर्याह, शिमौन, मरियम, हन्ना को भरा और उनके द्वारा बात की। उन्होने लोगों को बताया कि यह बालक मसीहा था। पवित्र आत्मा ने यूहन्ना बपतिसमादाता को भरा कि वह जाकर मसीहा के लिए मार्ग तैयार करे और बताए कि यीशु की संसार को पाप को उठा ले जाने वाला परमेश्वर का मेम्ना है। पवित्र आत्मा यीशु के बपतिस्मा के दौरान उस पर कबूतर की भांति उतर आया। पवित्र आत्मा ने यीशु की सेवकाई को मसीहा - अभिषिक्त के तौर पर सशक्त किया और वो बुद्धि और परमेश्वर की सामर्थ से परिपूर्ण था।

अलौकिक चमत्कारः परमेश्वर ने अपने पुत्र की गवाही देने के लिए कई सारे चमत्कार किए। एक तारे ने मजूसियों को शिशु यीशु की ओर अगुवाई दी। तीन बार, लोगों ने परमेश्वर की आवाज को, अपने पुत्र के सम्मान में कहते हुए सुना। जब यीशु ने औपचारिक तौर पर अपनी सेवकाई शुरू की, परमेश्वर ने सत्यापित किया, ‘‘यक ह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ।’’ (मती 3：17)

एक और बार, परमेश्वर ने यीशु के अनुयाईयों को उसकी महिमा की छोटी सी झलक दिखाई। यीशु का रूप उनके सामने बदल गया और उसका चेहरा सूरज से भी अधिक चमकदार हो गया। परमेश्वर ने स्वर्ग से कहा, ‘‘यह मेरा प्रिय पुत्र है और इससे मैं अति प्रसन्न हूँ। (मती 17：5)

परमेश्वर की आवाज को तीसरी बार सुना गया। जब यीशु अपनी मृत्यु की बात कर रहे थे तब ये हुआ। यूहन्ना 12：28 यीशु की बात को लिखता है, पिता, अपने नाम की महिमा कर। और तब स्वर्ग से आवाज आई, ‘‘मैने इसे महिमा दी है, और भी महिमा दूँगा।’’

यीशु के द्वारा धरती पर किए गए चमत्कार परमेश्वर की गवाही थे कि यीशु वही था, जो उसने कहा - परमेश्वर का पुत्र। यीशु की मृत्यु के दौरान भी परमेश्वर ने कई चिन्ह दिए। धरती हिल उठी। सूरज को अंधेरे ने ढ़क लिया। पवित्र स्थल के सामने लगा पर्दा दो भागों में फट गया।

तीसरे दिन, परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जिलाकर उसकी महिमा की। उसके बाद परमेश्वर एक बड़ी भीड़ के सामने, उसे स्वर्गीय स्थानों में उठा ले गया। उसके बाद परमेश्वर ने कई लोगों को यीशु को अपनी दाँयी ओर बैठे देखने का अवसर दिया। उसने उनकी प्रार्थनाओं को सुना और चमत्कार किए। उस पर विश्वास करने वाले सब लोग पुत्र यीशु के बारे में दी गई उसकी गवाही पर अवश्य विश्वास करें।

**प्रयोग**

6 मती 3：17 मन कंठस्थ करें

7मान लो कि एक मित्र आपसे पूछता है, ‘‘आपको कैसे पता कि परमेश्वर ने यीशु के बारे में कहा है कि वह परमेश्वर का पुत्र है?’’ सबसे उचित उत्तर होगाः

अ. उन तीन तरीकों को बताएँ जिसके द्वारा परमेश्वर ने यीशु को अपना पुत्र बताया।

इ वर्णन करें कि जब यीशु इस संसार में थे तो उन्होने बहुत सारे अच्छे अच्छे कार्य किए।

ब व्यक्ति को कहें कि उसे केवल इस पर विश्वास करना है।

ब. पुत्र का अपने अनुयाईयों से रिश्ता

लक्ष्य 2： बताएँ कि परमेश्वर के पुत्र और उसके अनुयाईयों के रिश्ते के बारे में बाइबल क्या कहती है।

आपने देखा कि किस प्रकार पिता और पुत्र एक दूसरे को पहचानते और दावा करते हैं। उसी प्रकार पुत्र और उसके अनुयायी भी एक दूसरे को पहचानते और दावा करते हैं। परिणाम होगा कि जो परमेश्वर के पुत्र के पीछे चलते हैं, उन्हे अनंत जीवन मिलता है।

**अनुयायी पुत्र को पहचानते हैं**

जब यीशु मसीह इस धरती पर थे तो उनके अनुयायी इसलिए उनके पीछे चले क्योंकि वे यीशु पर विश्वास करते थे। उन्होने पहचाना कि यीशु वही था, जो उसने कहा - परमेश्वर का पुत्र। और उन्होने सार्वजनिक तौर अपने इस विश्वास को व्यक्त किया।

उदाहरण के तौर पर, पतरस ने कहा, ‘‘आप जीवित परमेश्वर के पुत्र मसीह हैं।’’ (मती 16：16) और यूहन्ना 20：28 में थोमा के कथनों को लिखता है, ‘‘मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर।’’

यीशु के आज के अनुयाईयों का क्या? उन्हे हम कैसे पहचान सकते हैं? केवल कलीसिया का सदस्य बनने के द्वारा? या मसीही कहलवाने के द्वारा? सच्चे मसीही बनने के लिए, पहले हमें यीशु पर विश्वास करना है - उसे परमेश्वर के पुत्र और हमारे उद्धारकर्ता, दोनों रूप में उसे पहचानना है। हम ये कैसे करें? हम अपना जीवन उसकी ओर मोड़ते हैं, उस पर भरोसा करते हैं, और वो हमें जहाँ ले जाए, उसके पीछे चलते हैं।

यूहन्ना ने यीशु को परमेश्वर का पुत्र साबित करने के लिए अपना सुसमाचार लिखा जिससे हम उस पर विश्वास कर अनंत जीवन पाएँ। अपनी पत्री में वह परमेश्वर के संदेश को दोहराता है कि इस जीवन को पाने का एकमात्र तरीका पुत्र को पाना है।

परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह हैः और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।’’ (यूहन्ना 20：31)

और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया हैः और यह जीवन उसके पुत्रा में है। जिस के पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिस के पास परमेश्वर का पुत्रा नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है। (1 यूहन्ना 5：11-12)

**प्रयोग**

81 यूहन्ना 5：11-12 के अनुसार, परमेश्वर हमें जो अनंत जीवन देता है वो निम्न में हैः

अ.हमारे भले कामों में

इपवित्र संतों के विचारों में

बपरमेश्वर के पुत्र में

9 यूहन्ना का यीशु के बारे में अपने संदेश को लिखने का मकसद थाः

अ. कि उसे परमेश्वर का पुत्र साबित करे

इ कि उसके चमत्कारों का वर्णन करे

ब कि उसके बारे में रोचक जानकारियाँ प्रदान करे

पुत्र अनुयाईयों को पहचानता है

हमारे जन्म से काफी पहले से ही, यीशु हमें जानते थे। संसार की रचना से पहले ही पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा ने हमें अपनी योजना के तहत देख लिया था। उन्होने हमें परमेश्वर के स्वरूप में, उसके प्रेम को बाँटने, उसके द्वारा हमारे लिए तैयार की गई आशीषों का आनंद लेने एवं सिद्ध संतोष में उसके साथ रहने वाली सृष्टि के रूप में देखा।

परंतु परमेश्वर ने हममें कुछ और भी देखा। उसने देखा कि मानव जाति विरोधी होकर उससे मुड़ जाएगी और पाप एवं मृत्यु के मार्ग को चुनेगी। परमेश्वर ने पाप के परिणामस्वरूप हमें कष्ट सहते हुए और अनंत मृत्यु के लिए दंडित देखा। विरोधी और कृतघ्न थे हम, तौभी उसने हमसे अपने सिद्ध प्रेम से प्रेम किया। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा ने हमारे उद्धार की योजना को बनाया।

जब हम पापी ही थे, परमेश्वर के पुत्र ने हमें अपना अनुयाई बनने के लिए चुना। उसने हमारे पापबोध को देखा और हमारे बदले हमारी मृत्यु के दण्ड को स्वयं पर उठा लिया। उसने हमारी कमजोरियों को देखा। वह उसके पाप आने वाले हर व्यक्ति को स्वीकार करता और उसे पाप की ताकत से आजाद करता है।

‘‘जैसा उस ने हमें जगत की उत्पति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों।’’ (इफिसियों 1：4-5)

जब यीशु इस धरती पर थे तो उनके द्वारा अपने अनुयाईयों को दिए गए नाम अनुयाईयों के प्रति उनके प्रेम को दिखाते हैं। वे उन्हे छोटे बच्चे, परमेश्वर की संतान, जगत ही ज्योति, पृथ्वी का नमक, दुल्हन, गवाह, भेड़ों को छोटा झुण्ड, उसके चुने हुए, उसकी कलीसिया, उसके भाई, दाख में लताओं की तरह खुद के भाग इत्यादि।

क्या आप यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु मानते हैं? यदि हाँ, तो वह आपको अपना समझता है।

जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी स्वर्गीय पिता के सामने मान लूँगा। पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूँगा। (मती 10：32-34)

परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। (यूहन्ना 1：12)

**प्रयोग**

10 इफिसियों 1：4-5 के अनुसार, परमेश्वर ने अपना बनाने के लिए किस समय चुना

अ.जब यीशु का जन्म हुआ

इसंसार की रचना से पहले

बजब हमने यीशु पर विश्वास किया

11परमेश्वर ने हमें अपनी ओर लौटा ले आने की योजना निम्न के द्वारा बनाई

अ. पालन करने के अच्छे नियम देकर

इ पुत्र प्रभु यीशु मसीह के द्वारा

बनई धार्मिक रस्मों और रिवाजों के द्वारा

12दाँयी ओर लिखे यीशु के द्वारा अपने अनुयाईयों को दिए गए नाम की उचित संख्या को बाँयी ओर लिखे उस संबंध के सही वर्णन के सामने लिखें।

अ. प्रेम करना एवं संभालना 1) दाख की लताएँ

इ अपना जीवन बाँटना 2) दुल्हन

ब परमेश्वर को पिता समझना 3) भाई

क उसकी संभालध्सुरक्षा में 4) **भेड़ों का झुण्ड**

म उसके साथ एक होने के लिए प्रतिज्ञारत्

पुत्र और उसके अनुयाईयों में अनंत एकता है

यीशु चाहता है कि हम उसके साथ रहें क्योंकि वह हमसे प्रेम करता एवं जानता है कि हमारा जीवन, खुशियाँ और भविष्य उसके साथ हमारी एकता पर निर्भर है। वह हमारे शरीर, प्राण और आत्मा को नया जीवन देता है। उसी में हमें संतोष, संपूर्णता एवं दुष्टता पर जय पाने की सामर्थ मिलती है। अब जो उसके साथ कदम दर कदम चलते हैं, स्वर्ग में हमेशा हमेशा के लिए उसके साथ रहेंगे। यूहन्ना बपतिस्मादाता ने यीशु की गवाही दी,

‘‘पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उस ने सब वस्तुएँ उसके हाथ में दे दी हैं। जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।’’ (यूहन्ना 3：35-36)

यीशु ने भी गवाही दी, ‘‘मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।’’ (यूहन्ना 10：10) ‘‘यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।’’ (यूहन्ना 14：6)

यीशु मसीह के साथ हमारी संगति इतनी करीब है कि जो उस पर विश्वास करते हैं, वे उसमें हैं और वह उनमें। यीशु ने कहा, ‘‘मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।’’ (यूहन्ना 15：5)

पौलुस यीशु के साथ हमारे इस संबंध को शरीर के अंगों के रूप में प्रकट करता है। कलीसिया उसका शरीर है। और उस देह का अंग बनते ही परमेश्वर के पवित्र पुत्र के सारे अधिकार एवं सौभाग्य, महिमा में उसकी सारी महिमा, उसका संपूर्ण प्रेम एवं पिता और पुत्र की आपसी संगति इत्यादि सब कुछ हमारा हो जाता है! पौलुस लिखता है,

‘‘और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं। और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।’’ (कुलुस्सियों 1：17-18)

‘‘... मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है। जिस का प्रचार करके हम ... सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें’’ (कुलुस्सियों 1：27-28)

**प्रयोग**

13यूहन्ना 14：6 मन कंठस्थ करें

14सही कथन के अक्षर पर गोला बनाएँ

अ.परमेश्वर की महिमा में भाग लेने के लिए, मसीह में होना जरूरी है

इयीशु ने कहा कि पिता के पास जाने के उसके अलावा भी कई मार्ग हैं

ब) कलीसिया के जीवन का स्रोत उसकी अगुवाई करने वाले लोगो अ. की बातों का पालन करना है

15 पिछले प्रश्न में दो गलत कथन हैं। उन कथनों के अक्षरों को नीचे लिखकर बाइबल के उस पद को लिखें जो उस कथन को गलत बताता है।

....................................................................................................................................................

....................................................................................................................................................

आपने देखा कि यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं। और जब हम उसके साथ एक होते हैं तो उसके दैवीय जीवन में भाग लेते हैं। परंतु यीशु भी मनुष्य बने। क्यों? हम अगले अध्याय में उसके कारण को पढ़ेंगे।

अपने उत्तरों को जाँचें

9 अ. कि उसे परमेश्वर का पुत्र साबित करे

1 इ पहले से ही था

10 इ संसार की रचना से पहले

2 इ दैवीय तीन एक व्यक्ति में

11 इ पुत्र प्रभु यीशु मसीह के द्वारा

3 ब प्रेरितों 7：55

12 अ. 2) दुल्हन

इ 1) दाख की लताएँ

ब 3) भाई

क 4) भेड़ों का झुण्ड

म 2) दुल्हन

5 नही, वे झूठ नही बोल सकते। यदि आप उसे भला व्यक्ति मानते हैं तो आपको यह भी विश्वास करना है कि उसने ये बातें स्वयं के बारे में भी कहीं। वह स्वयं वही है जो वह कहता है - परमेश्वर का पुत्र।

14 अ. सही

7 सबसे उचित उत्तर है अ.द्ध उन तीन तरीकों को बताएँ जिसके द्वारा परमेश्वर ने यीशु को अपना पुत्र बताया। हां, इद्ध सही हैं परंतु यह परमेश्वर के कार्य को सीधा व्यक्त नही करता है। बद्ध कोई मदद का नही है क्योंकि यह बाइबल में परमेश्वर के द्वारा दिए गए सबूतों का प्रयोग नही करता है।

15 इ यूहन्ना 14：6

ब) कुलुस्सियों 1：17-18

8 ब परमेश्वर के पुत्र में

**अध्याय 4**

**यीशु मनुष्य का पुत्र**

संपूर्ण संसार में, मात्र यीशु ही विशिष्ट हैं। उनके समान और कोई नही है, क्योंकि वह परमेश्वर और मनुष्य दोनो हैं। यही बाइबल सिखाती है।

परंतु यीशु मनुष्य बनना क्यों चाहते थे? उसने उस धनी के समान किया जो अपना बेशकीमती महल और सब कुछ छोड़कर बिल्कुल गरीब बन गया। उस राजा के समान बन गया जो जिसकी सब लोग सम्मान करते और उसकी आज्ञा मानते हैं परंतु सबके ईष्र्या का पात्र और सबका ठुकराया बन गया।

तौभी यीशु ने यही और इससे भी बढ़कर किया। उसने अपने मन से स्वर्ग के पिता के साथ दैवीय स्थल को छोड़ दिया। पूरे मन से मनुष्य का रूप धर लिया। वास्तव में, ‘मनुष्य का पुत्र’ शीर्षक को उसने स्वयं के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल किया। सुसमाचार में यह शब्द उन्यासी अथवा एक कम अस्सी बार लिखा है।

क्या हुआ जब यीशु मानव जाति से आकर मिला? क्या मनुष्य बनते ही उसकी दैविकता में कमी आई? क्या वह मनुष्य बन सकता था यदि वह परमेश्वर ही बना रहता?

इस अध्याय में हम इन विषयों पर बाइबल के विचारों को देखेंगे। यह महत्वपूर्ण सत्यों को पढ़ने जा रहे हैं। हम जानेंगे कि हमारा उद्धार केवल इस बात पर ही निर्भर नही है कि यीशु संपूर्ण परमेश्वर थे परंतु इस बात पर भी निर्भर है कि वे पूरे मनुष्य थे।

योजना

अ. परमेश्वर का पुत्र मनुष्य क्यों बना?

ब. परमेश्वर का पुदत्र मनुष्य कैसे बना?

**लक्ष्य**

1. वर्णन करें कि ‘मनुष्य का पुत्र’ शीर्षक यीशु के बारे में क्या कहता है।

2. चार कारण बताए कि यीशु मनुष्य क्यों बना।

अ. परमेश्वर का पुत्र मनुष्य क्यों बना?

लक्ष्य 1： वर्णन करें कि ‘मनुष्य का पुत्र’ शीर्षक यीशु के बारे में क्या कहता है।

उसका देहधारण

देहधारण दो शब्दों से बना है जिसका अर्थ है ‘शरीर में।’ परमेश्वर इस संसार में शरीर धरकर आया। यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र देहधारी परमेश्वर है - मानवता के वस्त्रों में दैविकता।

‘मनुष्य का पुत्र’ शीर्षक विशेष तौर पर यीशु के देहधारण मानवता के प्रतिनिधि के रूप में उसके दायित्व को दिखाता है।

मनुष्य का पुत्र पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों में वर्णित मसीहाई शीर्षक है। इब्री में यह बेन अधाम कहलाता है। जिसका अनुवाद आदम का पुत्र, मनुष्य का पुत्र अथवा मानवता का पुत्र के रूप में किया जा सकता है। यह यीशु के बारे में चार बातें बताती हैः

1. यीशु एक वास्तविक मनुष्य था। उसका शरीर केवल एक पोशाक नही थी जिसमें परमेश्वर प्रकट हुआ। उसमें वास्तव में मनुष्य का स्वभाव मौजूद था।

2. आदम का पुत्र, यीशु स्त्री की वही संतान था जिसका वायदा परमेश्वर ने आदम और हव्वा को दिया था - वह संतान जो शैतान को हराएगा।

3. आदम का पुत्र, यीशु पूरी मानव जाति का है। वह पूरी मानव जाति का मसीहा है, किसी एक देश, समय या स्थल का नही।

4. यीशु इस धरती पर एक दायित्व के साथ आया जिसे वह मानवजाति के प्रतिनिधि के रूप में ही कर सकता था।

**उसका कुंवारी से जन्म**

किस कार्य अथवा चमत्कार के द्वारा परमेश्वर का पुत्र मनुष्य का पुत्र बना? उसे सब मनुष्यों की तरह मनुष्य के रूप में जन्मना था और उसने ऐसा ही किया। परंतु एक महत्वपूर्ण फर्क था। यद्यपि उनकी माताजी एक मनुष्य थीं परंतु उनके पिता स्वयं परमेश्वर थे। यशायाह की भविष्यद्वाणी के अनुसार, कंुवारी से जन्म के चमत्कार के द्वारा परमेश्वर मानवजाति के बीच रहने और उनमें से एक बनने आया।

चिकित्सक लूका ने इन तथ्यों को जांचा और यीशु के जन्म के निम्न तथ्यों को लिखाः

‘‘परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में एक कुंवारी के पास भेजा गया जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरूष से हुई थीः उस कुंवारी का नाम मरियम था। और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा; आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है। वह उस वचन से बहुत घबरा गई, और सोचने लगी, कि यह किस प्रकार का अभिवादन है? स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्रा कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा। और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।’’

मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह कैसे होगा? मैं तो पुरूष को जानती ही नहीं।

स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया; कि पवित्रा आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्रा जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। ... क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता।

मरियम ने कहा, देख, मैं प्रभु की दासी हूं, मुझे तेरे वचन के अनुसार होः तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।’’ (लूका 1：26-35, 37-38)

यीशु का एक चेला, मती बताता है कि जब मरियम के भावी पति, यूसुफ को पता चला कि वह गर्भवती है तो क्या हुआ।

‘‘सो उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की। जब वह इन बातों के सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा; हे यूसुफ दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्रा आत्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उन के पापों से उद्वार करेगा।’’

यह सब कुछ इसलिये हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था; वह पूरा हो। कि, देखो एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिस का अर्थ यह है “परमेश्वर हमारे साथ”।

सो यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञा अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहाँ ले आया। और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गयाः और उस ने उसका नाम यीशु रखा।’’ (मती 1：19-25)

यीशु का मनुष्य बनना केवल यह कहना नही है कि परमेश्वर मनुष्य बन गया अर्थात उसके बाद परमेश्वर रहा ही नही क्योंकि वो तो मनुष्य बन चुका था। परमेश्वर पुत्र अब भी परमेश्वर था। परंतु जब वह मनुष्य बना तो उसने कुछ ऐसा किया जो कभी भी किसी ने नही किया थाः परमेश्वर के रूप में ही उसने मनुष्य के स्वभाव को पहना। तब एक व्यक्ति, प्रभु यीशु में संपूर्ण दैविकता एवं संपूर्ण मानवता पूरी दृढ़ता के साथ एक हुए, सच्चा परमेश्वर और सच्चा मनुष्य। यही घटना देहधारण कहलाती है।

**प्रयोग**

1मनुष्य का पुत्र नामक शीर्षक बताता है किः

अ.यीशु मानव जाति के संपूर्ण सदस्य थे

इ यीशु का जन्म मानवीय पिता एवं मानवीय माता दोनो से हुआ

बयीशु पहले मनुष्य आदम के पुत्र थे

2 परमेश्वर का पुत्र मनुष्य कैसे बना?

अ.उसने परमेश्वर के पद को पूरा त्याग दिया कि बदले में मनुष्य बन सके

इवे धरती पर आए और कुछ दिनों के लिए मनुष्य के रूप में जिए

बवे पवित्र आत्मा से गर्भ में आए और कंुवारी मरियम के द्वारा जन्म लिया

उसने मनुष्य की सीमाओें को स्वीकारा

एक वास्तविक मनुष्य एवं हमारा प्रतिनिधि बनने के लिए यीशु ने स्वयं को निम्न बातों में सीमित कर दियाः

1. एक मानव शरीर और मानव जाति

2. लोगों के बीच में जीवन के हालात

3. सबके लिए उपलब्ध आत्मिक संसाधन

एक मानव शरीर और मानव जातिः यीशु ने अनश्वरता को एक तरफ रख, मानवता को इसकी कमजोरियों सहित पहना। उसने बिमारी, कष्ट और मृत्यु सही। उसे अक्सरभूख, प्यास और थकान महसूस हुई। उसने दुख, निराशा, हताशा और दर्द का सामना किया। उसने मानव खुशी और डर दोनों को महसूस किया।

लोगों के बीच में जीवन के हालातः संसार के रचियता ने अपनी सारी सामर्थ को उतार दिया और एक निसहाय शिशु बन गया। संपूर्ण बुद्धि और ज्ञान का स्रोत स्वयं एक विद्यालय में गया और परमेश्वर के वचन को पढ़ना, लिखना और अध्ययन करना सीखा। उसने एक बढ़ई का कार्य किया। उसने अपने महिमा के सिंहासन को छोड़ा जहां सदैव स्वर्गदूत उसकी आराधना करते थे और एक सेवक का रूप धरा - निंदित, उपहास और सताव सहने वाला जो दूसरों की सेवा के लिए स्वयं के जीवन का बलिदान करने को तैयार था।

सबके लिए उपलब्ध आत्मिक संसाधनः यीशु मसीह ने हमारे सामने परमेश्वर के तरीको प्रस्तुत किया कि किस प्रकार हमारे लिए उपलब्ध सामर्थ और अधिकार का हम इस्तेमाल करें। उसने प्रार्थना की और परमेश्वर ने उसकी प्रार्थन को सुना। वह ताकत और बल के लिए परमेश्वर पर आश्रित था। वह परमेश्वर के भवन में गया और उसके वचन को सीखा। जब शैतान ने पाप करने के लिए उसकी परीक्षा की, यीशु ने बाइबल के पदों का उल्लेख कर उन्हे उस हालात में लागु किया। उसने हर एक से कहा कि उसके द्वारा हो रहे चमत्कार संग रहने वाले परमेश्वर के आत्मा के कारण होते थे एवं उसका हर कथन वही था जो पिता परमेश्वर उससे कहने को कहता था।

फिलिप्पियों को लिखते हुए पौलुस कहता है कि किस प्रकार यीशु ने अपने मन से स्वयं को दीन किया और परमेश्वर ने उसे आदर दिया और आदर देगा भी। हम उसके कथन का यहां उल्लेख करेंगेः

‘‘जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य (परमेश्वर होने के सभी गुणों का समावेश) होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास (सेवक) का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।

चित्र परमेश्वर यीशु मसीह प्रभु है

मनुष्य हर जीभ अंगिकार करती है

सेवक हर घुटना टिकता है

मृत्यु सबसे ऊँचा नाम

क्रूस मृत्यु पुनरूत्थान

और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन (और भी नीचा) किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

इस कारण (क्योंकि उसने स्वयं को दीन किया)परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।’’ (फिलिप्पियों 2：6-11)

**प्रयोग**

3यीशु ने हमारे लिए चार बातें कीं। उन दो के सामने गोला बनाएं जो परमेश्वर के तरीके को बताती है कि हम भी हमारे आत्मिक जीवन में करें：

अ.यीशु अपनी ताकत और बल के लिए परमेश्वर पर आश्रित था

इउसने हमारे पापों के लिए अपना जीवन दे दिया

बउसने परमेश्वर के वचन को सीखा

ब वह कुंवारी मरियम के द्वारा जन्मा

4 फिलिप्पियों 2：6-11 के अनुसार परमेश्वर ने यीशु को ऊँचा उठाया, क्योंकि यीशु नेः

अ.चमत्कार किए और प्रकृति पर अपना अधिकार दिखाया

इहमें बचाने के लिए क्रूस तक स्वयं को दीन कर दिया

ब लोगों को प्रार्थना और उपवास के नियमों को सिखाया

**उसने सिद्ध जीवन जिया**

यीशु ने सिद्ध जीवन जिया। उसमें कोई दोष अथवा कमजारी नही थी। जब यीशु बढ़ रहे थे तो हर दूसरे बालक और नौजवान की ही तरह, उसके सामने सब परीक्षाएं आईं परंतु वह पवित्र, निर्दोष और सच्चा रहा - परमेश्वर और दूसरों के प्रति प्रेम से भरा था।

यीशु ने पाप से घृणा की और उसके विरोध में बात की परंतु पापियों से प्रेम किया। उसे पापियों का दोस्त कहा जाता था। तौभी उसने कभी पाप नही किया। उसने पापियों को बदल दिया परंतु पापी उसे नही बदल पाए।

यीशु का सिद्ध जीवन मनुष्य के पुत्र के रूप में उसका एक महत्वपूर्ण दायित्व अथवा मिशन था। मानवजाति के प्रतिनिधि के तौर पर उसने परमेश्वर के हर नियम को पूरा किया। उसने परमेश्वर के नियमों का पालन करने वाले के लिए प्रतिज्ञारत् सभी आशीषों पर अधिकार हासिल किया - अनंत जीवन एवं परमेश्वर के भवन में खुशियाँ। उसने - 1) हमारे अपराधों को उठाने एवं पापों के लिए मरने एवं 2) हमें धार्मिकता (परमेश्वर के साथ सही संबंध) एवं आज्ञापालकों को मिलने वाली हर आशीष प्रदान करने के लिए स्वयं को सिद्ध घोषित किया।

शैतान ने यीशु को पाप करने एवं उसके दायित्व से उसे परे करने के लिए उसकी परीक्षा की। परंतु यीशु ने हर परीक्षा को ठकरा कर हमें बचाने की योजना को पूरा किया। यीशु की भलाई मात्र नकारात्मक (दुष्टता का अभाव) नही थी। यह परमेश्वर की इच्छा के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया थी। उसने गलत करने को मना ही नही किया, सही करने के लिए कर्तव्यबद्ध भी था। वह देहधारी प्रेम था और उसने अपने कार्यों में प्रेम दिखाया।

यीशु ने तीस साल की उम्र में अपनी सार्वजनिक सेवकाई शुरू की। उसने लोगों को परमेश्वर और उसके राज्य का हिस्सा बनने के बारे में बताया। वह संसार के द्वारा ज्ञात सबसे महान भविष्यद्वक्ता और शिक्षक था। उसने केवल एक स्पर्श, आज्ञा और निर्देश के द्वारा, सैंकड़ों बीमारों को चंगा किया। पापियों ने उसके पास आकर क्षमा, शांति, पापों से सफाई प्राप्त की और कई जीवन उसके प्रेम से भरे।

पतरस ने गवाही दी कि ‘‘किस प्रकार परमेश्वर ने यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक कियाः वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।’’ (प्रेरितों 10：38)

परंतु यीशु के समय के धार्मिक गुरू उससे ईष्र्या करते थे और उसे मसीहा मानने से इंकार कर दिया। उन्होने उस पर गलत आरोप लगाए और क्रूस पर चढ़ा दिया (जैसे यशायाह ने भविष्यवाणी की)। उसे दो डाकुओं के बीच, एक अपराधी की तरह क्रूस पर चढ़ाकर कीलें ठोंक दी गईं। जिन लोगों को वह बचाने आया था, उन्होने उसका मजाक उड़ाया। इन सबके बावजूद उसने सबसे प्रेम किया और प्रार्थना की, ‘‘हे पिता, इन्हे क्षमा कर, क्योंकि ये नही जानते कि ये क्या कर रहे हैं।’’ (लूका 23：34)

यीशु का सिद्ध जीवन कब्र में ही समाप्त नही हो गया। पिता परमेश्वर ने उसे तीसरे दिन जिंदा कर दिया। धरती और चालीस दिन और बिताने के बाद, वे स्वर्ग चले गए, जहाँ आज वो हमारे प्रतिनिधि हैं। और वहाँ से एक दिन वो पूरे संसार पर न्याय और असीम शांति के साथ राज करने जल्द ही वापिस आएँगे।

**प्रयोग**

5 यीशु ने परीक्षाओं का सामनाः

अ. लोगों से अलग अकेलेपन का जीवन जीकर किया

इ इसका इंकार कर, भला काम करते रहने के द्वारा किया

बखुद को मनुष्य दिखाने के लिए इसके सामने स्वयं को समर्पित कर देने के द्वारा किया

6 सोच विचार के लिए। यीशु का सिद्ध जीवन जीना आपके लिए महत्वपूर्ण क्यों है?

ब. परमेश्वर का पुत्र मनुष्य कैसे बना?

लक्ष्य 2：चार कारण बताए कि यीशु मनुष्य क्यों बना।

परमेश्वर मनुष्य क्यों बना? उसने स्वयं मानवीय स्वभाव और सीमाओं को क्यों पहना? देहधारण जरूरी क्यों था? हम चार शब्दों में उत्तर को संक्षिप्त कर सकते हैं： 1) प्रकाशन, 2) तैयारी, 3)स्थानापन्न (बदले में), 4) मनन।

**प्रकाशन**

यीशु मनुष्य की तरह हमें यह दिखाने के लिए जिया कि परमेश्वर कैसा है। हम उसके द्वारा परमेश्वर के स्वभाव को देख सकते हैं। यीशु को जानने से हम परमेश्वर को जान सकते हैं।

परमेश्वर का पुत्र हमें दिखाने के लिए मनुष्य बना कि एक सिद्ध मानवता क्या होती है। हम यीशु के सिद्ध जीवन और स्वभाव में हम मानवता, निपुणता एवं हमारे लिए परमेश्वर की योजना की झलक देखते हैं। वह हमारा नमूना है। उसी के माप से हमारे शब्दों, विचारों, और कार्यों को तोला जाता है। वह हमें उस जीवन को दिखाता है जो हम उसके हमारे अंदर रहने से जी सकते और परमेश्वर की संतान बन सकते हैं।

यीशु के जीवन ने उसके दायित्व के लिए उसकी योग्यता को भी दर्शाया। उसकी पापरहितता ने साबित किया कि वह हमारा स्थानापन्न बन सकता है। उसकी सामर्थ, बुद्धि और प्रेम से साबित कर दिया कि वह राजा बनने के योग्य है।

**तैयारी**

मनुष्य के रूप में यीशु का जीवन उसके मिशन की लिए आवश्यक तैयारी था। मानवता का अनुभव उसे मानवता के बारे मेेअ. एक अनुभव दे गया जिससे वह हमारा सही प्रतिनिधि और न्यायी बन सका और सकता है।

यीशु को हमारा याजक बनने के लिए मनुष्य बनना जरूरी था। उसने हमारी कमजोरियों को बाँटा। वह हमारी समस्याओं को जानता है। उसने स्वयं के कष्ट के द्वारा आज्ञाकारिता की कीमत को समझा। यीशु ने धरती पर अपने अनुयाईयों के लिए प्रार्थना की। और आज, वो हमारी जरूरतों की अधिक जानकारी पाकर, और अधिक प्रभावशाली तरीके से स्वर्ग में पिता से प्रार्थना करता है।

‘‘इस कारण उसको चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिस से वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित्त करे। क्योंकि जब उस ने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उन की भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है।’’ (इब्रानियों 2：17-18)

‘‘सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्रा यीशु; तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहे। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; बरन वह सब बातों में हमारी नाई परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।’’ (इब्रानियों 4：14-16)

यीशु के मनुष्य के अनुभव ने उसे मनुष्यों पर राज करने के लिए योग्य बनाया। मनुष्य का पुत्र - संपूर्ण आदम जाति का का सही प्रतिनिधि -ही इसका शासक होगा। वही सिद्ध राजा होगा क्योंकि वही हमारी जरूरतें समझता है। और चूँअ.कि वह हमारे लिए मरा, हमारे जीवन पर राज करने का उसे पूरा अधिकार है। आज वो उन दिलों का राजा है जो उसे स्वीकार करते हैं। एक दिन वह इस पूरी दुनिया पर राज करेगा जिसके लिए वह मरा।

‘‘मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बालनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।’’ (दानिएल 7：13-14)

**स्थानापन्न (बदले में)**

यीशु का जन्म मरने के लिए हुआ था। पूरी मानवजाति ने- हम सबने पाप किया और हमेशा हमेशा के लिए नाश हो चुके थे। उससे बचने का एकमात्र मार्ग था कि स्वयं परमेश्वर हमारा दण्ड स्वयं पर ले। परंतु परमेश्वर होने के कारण, वह मर नही सकता था। इसलिए वह हमारे बदले मरने एवं हमें पापों से बचाने के लिए मनुष्य बनकर आया।

यीशु ने क्रूस पर हमारे लिए मरने से अलावा और भी बहुत कुछ किया। वह मृतकों में से जी उठा और उस पर विश्वास करने वालों को अपने अनंत राज्य में स्थान देता है। वह हमें स्वयं से जोड़ता है जिससे हम परमेश्वर के पुत्रों के तौर सभी सौभाग्यों को उसके साथ मिलकर अपना बना सकें।

‘‘पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे। क्योंकि जिसके लिये सब कुछ है, और जिस के द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाए, तो उनके उद्धार के कर्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे। क्योंकि पवित्रा करनेवाला और जो पवित्रा किए जाते हैं, सब एक ही मूल से हैं： इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता। और फिर यह, कि मैं उस पर भरोसा रखूँगा; और फिर यह कि देख, मैं उन लड़कों सहित जिसे परमेश्वर ने मुझे दिए। इसलिये जब कि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उन के समान उन का सहभागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे। और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले।’’(इब्रानियों 2：9-11, 13-15)

**मनन**

यीशु परमेश्वर और मनुष्यों को पास लाने के लिए स्वयं मनुष्य बना। पाप ने पवित्र परमेश्वर एवं बुरे तथा दोषी मानव के बीच में एक बड़ी खाई बना दी थी। परंतु परमेश्वर ने प्रेम ने एक पुल बनाकर मानवता को वापिस अपनी ओर लाने का मार्ग तैयार किया। यीशु मसीह परमेश्वर और मानवजाति के बीच नई वाचा अथवा सहमति का बिचवई बनकर आया।

पौलुस लिखता है, ‘‘क्योंकि परमेश्वर एक ही हैः और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है। जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उस की गवाही ठीक समयों पर दी जाए।’’ (1 तिमु. 2：5-6)

नये नियम के दौरान एक कंगाल अथवा सब कुछ खोए बैठे व्यक्ति का स्थान लेकर उसके सभी मामलों को सुलटने के लिए एक बिचवई का उपयोग किया जाता था। बिचवई की जिम्मेदारी थी कि पूरा कर्ज चुकाने में वह अपनी नजर रखे। यदि वह व्यक्ति उसे चुकता नही कर पा रहा है जो बिचवई उसे देकर पूरा करता था।

यीशु की कितनी अच्छी तश्वीर है यह! वह परमेश्वर के सामने हमारा बिचवई है। उसकी मृत्यु हमारे सभी पापों का कर्ज चुकता करती, उसमें हम पापों और अपराधों से मुक्त होतेहैं जो हमें परमेश्वर से अलग करते हैं। उसका क्रूस उस खाई को भरता है। वह हमें एक नया स्वभाव - अपना स्वभाव प्रदान करता और हमें परमेश्वर का पुत्र बनाता है। हमारे मानवीय स्वभाव को पहनकर, यीशु हमें उठाता और बेहतर संसार का भागीदार बनाता है। परमेश्वर का पुत्र मनुष्य का पुत्र बना कि हम परमेश्वर के पुत्र बन सकें।

‘‘परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले।’’ (गलातियों 4：4-5)

‘‘इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाएः वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया।’’ (1 पतरस 3：18)

**प्रयोग**

7कुछ लोग अपनी कुछ समस्याओं के लिए परमेश्वर से प्रार्थना नही करते क्योंकि उनका मानना है कि परमेश्वर इसे समझ नही पाएगा या तरस नही खाएगा। क्या वे सही हैं या गलत? क्यों?

8केवल यीशु ही परमेश्वर और मनुष्य के बीच सिद्ध बिचवई है क्योंकि केवल उसी नेः

अ.हमारे पापों के लिए जान दी कि परमेश्वर हमें स्वीकार कर सके

इलोगों को परमेश्वर के बारे में कई बातें बताईं

बसिखाया कि हमें शांति और मेल के लिए कार्य करना चाहिए

9चार कारणों से परमेश्वर का पुत्र मनुष्य बना। हर कारण (दाँयी ओर) के अक्षर को उसके सही अर्थ (बाँयी ओर) के सामने लिखें

अ. लोगों और परमेश्वर को जोड़ने 1 प्रकाशन

इहमारी जगह पर जान देने 2 तैयारी

बपरीक्षा में पडे़ हुओं को बचाने 3 स्थानापन्न

क मानवता पर राज करने 4 मनन

म हमें दिखाने कि परमेश्वर कैसा है

यद्यपि नया नियम वो भाग है जो हमें हमारे बारे में परमेश्वर की योजना को बताता और समझाता है कि क्यों यीशु मनुष्य का पुत्र बनकर आया। यीशु सार बताते हैं, ‘‘क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।’’ (लूका 19：10)

अपने उत्तरों को जाँचें

5 इ इसका इंकार कर, भला काम करते रहने के द्वारा किया

1 अ. यीशु मानव जाति के संपूर्ण सदस्य थे

6 आपका उत्तर। यीशु का सिद्ध जीवन महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी से वह हमारा सिद्ध प्रतिनिधि और स्थानापन्न बनता है

2 ब वे पवित्र आत्मा से गर्भ में आए और कुँवारी मरियम के द्वारा जन्म लिया

7 आपका उत्तर। वे गलत हैं क्योंकि परमेश्वर का पुत्र, यीशु धरती पर रह चुका है। उसने मनुष्यों के द्वारा सही जाने वाली हर समस्या का सामना किया है। आज वो स्वर्ग में, समझते हैं, दयालु, मददगार हैं। आप अब भी प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर से अपनी कोई भी समस्या बता सकते हैं। वो आपकी मदद करेंगे।

3 अ. यीशु अपनी ताकत और बल के लिए परमेश्वर पर आश्रित था

ब उसने परमेश्वर के वचन को सीखा

8 अ. हमारे पापों के लिए जान दी कि परमेश्वर हमें स्वीकार कर सके

4 इ हमें बचाने के लिए क्रूस तक स्वयं को दीन कर दिया

9 अ. 4 मनन

इ 3 स्थानापन्न

ब 2 तैयारी

क 2 तैयारी

म 1 प्रकाशन

**अध्याय 5**

**यीशु वचन**

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यदि आप बोल नही पाते तो कैसा लगता? क्या आप दूसरों से अपनी बात किसी भी जरिए से नही बता पाने की हालत की कल्पना कर सकते हैं? कितनी बड़ी निराशा और सूनापन होता?

हममें से लगभग हर व्यक्ति एक दूसरे से बात कर सकता है। आम तौर पर, हम बहुत कम ही ध्यान देते हैं कि हम क्या कर रहे हैं। परंतु वास्तव में, हम अपनी आतंरिक भावनाओं, इच्छाओं, विचारों और उद्देश्यों को प्रकट करने के लिए हजारों शब्दों का उपयोग करते हैं। ये शब्द ही हमारे दिल और मन की बातों को रूप देते हैं। इन्ही के द्वारा, हम दूसरों को और दूसरे हमको जान सकते हैं।

बातचीत की हमारी योग्यता हमारे रचियता परमेश्वर से आती है। वही सर्वश्रेष्ठ संप्रेषक अथवा बातचीत करने वाला है, और वो चाहता है कि हम उसे जानें। हमें इस बात में चकित होने की जरूरत नही है कि परमेश्वर कैसा है। उसने हमसे बात की है! कैसे? अपने निज पुत्र को इस दुनिया में भेजकर। भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर के बारे में कहा है और परमेश्वर के कहे गए शब्दों को हम तक पहुंचाया है जो सही साबित हुए हैं। परंतु यीशु मसीह ने उससे भी कहीं अधिक किया। उसने परमेश्वर के वचन को कहा नही। वह स्वयं परमेश्वर का वचन है - जीवित, शक्तिशाली और दैवीय अधिकार से परिपूर्ण। यीशु मसीह उस हर चीज का आरंभ और अंत है जो हमें परमेश्वर हमें बताना चाहता है।

वचन के रूप में, यीशु मसीह हमें परमेश्वर के बारे में क्या बताता है? इसी सवाल का जवाब है हमारे अगले अध्याय का विषय।

**योजना**

अ. यीशु मसीह में परमेश्वर ने स्वयं को प्रकट किया

ब. यीशु मसीह में परमेश्वर ने अपने नाम का वर्णन किया

**लक्ष्य**

1. पहचान करें कि यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर अपने स्वभाव, योजना, सामर्थ और इच्छा के बारे में क्या बताना चाहता है।

2. वर्णन करें कि यीशु मसीह परमेश्वर के नामों को कैसे पूरा करता है।

अ. यीशु मसीह में परमेश्वर ने स्वयं को प्रकट किया

लक्ष्य 1： पहचान करें कि यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर अपने स्वभाव, योजना, सामर्थ और इच्छा के बारे में क्या बताना चाहता है।

परमेश्वर आत्मा है। हम हमारी प्राकृतिक ज्ञानेन्द्रियों से उसे देख, सुन सा महसूस नही कर सकते हैं। तो हम उसे कैसे जान सकते हैं? कमजोर, पापी मनुष्य, सर्वशक्तिमान, सिद्ध और अदृश्य परमेश्वर को कैसे जान सकता है? परमेश्वर स्वयं को हम पर कैसे प्रकट कर सकता है, उत्तर है यीशु मसीह।

**परमेश्वर का स्वभाव**

यीशु मसीह परमेश्वर को मानुषिक व्यक्तित्व के द्वारा प्रकट करता है। परमेश्वर कैसा लगता है? हम उसके पुत्र, यीशु को देखकर जान सकते हैं।

‘‘परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में हैं, उसी ने उसे प्रगट किया।’’ (यूहन्ना 1：18)

‘‘यीशु ने उस से कहा; हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा हैः तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा।’’(यूहन्ना 14：9)

‘‘वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है।’’(कुलुस्सियों 1：15)

परमेश्वर ने कई माध्यमों के द्वारा हमसे बातें की हैं। परंतु उन सबसे स्पष्ट एवं सिद्ध माध्यम उसका पुत्र यीशु मसीह है - परमेश्वर का जीवित वचन। जब हम यीशु के बारे में पढ़ते हैं तो परमेश्वर हमसे बात करता है। यीशु का जीवन, कार्य एवं शिक्षाएं, सब मानुषिक अनुभव के द्वारा हमारी समझ में परमेश्वर को प्रकट करते हैं।

‘‘पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भांति भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके। इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने सारी सृष्टि रची है। वह उस की महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता हैः वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दहिने जा बैठा।’’ (इब्रानियों 1：1-3)

‘‘आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।’’(यूहन्ना 1：1,14)

यीशु ने लोगों को परमेश्वर के बारे में बताया ही नही, उसने परमेश्वर के स्वभाव को भी प्रकट किया। उसने परमेश्वर की पवित्रता, भलाई, बुद्धि, न्याय, दया, सामर्थ, और प्रेम के बारे में बताया। लोगों ने इन गुणों को उसमें देखा। उसने संसार के द्वारा नही देखे गए सर्वश्रेष्ठ एवं उच्च स्तर को प्रकट किया और उन्हे जिया। उसकी शिक्षाओं की महत्ता आज भी लोगों को चकित करती है। उसने मानव जरूरतों को पूरा कर एवं उनके लिए अपना जीवन देकर परमेश्वर के प्रेम को अपने कार्यों में प्रकट कर दिखाया।

क्रूस पर, जब यीशु हमारे पापों के लिए मरा, तो उसने परमेश्वर के न्याय और प्रेम के स्पष्ट रूप को देखा। परमेश्वर ने न्याय ने पाप के लिए मृत्यु दण्ड की माँग की। पापी के प्रति परमेश्वर के प्रेम ने उसे पापियों के बदले में जान देने के लिए प्रेरित किया। उसके प्रेम ने ही उसे क्रूस पर चढ़ा रहे लोगों के लिए क्षमा की प्रार्थना करने का मन दिया। कैसा प्रेम! हमारा कितना महान परमेश्वर!

**प्रयोग**

1 परमेश्वर के न्याय और प्रेम को स्पष्ट रूप से निम्न में से एक के द्वारा दिखाया गयाः

अ.क्रूस पर मृत्यु

इ बिमारों को चंगाई

ब लोगों को शिक्षा

2 इब्रानियों 1：1-3 के निम्नलिखित कथन को रिक्त स्थानों को भरकर पूरा करें:

पूर्व युग में परमेश्वर ने ............. से थोड़ा थोड़ा करके और भांति भांति से ............. के द्वारा बातें करके। इन दिनों के अन्त में ........... से ........... के द्वारा बातें की

परमेश्वर की भावनाएँ, विचार एवं योजनाएं

यीशु मसीह ने परमेश्वर की भावनाओं, विचारों और योजनाओं को अपनी शिक्षाओं और व्यक्तित्व के द्वारा प्रकट किया। यीशु एक महान शिक्षक थे तौभी उन्होने कहा,

‘‘कि जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और अपने आपसे कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूँ।’’(यूहन्ना 8：28)

‘‘अबसे मैं तुम्हें दास न कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका स्वामी क्या करता हैः परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैंने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं।’’(यूहन्ना 15：15)

इसलिए सुसमाचार में लिखी गई यीशु मसीह की शिक्षाओं पर परमेश्वर के सच्चे प्रकाशन एवं सच के रूप में भरोसा कर सकते हैं। हम परमेश्वर को हर प्रकार बुद्धिमान एवं स्वर्ग के प्रेम पिता के रूप में देखते हैं जो अपने बच्चों की संभाल करता है। वह पाप और पाखंड से घृणा करता है परंतु पापी से प्रेम करता है। वह हमें मुक्ति पाने का तरीका और खुशनुमा जीवन के भेद बताता है। वह चाहता है कि उसके भटक रहे बच्चे अपने पापों को त्यागकर उसके पास घर में लौटकर आएँ। वह हमें हमारे लिए स्वर्ग के राज्य में तैयार अद्भुत जीवन के बारे में बताता है। परमेश्वर के वचन में हम इन सच्चाईयों को पाते हैं।

यीशु, परमेश्वर के वचन में परमेश्वर की भावनाओं को प्रकट किया। उसमें, परमेश्वर अपने मित्रों के दुखों, मानवता के कष्टों और उसके ठुकराकर नाश हो रहे शहर के अंधे अविश्वास को देखकर रोया। धर्म के नाम पर अपना लाभ कमा रहे लोगों पर परमेश्वर का क्रोध भड़क उठा। जब उसने लोगों बिन चरवाहे की भेड़ों की तरह तितर बितर देखा तो उसका तरस उमड़ पड़ा। परमेश्वर ने लोगों को बताया कि वह उन्हे खुश और बिमारी, पाप, अपराधबोध, डर से मुक्त देखना चाहता है।

**प्रयोग**

3 जब यीशु मानवता के कष्ट को देखकर रोया तो इसमें हम किस चीज का प्रकाशन देखते हैं：

अ) परमेश्वर की भावनाओं

इ) परमेश्वर की विचारों

ब) परमेश्वर की योजनाओं

4 हर सही कथन के सामने सही लिखें।

अ. यीशु मसीह के द्वारा सिखाई गई हर शिक्षा पिता परमेश्वर से आईं

इ) यीशु के जीवन ने दिखाया कि परमेश्वर कभी भी क्रोधित नही होता है

ब) यीशु की शिक्षाओं के द्वारा हम परमेश्वर की योजनाओं को जान सकते हैं

**परमेश्वर की सामर्थ एवं इच्छा**

यीशु मसीह ने दिखाया कि परमेश्वर हमाारी मदद करता ही नही है, वह मदद करने के योग्य भी है। जब यीशु इस धरती पर था तो उन्होने बिमारों को चंगा और पापियों को की माफ किया। उसने लोगोेअ. की जरूरतों को परमेश्वर पिता की सामर्थ के द्वारा पुरा किया वो चाहे कोई भी क्यों न हों। उसने बताया कि वह पिता की इच्छा को पूरी करने आया है और उसके कार्य भी इसी बात को साबित करते थे कि परमेश्वर ने उसे भेजा है। यीशु के द्वारा किए गए चमत्कार साबित करते हैं कि परमेश्वर मदद करने के योग्य है और करना चाहता है। वे दिखाते हैं कि परमेश्वर हमें चंगा करना, माफी देना और हमारी आज की जरूरतों को पूरा करना चाहता है।

‘‘परन्तु मेरे पास जो गवाही है वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी हैः क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात् यही काम जो मैं करता हूँ, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है।’’ (यूहन्ना 5：36)

‘‘परन्तु जो बुलाए हुए हैं क्या यहूदी, क्या यूनानी, उन के निकट मसीह परमेश्वर की सामर्थ, और परमेश्वर का ज्ञान है।’’ (1 कुूरिन्थियों 1：24)

यीशु हमें यह भी दिखाता है कि परमेश्वर हमसे किस प्रकार का जीवन चाहता है। उसने अपने पिता की आज्ञा मानी और उसके करीब जीवन जिया। परमेश्वर हमसे भी यही चाहता है।

**प्रयोग**

5 मान लो, कोई आपसे कहे कि मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ परंतु वह इतना दूर है कि मेरी समस्याओं को नही सुलझा सकता है, तो आप क्या जवाब देंगे?

ब. यीशु मसीह में परमेश्वर ने अपने नाम का वर्णन किया

लक्ष्य 2：वर्णन करें कि यीशु मसीह परमेश्वर के नामों को कैसे पूरा करता है।

हम बाइबल में परमेश्वर के कई नाम देख सकते हैं। यीशु, परमेश्वर का वचन इन सब नामों को समझने में हमारी मदद करता है क्योंकि वही परमेश्वर का सही प्रतिरूप है।

**मैं हूँ**

जब परमेश्वर ने मूसा को लोगों की अगुवाई के लिए बुलाया तो उसने पूछा कि आपका नाम क्या है। परमेश्वर ने उत्तर दिया, ‘‘मैं जो हूँ सो हूँ’’ (निर्गमन 3：14) उसने मूसा से लोगों को यह बताने के लिए कहा कि मैं हूँ ने उसे भेजा है। यह नाम बताता है कि परमेश्वर अनंत, अटल, और सदैव विद्यमान है। उसमें कोई धोखा नही है। वह स्वयं निर्भर है और जो चाहता है, वह करता है। हम उस पर निर्भर हो सकता है।

परंतु ‘परमेश्वर है’ का अर्थ क्या है? वह क्या करेगा? यीशु यूहन्ना के सुसमाचार में लिखे संदेशों में इन सवालों का जवाब देते हैं। उन्होने मैं हूँ को आठ बार स्वयं से जोड़ा। एक बार वह खुद के अनंत स्वभाव को दिखाने के लिए इसका उपयोग करता है, जहाँ वो बताता है कि वह अब्राहम से पहले ही मौजूद था। दूसरी जगहों पर, वह इन नामों का उपयोग परमेश्वर और स्वयं के स्वभाव को दिखाने के लिए करता और दिखाता है कि परमेश्वर अपने पास आने वालों के साथ क्या करता है। महान मैं हूँ हमारी सारी जरूरतों को पूरी करता है।

1. मैं जीवन की रोटी हूँ। (यूहन्ना 6：35)

2. मैं जगत की ज्योति हूँ। (यूहन्ना 8：12)

3. अब्राहम से पहले, मैं हूँ। (यूहन्ना 8：58)

4. मैं द्वार हूँ। (यूहन्ना 10：9)

5. मैं अच्छा चरवाहा हूँ। (यूहन्ना 10：11)

6. मैं पुनरूत्थान और जीवन हूँ। (यूहन्ना 11：25)

7. मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ। (यूहन्ना 14：6)

8. मैं सच्ची दाखलता हूँ। (यूहन्ना 15：1)

**प्रयोग**

6 आपने आठ पदों को पढ़ा जिसमें यीशु मसीह मैं हूँ नाम के द्वारा परमेश्वर और स्वयं के स्वभाव को दिखाता है। हर आत्मिक जरूरत के सामने, उस पद और कथन को लिखें जो यीशु मसीह को उसमें सही बिठाता है (एक जरूरत के सामने एक से अधिक पद आ सकते हैं)। उदाहरण के लिए, पहला प्रश्न आपके लिए कर दिया गया है।

अ.बाँझ, अनुत्पादक: यूहन्ना 15：1; यीशु दाखलता है

इमृत्यु या मरनासन्न: .................................., ......................................

बधोखा: .................................., ......................................

क भूखा: .................................., ......................................

म खतरे में: .................................., ......................................

अंधेरे में: .................................., ......................................

ह) परमेश्वर से दूरः .................................., ......................................

7 सोच विचार के लिए। 6वें प्रयोग में बनाई गई अपनी सूची को ध्यान से देखें। हर उस कथन के सामने ग् का चिन्ह लगाएं जो आप चाहते हैं कि यीशु ‘मैं हूं’ के तौर पर आपके लिए पूरी करे।

**यहोवा**

यहोवा वह तरीका है उस नाम को लेने का जो हम अपनी भाषा में मैं हूं कहते हैं। आप इसे याहवेह के रूप में भी सुनेंगे जो इब्री भाषा में इसी अक्षर के बदले में उपयोग होता है। यहोवा या याहवेह, दोनों का अर्थ एक समान है। जैसा आपने देखा, इसका अर्थ है अनंत अथवा स्व-निर्भर। पुराने नियम मेेअ. यह अन्य शब्दों के साथ जुड़कर अनेक अर्थों वाले युग्म शब्दों को बनाता है। ये सब परमेश्वर के स्वयं के प्रकाशन पर आधारित है और बताते हैं कि परमेश्वर कौन है और वह अपने लोगों के लिए क्या करता है। यीशु - परमेश्वर को प्रकट करने वाला वचन, परमेश्वर के इन नामों के अर्थ को प्रकट करता है।

1. यहोवा यिरै- प्रभु प्रबंध करने वाला

‘‘अब्राहम ने कहा, हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा। (उत्पति 22：8)

‘‘क्योंकि तुम जानते हो, ..... तुम्हारा छुटकारा चाँदी सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ। उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के पहिले ही से जाना गया था, पर अब इस अन्तिम युग में तुम्हारे लिये प्रगट हुआ। (1 पतरस 1：18-20)

यीशु, परमेश्वर के द्वारा हमारे अपराधों को स्वयं पर लेने और हमारे लिए मरने के लिए प्रबंध किया गया मेम्नाहै

2. यहोवा राफा- प्रभु हमारा चंगाईदाता

‘‘कि यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैं ने मिस्रियों पर भेजा है उन में से एक भी तुझ पर न भेजूँगा; क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला यहोवा हूं।’’ (निर्गमन 15：26)

‘‘जब संध्या हुई, तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिन में दुष्टात्माएँ थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया।’’ (मती 8：16)

यीशु, महान वैद्य, हमारे शरीर, मन, दिल और टूटे आत्मा को चंगा करता है।

3. यहोवा शालोम- प्रभु हमारी शांति

‘‘तब गिदोन ने वहाँ यहोवा की एक वेदी बनाकर उसका नाम यहोवा शालोम रखा। वह आज के दिन तक अबीएजेरियों के ओप्रा में बनी है।’’ (न्यायियों 6：24)

‘‘मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देताः तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।’’ (यूहन्ना 14：27)

यीशु हमें आंतरिक शांति देता है जो परिस्थितियों पर निर्भर नही होती है -, परमेश्वर के साथ शांति, खुद के साथ शांति एवं लोगों के साथ शांति।

4. यहोवा रोही- प्रभु मेरा चरवाहा

‘‘यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी नही होगी।’’ (भजन संहिता 23：1)

‘‘अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।’’ (यूहन्ना 10：11)

यीशु, अच्छे चरवाहेने हमें बचाने के लिए अपनी जान दी और आज अपने पीछे चलने वालों की संभाल करता है।

5. यहोवा सिद्किनु- प्रभु हमारी धार्मिकता

‘‘उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे, और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे ¢ और यहोवा उसका नाम यहोवा “हमारी धार्मिकता” रखेगा।’’ (यिर्मयाह 23：6)

‘‘जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।’’ (2 कुरिन्थियों 5：21)

साफ दिल और जीवन को पाने का केवल एक ही उपाय है। हम परमेश्वर के साथ सही जीवन और सही संबंध केवल यीशु के द्वारा ही पा सकते हैं। वही हमारी धार्मिकता है।

6. यहोवा शम्मा- प्रभु मौजूद है

‘‘नगर की चारों अलंगों का घेरा अठारह हजार बाँस का हो, और उस दिन से आगे को नगर का नाम “यहोवा शाम्मा” रहेगा।’’ (यहेजकेल 48：35)

‘‘देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिस का अर्थ यह है “परमेश्वर हमारे साथ”।’’ (मती 1：23)

यीशु ने हमेशा हमारे साथ रहने का वायदा किया है। वह हमेशा हमारी मदद करने को हमारे करीब रहता है।

7. यहोवा निस्सी- प्रभु हमारा झण्डा

‘‘तब मूसा ने एक वेदी बनाकर उसका नाम यहोवानिस्सी रखा’’ (निर्गमन 17：15)

‘‘मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।’’ (यूहन्ना 16：33)

इस शीर्षक का अर्थ है कि यीशु हमारा अगुवा, हमारी विजय और हमारी ताकत है। उसके साथ हम हमारे नित दिन के जीवन के संघर्ष में ताकतवर एवं विजयीहो सकते हैं।

इन नामों का आपके जीवन में क्या अर्थ है? इनका अर्थ है कि यदि यीशु आपके जीवन का उद्धारकर्ता है तो प्रभु आपके लिए प्रबंध करेगा। प्रभु आपको चंगा करेगा। प्रभु आपको शांति देगा। प्रभु आपकी धार्मिकता होगा। प्रभु आपके साथ रहेगा और आपकी विजय होगा। यीशु आपके जीवन का ये सब होगा, यदि आप अपना जीवन उसे सौंपें, अपने पापों का अंगिकार करें, उसे अपने जीवन में आमंत्रित करें।

**प्रयोग**

8 निम्नलिखित सूची परमेश्वर के उन नामों की है जो पुराने नियम मेे उसका दिए गए हैं। हर एक के सामने उस एक जरूरत को लिखें जिसे प्रभु आपके या आपके किसी मित्र अथवा रिस्तेदार के जीवन में पूरा कर सकता है।

अ.प्रभु हमारा प्रबंधकर्ता है: ..........................................................................

इ प्रभु हमारा चंगाईकर्ता: ..........................................................................

बप्रभु हमारा शांतिदाता: ..........................................................................

कप्रभु हमारा चरवाहा: ..........................................................................

मप्रभु हमारी धार्मिकता: ..........................................................................

प्रभु संग है: ..........................................................................

ह प्रभु हमारी विजय है: ..........................................................................

आपने पहली इकाई को पुरा कर लिया है और आप इकाई एक के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तैयार हैं। पिछले अध्यायों को एक बार और देख लें, मन कंठस्थ करने वाले पदों को अधिक ध्यान दें। (वे हैं： अध्याय एक में 1 यूहन्ना 1：3 एवं इब्रानियों 13：8; अध्याय तीन में यूहन्ना 3：16, मती 3：17 एवं यूहन्ना 14：6) उत्तर पुस्तिका के बारे में पैकट में दिए गए निर्देंशों का पालन करें और मुहर लगे पते पर अपनी उत्तर पुस्तिका को भेज दें।

अपने उत्तरों को जाँचें

4 अ. सही

इ गलत

ब सही

1 अ. क्रूस पर मृत्यु

5 आपका उत्तर। आप उसे यीशु के द्वारा लोगों के लिए किए गए चमत्कारों को दिखाकर बता सकते हो कि वह मदद करना चाहता है और करने के योग्य भी है।

2 से - पूर्वजों

के द्वारा - भविष्यद्वक्ताओं

से - हम

के द्वारा - अपने पुत्र

6 आपके उत्तर शायद एकदम ऐसा न हो परंतु वे लगभग ऐसे होने चाहिए।

अ. बाँझ, अनुत्पादक: यूहन्ना 15：1; यीशु दाखलता है

इ मृत्यु या मरनासन्न: यूहन्ना 11：25 एवं 14：6; यीशु पुनरूत्थान और जीवन है

ब धोखा: यूहन्ना 14：6; यीशु सच है

क भूखा: यूहन्ना 6：35; यीशु जीवन की रोटी है

म खतरे में: यूहन्ना 10：11; यीशु अच्छा चरवाहा है

अंधेरे में: यूहन्ना 8：12; यीशु जगत की ज्योति है

ह परमेश्वर से दूरः यूहन्ना 10：9; यीशु द्वार है। यूहन्ना 14：6; यीशु मार्ग है।

3 अ. परमेश्वर की भावनाओं

**इकाई दो**

**अध्याय**

6. यीशु जगत की ज्योति

7. यीशु चंगाईकर्ता एवं बपतिस्मादाता

8. यीशु मुक्तिदाता

9. यीशु पुनरूत्थान और जीवन

10. यीशु प्रभु

**अध्याय 6**

**यीशु - जगत की ज्योति**

क्या आप कभी भी अंधेरे में चले हं और चाहा है कि काश रोशनी आ जाती तो देख सकते थे? आपको पता ही नही रहता कि आपकी दोनो तरफ और आगे मार्ग में क्या खतरा दुबका बैठा है। आपको तो यह भी संदेह होगा कि आप सही मार्ग में जा भी रहे हैं या नही। अंधेरे में भटक जाना आसान होता है।

या शायद आपने एक रात अपने किसी अंजान या जानकार दुश्मन के डर में काटी हो। आप भयानक चीजों के बारे में कल्पना करेंगे। परंतु जैसे ही दिन होता है, उसकी रोशनी सारी चीजें कैसी बदली बदली नजर आती हैं! जैसे ही रोशनी की तीव्रता बढ़ी, रात का डर फीका पड़ता गया।

आप आसानी से समझ सकते हैं कि बाइबल अंधकार को दुष्टता, गलती, अनिश्चितता, परेशानी और मृत्यु इत्यादि के प्रतीक के रूप में क्यों बताती है। ये सब चीजें हैं जो हमें डर और संदेह में डालती हैं।

इसके विपरीत, बाइबल रोशनी को जीवन, खुशी, सच और सारी भलाई के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करती है। यह बताती है कि यीशु जगत की ज्योति है। परमेश्वर के पुत्र का कितना शक्तिशाली और वर्णनीय नाम!

**योजना**

अ. संसार को रोशनी की जरूरत है

ब. रोशनी का कार्य

स. लोग रोशनी को क्या प्रतिक्रिया देते हैं

**लक्ष्य**

1. वर्णन करें कि यीशु जगत की रोशनी बनकर क्यों आए

2. वर्णन करें कि यीशु का जीवन लोगों के लिए आत्मिक रोशनी कैसे है

3. उन तरीकों को लिखें जो लोग रोशनी को अपनी प्रतिक्रिया देने में उपयोग करते हैं

अ. संसार को रोशनी की जरूरत है

लक्ष्य 1： वर्णन करें कि यीशु जगत की रोशनी बनकर क्यों आए

**पाप अंधकार लेकर आया**

अंधेरा अथवा अंधकार रोशनी की अभाव है। संसार आत्मिक अंधकार से उसी घड़ी घिर गया जब पाप ने प्रथम मनुष्य, आदम और हव्वा को परमेश्वर से अलग किया। क्यों? क्योंकि परमेश्वर रोशनी का स्रोत है। उसके बिना, हम केवल अंधेरे में भटक सकते हैं, खोए हुए, मार्ग जाने बगैर। पुराने नियम में हम अलगाव लाने वाले पाप के बारे में पढ़ते हैं। परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ता यशायाह को अपने अनाज्ञाकारी लोगों के पास इस संदेश के साथ भेजाः

‘‘क्योंकि तुम्हारे हाथ हत्या से और तुम्हारी अंगुलियां अधर्म के कर्मो से अपवित्रा हो गई है; तुम्हारे मुंह से तो झूठ और तुम्हारी जीभ से कुटिल बातें निकलती हैं।’’ (यशायाह 59：2)

और फिर लोगों के नजरिए से देखें：

‘‘इस कारण न्याय हम से दूर है, और धर्म हमारे समीप ही नहीं आता हम उजियाले की बाट तो जोहते हैं, परन्तु, देखो अन्धियारा ही बना रहता है, हम प्रकाश की आशा तो लगाए हैं, परन्तु, घोर अन्धकार ही में चलते हैं। हम अन्धों के समान भीत टटोलते हैं, हां, हम बिना आंख के लोगों की नाईं टटोलते हैं; हम दिन-दोपहर रात की नाईं ठोकर खाते हैं, हृष्टपुष्टों के बीच हम मुर्दों के समान हैं।’’ (यशायाह 59：9-10)

दयनीयता की कितनी स्पष्ट तश्वीर! नया नियम भी पाप के अंधकार के की बात करता हैः

‘‘इसलिये मैं यह कहता हूं, और प्रभु में जताए देता हूं कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ की रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं।’’ (इफिसियों 4：17-18)

‘‘पर जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह अन्धकार में है, और अन्धकार में चलता है; और नहीं जानता, कि कहां जाता है, क्योंकि अन्धकार ने उस की आंखे अन्धी कर दी हैं।’’ (1 युहन्ना 2：11)

**प्रयोग**

1बाइबल के अनुसार, किसकी वजह से संसार में अंधेरा आया?

अ) भाग्य

इअज्ञानता

ब) पाप

**रोशनी का वायदा था**

परमेश्वर रोशनी - सब रोशनी का स्रोत है। लोग तब तक अंधकार में रहेंगे जब तक वे परमेश्वर की रोशनी का प्रकाशन न पा लें। और इसीलिए यीशु जगत की ज्योति बना; वह हमें परमेश्वर की ज्योति देने - परमेश्वर का प्रेम और हमारे प्रति उसकी इच्छा को प्रकट करने आया।

यूहन्ना यीशु के बारे में लिखता है, ‘‘उसमें जीवन था, और वो जीवन मनुष्यों की रोशनी था।’ (1：4) और बाद में, ‘‘यह संदेश हमने उससे सुना और आपको बताते हैं, परमेश्वर ज्योति है और उसमें कोई अंधेरा नही है।’’ (1 यूहन्ना 1：5)

यीशु के स्वयं के बारे में कहे गए शब्दों पर ध्यान दें：

‘‘तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।’’ (यूहन्ना 8：12)

‘‘जब तक मैं जगत में हूँ, तब तक जगत की ज्योति हूँ।’’ (यूहन्ना 9：5)

लोगों को कोई आश्चर्य नही हुआ होगा जग यीशु ने स्वयं को जगत की रोशनी कहा। भविष्यद्वक्ता यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी कि मसीहा परमेश्वर की रोशनी बनकर आएगा। मती इसी भविष्यद्वाणी का उल्लेख कर कहता है कि यीशु में यह पूरी हुई।

‘‘तुम में से कौन है जो यहोवा का भय मानता और उसके दास की बातें सुनता है, जो अन्धियारे में चलता हो और उसके पास ज्योति न हो? वह यहोवा के नाम का भरोसा रखे, और अपने परमेश्वर पर आशा लगाए रहे।’’(यशायाह 50：10)

‘‘फिर दिन को सूर्य तेरा उजियाला न होगा, न चान्दनी के लिये चन्द्रमा परन्तु यहोवा तेरे लिये सदा का उजियाला और तेरा परमेश्वर तेरी शोभा ठहरेगा।’’(यशायाह 60：19)

‘‘जो लोग अन्धकार में बैठे थे उन्हों ने बड़ी ज्योंति देखी; और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी।’’(मती 4：16)

**प्रयोग**

2 यूहन्ना 8：12 मन कंठस्थ करें

3 यीशु जगत की ज्योति बनकर आया क्योंकि लोगः

अ.आर्थिक सकेती में जी रहे थे

इआत्मिक अंधकार में जी रहे थे

ब अस्वस्थ माहौल में जी रहे थे

ब. रोशनी का कार्य

लक्ष्य 2： वर्णन करें कि यीशु का जीवन लोगों के लिए आत्मिक रोशनी कैसे है

रोशनी अंधकार को दूर करती है

यीशु, रोशनी, अंधकार को दूर करती है। हृदय में उसकी उपस्थिति पाप, अपराधबोध और भय को दूर करती है। उसका प्रेम घृणा को दूर करता है। उसकी रोशनी आशा, निश्चितता, आराम और आत्मा में ताकत उत्पन्न करती है।

‘‘यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किसका भय खाऊँ?’’ (भजन संहिता 27：1)

रोशनी अंधकार से ताकतवर है। संसार का पूरा अंधकार मिलकर भी एक मोमबत्ती की रोशनी को बुझा नही सकता है। यदि यीशु आपके दिल में है तो आपके चारों ओर की दुष्टता या जिंदगी के अंधेरे अनुभव उसकी रोशनी को बुझा नही सकते हैं। डी0 एल0 मूडी ने एक मसीही महिला के बारे में बताया जो कई महीनों से बीमार थी और अपने बिस्तर पर भी उठ नही पाती थी। परंतु यह महिला हमेशा खुश रहती थी।

किसी ने पूछा कि वह इस प्रकार खुश कैसे रह पाती है जबकि उसके लिए बाहर निकल कर सन (सूरज) तक को देख पाना मुमकिन नही था। उसने कहा, ‘‘मेरे कमरे में अंधेरा है, परंतु मेरे दिल में सन (पुत्र) है। यीशु उसकी अंातरिक आत्मिक ज्योति का स्रोत था जिसने मायूसी को बाहर खदेड़ दिया था। उसने उसकी आत्मा को अपनी रोशनी और उपस्थिति से भर दिया था।

‘‘और ज्योति अन्धकार में चमकती है; और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया।’’ (यूहन्ना 1：5)

‘‘हे मेरी बैरिन, मुझ पर आनन्द मत कर; क्योंकि ज्योंही मैं गिरूँगा त्योंही उठूँगा; और ज्योंही मैं अन्धकार में पडूँगा त्योंहि यहोवा मेरे लिये ज्योति का काम देगा।’’ (मीका 7：8)

**प्रयोग**

4 एक मनुष्य के दिल से डर, अपराधबोध, घृणा और मनमुटाव के अंधेरे को निम्न के द्वारा निकाला जा सकता हैः

1. अच्छी शिक्षा

इसकारात्मक सोच

बसही व्यवहार के नियम

क यीशु की उपस्थिति

5 क्या आपके दिल में कोई अंधेरे का स्थान है जहाँ आपको यीशु की जरूरत है? उससे प्रार्थना कर अपने दिल से उस अंधकार को निकालने के लिए कहें।

रोशनी प्रकट करती है

रोशनी चीजों को हमारे सामने उजागर करती है। आत्मिक सच को जानने का एकमात्र तरीका आत्मिक रोशनी है जो परमेश्वर से आती है। हम इस रोशनी को परमेश्वर के लिखित वचन- बाइबल, एवं जीवित वचन - यीशु में पा सकते हैं। यीशु ही जीवन को प्रकट और इसकी व्याख्या करता है। वह परमेश्वर का वचन समझने में हमारी मदद करता और हमारे सामने परमेश्वर का मार्ग दिखाता है। वह स्वयं मार्ग है।

‘‘यीशु ने उससे कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।’’ (यूहन्ना 14：6)

यीशु हमारी मदद करता है कि हम वास्तव में स्वयं को देख सकें। अपने सिद्ध जीवन और शिक्षाओं से हम पहचान सकते हैं कि हम परमेश्वर के द्वारा हमारे लिए रखे गए स्तर से कितना नीचे हैं। हम खुद के घमंड, पाप, स्वार्थ और छुपे इरादों को देख सकते हैं। यीशु मसीह हमें क्षमा एवं उसके द्वारा दिए जाने वाले अनंत जीवन की जरूरत दिखाता है।

यीशु दिखाता है कि परमेश्वर कैसा है और कैसे वह हमारी जरूरतों को पूरा करता है। यीशु में, हम हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम, धीरज, और हमारे उद्धार के प्रबंध को देखते हैं। वह दिखाता है कि परमेश्वर को हमारे जीवन में कैसे ग्रहण करें और उसकी रोशनी का सदैव आनंद लें।

‘‘इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिस ने कहा, कि अन्धकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो।’’ (2 कुरिन्थियों 4：6)

‘‘वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता हैः वह पापों को धोकर ऊँचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा।’’ (इब्रानियों 1：3)

**प्रयोग**

6 मान लें, कोई आपसे कहता है कि ‘‘मुझे मसीही बनने की जरूरत नही है। मैं एक अच्छा एवं सज्जन व्यक्ति हूँ। मैने किसी हत्या नही की, न ही कोई गलत काम किया है।’’ यीशु मसीह की ज्योति इस व्यक्ति की आत्मिक जरूरत को उसे किस प्रकार दिखा पाएगी?

**रोशनी ऊर्जा है**

रोशनी में चमकने वाली ऊर्जा है। वैज्ञानिक सूरज से निकलने वाली रोशनी की ताकत के बारे में और अधिक खोज करने में लगे हैं। इसकी ऊर्जा मनुष्य की ताकत का एक अद्भुत स्रोत है। लोग अपने घरों को गर्म करने एवं अपनी मशीनों को चलाने में इसका उपयोग कर सकते हैं। परंतु इन सबसे अधिक इसका लाभ जीवन और स्वास्थ्य को मिलता है। कई पौधे छाँव में बड़े नही हो पाते हैं। सूरज की रोशनी कीटाणुओं को मारती और हमें स्वास्थ्य एवं ताकत प्रदान करती है। बिना सूरज के धरती की कल्पना करें! कोई गर्मी नही! कोई जीवन नही! इसे अपने कक्ष में स्थिर रखने का कोई बल नही! कले आसमां में खोई एक बर्फीली गेंद, जो नाश की ओर बढ़ रही है।

जिस प्रकार सूरज धरती के लिए है, यीशु हमारे लिए है। वह हमें रोशनी, गर्मी, स्वास्थ्य, ऊर्जा और सामर्थ देता है। वह अपने प्रेम से हमें अपने करीब सटाए रखता है। वह हमारे शरीर और आत्मा को चंगा करता है। यीशु के द्वारा अपने अनुयाईयों को दी जाने वाली जीवन की ज्योति मृत्यु से भी ताकतवर है। ज बवह वापिस आएगा तो, कुछ भी, कब्र भी, हमें उसके पास जाने से रोक नही पाएगी। बीजों में से फूटकर निकलने और सुरज की रोशनी की ओर बढ़ने वाले पौधों की तरह, हम उससे मिलने के लिए उठ खड़े होंगे। पौलुस कहता है,

‘‘क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।’’ (1 थिस्स. 4：16-17)

**प्रयोग**

7 उपरोक्त पढ़ी तुलना के अनुसार, जैसे सूरज पौधों के लिए है, वैसे ही यीशु निम्न के लिए है?

अ. अपने पिता

इ अपने अनुयाईयों

ब स्वर्गदूतों

**रोशनी पक्षपातरहित है**

रोशनी हर एक एवं हर जगह के लिए है। जिस प्रकार सूरज पहाड़ियों की चोटी पर, वादियों में, धनी पर और निर्धन पर, बुद्धिमान पर और मूर्ख पर चमकता है, उसी प्रकार यीशु की रोशनी पूरे संसार के लिए, अच्छे और भले सबके लिए चमकती है। कुछ लोगों ने सोचा कि उद्धारकर्ता केवल उनके राष्ट्र के लिए होगा। परंतु परमेश्वर स्पष्ट करता है कि उद्धार की रोशनी पूरे संसार के लिए है। सुसमाचार में लिखा है,

‘‘सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी।’’ (यूहन्ना 1：9)

‘‘यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी करूणा से होगा; जिस के कारण ऊपर से हम पर भोर का प्रकाश उदय होगा। कि अन्धकार और मृत्यु की छाया में बैठनेवालों को ज्योति दे, और हमारे पांवों को कुशल के मार्ग में सीधे चलाए।’’ (लूका 1：78-79)

सड़क के किनारे बैठे एक अंधे व्यक्ति ने एक भीड़ को आते हुए सुना। उसे पता चला कि यीशु वहाँ से होकर जा रहा है और भीड़ उसके साथ है। भिखारी ने यीशु की चंगाई की सामर्थ के बारे में सुन रखा था, इसलिए उसने ऊँची आवाज में पुकारकर कहा, ‘‘यीशु, दाऊद की सतांन, मुझ पर दया कर।’’ (लूका 18：38) लोगों ने उसे डाँटा और चुप रहने को कहा। उनको नही पता था कि यीशु के पास एक भिखारी की मदद करने का समय है। परंतु यीशु के पास हर उसकी मदद करने का समय है जो उसे पुकारता है। भिखारी पुकारता रहा। यीशु रूका और भिखारी को अपने पास बुलाया। और यीशु ने उसे चंगाई दीः

‘‘उसी घड़ी वह देखने लगा, और परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ, यीशु के पीछे चल पड़ा।’’ (लूका 18：43)

यीशु मसीह से मुलाकात करते ही, भिखारी के जीवन को एक नया अर्थ और मोड़ मिल गया। उसका अंधकार का जीवन दिन अथवा रोशनी में बदल गया। कोई फर्क नही पड़ा कि वह कौन था या भीख माँगने कहाँ बैठता था। अब वह रोशनी में चल रहा था - अंधा भिखारी नही, यीशु, जगत की ज्योति का अनुयायी!

**प्रयोग**

8आपने चार तरीकों को पढ़ा कि किस प्रकार यीशु जगत की ज्योति की तरह चमकता है। दाँयी ओर लिखे यीशु के चमकने के तरीके के अक्षर को बाँयी ओर लिखे उस कथन के सामने लिखें जिसमें लिखी समस्या को यह हल करता है।

अ.मसीहत केवल अनपढ़ों के लिए है 1) अंधकार को निकालता है

इमृत्यु हर चीज का अंत है 2) प्रकट करता है

बमैं बाइबल नही समझ सकता 3) ऊर्जा है

क मुझे नही लगता कि परमेश्वर मुझसे प्रेम करता है 4द्ध पक्षपातरहित है

म मेरा दिल घृणा और डर से भरा है

स. लोग रोशनी को क्या प्रतिक्रिया देते हैं

लक्ष्य 3： उन तरीकों को लिखें जो लोग रोशनी को अपनी प्रतिक्रिया देने में उपयोग करते हैं

**तिरस्कार**

कुछ लोग यीशु को पसंद नही करते और उसकी रोशनी को स्वीकार नही करते हैं। वे अपने मनमर्जी से जीना पसंद करते हैं। यीशु का कहा वे कभी नही करते हैं। जब यीशु धरती पर थे तो कई लोगों ने उससे घृणा की क्योंकि उसकी शिक्षाओं ने उन्हे पापी घोषित किया। वे रोशनी को बुझाना, उसे मारना चाहते थे। वे सुसमाचार के विरोध में लड़े। यीशु ने उन्हे बताया कि वह उनके लिए उद्धार लाया है। उसे स्वीकार करने वाला हर व्यक्ति मुक्ति पाएगा। परंतु उसे ठुकराने वाले, स्वयं को जीवन से वंचित करते और अंधेरे में मरने को अग्रसर होते हैं।

‘‘दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए।’’ (यूहन्ना 3：19-20)

**स्वीकार**

यीशु ने वायदा किया, ‘‘... जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।’’ (यूहन्ना 8：12) जब आप यीशु को स्वीकार करते हैं तो उसकी रोशनी आपकी संपत्ति बन जाती है। आप उस रोशनी को अपने हर दिन का अनुभव बना लेते हो। यीशु रोशनी है। उस रोशनी को पाने का मतलब जीवन की रोशनी और उसमें उपलब्ध हर चीज का आनंद लेना है। जगत ही ज्योति को पाना मात्र ज्ञान, स्वेच्छा शक्ति, या किसी एक धर्म से जुड़े होने के भाव से ज्यादा है। यह केवल यीशु और उसकी शिक्षाओं को जानने से कहीं अधिक है। इसका मतलब स्वयं यीशु को एक चमक, ऊर्जा एवं जीवन की प्रकट करने वाली ताकत को पाना है।

परमेश्वर की ज्योति को पाने के लिए यीशु को पाना और उसकी रोशनी में चलना जरूरी है। जो सच को खोजना और उसमें चलना चाहते हैं, उन्हे परमेश्वर स्वयं को एवं सच को प्रकट करता है। वह हमें हर दिन चलाता है।

‘‘पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु मसीह का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।’’ (1 यूहन्ना 1：7)

‘‘परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है।’’ (नीतिवचन 4：18)

क्या आप यीशु के पीछे चलना और जीवन की ज्योति पाना चाहते हैं? उसे इसी समय अपने जीवन के हर क्षेत्र में स्वीकार करें। उसकी चमकदार उपस्थिति हर प्रकार के अंधकार को दूर करे। उसकी ज्योति में चलें और दूसरों को उसके बारे में बताएँ। अपना जीवन उसे दें ताकि वह उसे अपनी ज्योति से भर सके।

प्रार्थनाः यीशु, मेरे दिल में आ। मेरे पापों को माफ कर, मेरे दिल के अंधकार को दूर कर। मुझे अपनी पसंद का व्यक्ति बना। अपनी रोशनी से मुझे चमकदार बना। हर दिन आपके पीछे चलने में मेरी मदद कर। आपकी रोशनी के लिए धन्यवाद।

**प्रयोग**

9 यीशु को अपने जीवन में जगत की ज्योति की तरह स्वीकार करने का अर्थः

अ. यह मानना है कि मसीहत एक अच्छा धर्म है

इ एक भला व्यक्ति बनने का निर्णय है

ब) उसकी वास्तविक उपस्थिति को अपने अंदर और साथ रखना है

10 यदि आपने यीशु को स्वीकार नही किया है, तो क्या आप उसे अभी स्वीकार करेंगे? आप इस अध्याय में लिखी प्रार्थना का इस्तेमाल कर सकते हैं या अपने शब्दों में प्रार्थना कर सकते हैं। यदि आपने उसे स्वीकार कर लिया है तो आपके जीवन में उसके द्वारा दी गई रोशनी के लिए उसका धन्यवाद करें।

अपने उत्तरों को जाँचें

6 आपका उत्तर। आपने सीखा है कि यीशु का जीवन उस रोशनी के समान है जो हमें खुद को देखने में मदद करती है। यदि वह व्यक्ति यीशु के सिद्ध जीवन की तुलना अपने जीवन से करेगा तो कई सारे अंतर पा सकता है। वह अंतर ही, उसकी आत्मिक जरूरत को पहचानने में उसकी मदद करेगा।

1 ब पाप

7 इ अपने अनुयाईयों

3 इ आत्मिक अंधकार में जी रहे थे

8 अ. 4) पक्षपातरहित है

इ 3) ऊर्जा है

ब 2) प्रकट करता है

क 2) प्रकट करता है

म 1) अंधकार को निकालता है

4 क यीशु की उपस्थिति

9 ब उसकी वास्तविक उपस्थिति को अपने अंदर और साथ रखना है

**अध्याय 7**

**यीशु- चंगाईकर्ता एवं बपतिस्मादाता**

आप यीशु के बारे में बहुत सारी बातें सीख चुके हैं! आपने सीखा कि वह वायदारत् मसीहा, परमेश्वर का पुत्र, मनुष्य का पुत्र, परमेश्वर का वचन और जगत की ज्योति है। ये सारे शीर्षक उसके बारे में महत्वपूर्ण सच बताते हैं कि वह कौन है।

यीशु के कार्यों पर नजर डालना उसके बारे में सीखने को एक दूसरा तरीका है। इस अध्याय में, हम उसके दो कार्यों को देखेंगेः यीशु हमारे शरीर और प्राण को चंगा करता है, और यीशु हमें पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देता है। यह जानना जरूरी है कि वो ये सब अपने व्यक्तित्व के कारण कर सकता है। वह हमें चंगा कर सकता है क्योंकि वह सब कुछ के - हमारे शरीर के भी सृष्टिकर्ता परमेश्वर के पुत्र हैं। और वह हमें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दे सकते हैं क्योंकि वह मनुष्य के पुत्र, सिद्ध बलिदान हैं जिन्हे पिता की दाहिनी ओर स्वर्ग में बिठाया गया है। वहाँ से वह अपने बच्चों पर पवित्र आत्मा भेजता है। वह हमारे लिए ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है। कितना अद्भुत मित्र है वह!

यीशु आज भी जिंदा और चंगाईकर्ता एवं बपतिस्मादाता हैं। जब आप उसकी सेवकाई का अध्ययन करते हैं, तो आप पाएँगे कि उनमें कितनी आशीषें समिल्लित हैं।

योजना

अ. यीशु, दैवीय चंगाई देने वाले

ब. यीशु, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने वाले

**लक्ष्य**

1. वर्णन करें कि कैसे यीशु आज भी लोगों को चंगा कर सकते हैं

2. विचार विमर्श करें कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के बारे में बाइबल क्या कहती है

अ. यीशु, दैवीय चंगाई देने वाले

लक्ष्य 1： वर्णन करें कि कैसे यीशु आज भी लोगों को चंगा कर सकते हैं।

सुसमाचार के पन्नों में, हम यीशु को महान चिकित्सक, शरीर और आत्मा के चंगाईदाता के रूप में देखते हैं। और जब हम उसके लोगों के साथ चलते हैं तो हमें पता चलता है कि वह आज भी अपना कार्य करता है।

शरीर और आत्मा का चंगाईकर्ता

एक चिकित्सक कौन होता है? यह क्या करता है? इन सवालों के जवाब दैवीय चिकिस्तक यीशु मसीह के गुणों की पहचान में हमारी मदद करते हैं।एक अच्छा चिकित्सकः

1. रोगी की मदद और उसे चंगा करना चाहता है

2. रोगी के उपचार के लिए योग्य होता है

3. रोगी को अच्छे तरीके से जाँचता है

4. अपने रोगी की समस्या को अच्छे तरीके से पहचानता है

5. सही उपचार का सुझाव देता है

6. जरूरी उपचार को लागु करता है (रोगी की सहमति के साथ)

क्या ये छह कथन यीशु के मामले में सही बैठते हैं? हाँ, हर एक कथन! डसने साबित किया है कि वह हर के शरीर और आत्मा की संभाल करता है। हमारा सृष्टिकर्ता होने के नाते, उसे हमारी समस्याओं को जानने के लिए चिकित्सीय जाँच करवाने की जरूरत नही है। वह हमारी जरूरत को जानता और समझता है। उसने हमें बनाया है और नही काम कर रहे किसी भी अंग को आसानी से सही कर सकता है।

उद्धारकर्ता की सेवकाई में, चंगाई और उद्धार दो महत्वपूर्ण कार्य हैं। वास्तव में, बाइबल में प्रयुक्त उद्धार शब्द का अर्थ शारीरिक चंगाई एवं आत्मा का छुटकारा व सुरक्षा है।

‘‘और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएँ थीं और मिर्गीवालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।’’ (मत्ती 4：23-24)

‘‘ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।’’ (मति 8：17)

यीशु ने सबको चंगा किया जो उसके पास आए - अंधे, बीमार, लंगड़े, तथा डर, शक एवं घृणा से भरी आत्माओं से पीड़ित। हमारा चंगाईकर्ता संपूर्ण व्यक्ति को चंगाई देने आया - शरीर, मन, भावनाएँ एवं आत्मा। वह चाहता है कि हम जीवन का इसकी पूरी संपूर्णता के साथ आनंद लें। यूहन्ना 10：10 यीशु के शब्दों को लिखता हैः ‘‘मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएँ।’’(यूहन्ना 10：10)

**उसके कार्य की निरंतरता**

यीशु आज भी महान चिकित्सक है। उसने अपने अनुयाईयों को भेजा कि वे बीमारों को चंगा करें। उन्होने जो इस धरती पर एक मनुष्य के रूप में किया था, आज भी वह प्रार्थना के उत्तर में और पवित्र आत्मा के द्वारा वही कार्य करता है। यीशु आज भी वही हैं। हजारों आपको बता सकते हैं कि किस प्रकार यीशु ने उनकी प्रार्थनाओे के उत्तर में उन्हे चंगा किया।

‘‘और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जांए तौभी उन की कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे। और उन्हों ने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उन के साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे वचन को, दृढ़ करता रहा। आमीन।’’(मरकुस 16：17-18, 20)

‘‘यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एकसा है।’’(इब्रानियों 13：8)

‘‘यदि तुम में कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिये प्रार्थना करें। और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उस को उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उसने पाप भी किए हों, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी।’’ (याकूब 5：14-15)

**प्रयोग**

1बाइबल के अनुसार, उद्धार में निम्न की चंगाई सम्मिलित हैः

अ.केवल शारीरिक चंगाई

इ केवल आत्मा

ब शरीर, मन और आत्मा

2 यीशु हमारी हर बिमारी को चंगा कर सकता है क्योंकि उसने

अ. हमें बनाया है

इ इस धरती पर जीवन बिताया।

ब उसने परमेश्वर के बारे में सिखाया

3मान लो कि कोई आपसे पूछता है, ‘‘मुझे कैसे पता चलेगा कि यीशु आज भी चंगाई देता है?’’ निम्नलिखित पदों में कौनसा पद उक्त प्रश्न का एकदम सही उत्तर होगा।

अ.मती 4：23-24

इ यूहन्ना 10：10

ब इब्रानियों 13：8

क याकुब 5：14-15

ब. यीशु, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने वाले

लक्ष्य 2： विचार विमर्श करें कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के बारे में बाइबल क्या कहती है

हम पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के अगुवों - भविष्यद्वक्ता, याजक, शासक, को देख सकते हैं जो पवित्र आत्मा से भरे थे। आपको याद होगा कि उन्हे परमेश्वर के लिए तेल से अभिषेक कर अलग किया जाता है। उन पर डाला गया तेल प्रतीक था। वे परमेश्वर की बाट जोहते थे कि वह उन पर अपना आत्मा भेजकर अपने लिए सामर्थ के साथ इस्तेमाल करे।

एक दिन परमेश्वर ने योएल को एक अद्भुत वायदा दिया। एक समय आएगा जब परमेश्वर, केवल अगुवों पर ही नही, परंतु हर व्यक्ति पर अपना आत्मा उँडेलेगा।

‘‘उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा; तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूँगा।’’ (योएल 2：28,29)

शताब्दियों के बाद, परमेश्वर ने यूहन्ना बपतिस्मादाता को बताया कि मसीहा लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देगा। परमेश्वर ने यूहन्ना बपतिस्मादाता को मसीहा का मार्ग तैयार करने और उसका सार्वजनिक परिचय करवाने भेजा था। बड़ी भीड़ यूहन्ना की बातों को सुनने के लिए इकट्ठी हुई।यूहन्ना ने उनमें से कईयों को बपतिस्मा दिया और साबित किया कि उन्होने पापों से क्षमा पाई है और वे अब परमेश्वर के हैं। तब यूहन्ना ने कहाः

‘‘मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उस की जूती उठाने के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्रा आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।’’ (यूहन्ना 3：11)

अधिक समय बीतने से पहले ही, यूहन्ना ने यीशु का सार्वजनिक परिचय करवाया। उसने यीशु और उसके मिशन को दर्शाने के लिए चार शीर्षकों का उपयोग कियाः

1. परमेश्वर का मेम्ना

2. मुझ से बड़ा

3. पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने वाला

4. परमेश्वर का पुत्र (यूहन्ना 1：29-34)

‘‘दूसरे दिन उस ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है। यह वही है, जिस के विषय में मैं ने कहा था, कि एक पुरूष मेरे पीछे आता है, जो मुझ से श्रेष्ठ है, क्योंकि वह मुझ से पहिले था।’’

‘‘और यूहन्ना ने यह गवाही दी, कि मैं ने आत्मा को कबूतर की नाईं आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गयी। और मैं तो उसे पहिचानता न था, परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझ से कहा, कि जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे; वही पवित्रा आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है। और मैं ने देखा, और गवाही दी है, कि यही परमेश्वर का पुत्रा है। (यूहन्ना 1：29-30, 32-34)

बाइबल बाप्टिज़े शब्द (जिसका अर्थ है डुबोना या डुबकी देना) का उपयोग दो विभिन्न अनुभवों को दिखाने के लिए करता हैः (1) मन फिराव को दिखाने के लिए जल में डुबकी लेना, (2) पवित्र आत्मा के वरदानों को प्राप्त करना। जब परमेश्वर विश्वासियों पर पवित्र आत्मा के वरदान बरसाता, देता या भेजता है तो पवित्र आत्मा में ‘‘बपतिस्मा पाते’’ अथवा ‘‘डुबकी पाते’’ हैं। परिणाम, वे पवित्र आत्मा से भर जाते हैं।

उसकी साढ़े तीन साल की सार्वजनिक सेवकाई के दौरान, उसके चेले अवश्य चकित हुए होंगे कि वो कब पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देगा। यीशु इस अनुभव का ‘‘पिता का वायदा’’ कहते हैं। परंतु पवित्र आत्मा के बपतिस्मादाता की सेवकाई को करने से पहले, उसे परमेश्वर के मेम्ने की सेवकाई को पूरा करना अवश्य था। उसे मरना, जी उठना और स्वर्ग की ओर जाना जरूरी था। तभी वह पवित्र आत्मा को भेज सकता था। मृत्यु से पहले की शाम को यीशु ने अपने चेलों को पवित्र आत्मा के बारे में बहुत कुछ सिखायाः

‘‘और मैं (यीशु) पिता से बिनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, .... परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा। तौभी मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।’’ (युहन्ना 14：16, 26; 15：26; 16： 7,13)

यीशु के पुनरूत्थान के बाद, उसके स्वर्ग के जाने से ठीक पहले, उसने अपने अनुयाईयों से कहाः 1) पवित्र आत्मा और उसकी सामर्थ पाओ कि उसके गवाह बन सको; 2) हर व्यक्ति से, हर समय यीशु मसीह और उसके उद्धार के बारे में बताओ।

‘‘और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिस की चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।’’ (प्रेरितों के काम 1：4-5; 8)

**प्रयोग**

4 यीशु ने अपने अनुयाईयों से एक वायदे के बारे में बताया जो वह उनके लिए पिता से माँगेगा। वह वायदा हैः

अ. बाइबल

इ उनके पापों की क्षमा

ब उनके शरीरों की चंगाई

क पवित्र आत्मा

5 निम्नलिखित घटनाएँ पवित्र आत्मा के आगमन से संबंधित हैं। 1 से 5 तक के अंकों का उपयोग कर इन घटनाओं को उनके संपन्न होने के क्रम में दर्शाओः

.... अ.यीशु परमेश्वर के मेम्ने के रूप में अपने मिशन को पूरा करते और हमारे पापों के लिए मरते हैं

.... इयीशु स्वर्ग की ओर लौटते हैं

.... बयीशु अपने अनुयाईयों को पवित्र आत्मा का इंतजार करने को कहते हैं

.... कयोएल भविष्यद्वाणी करता है कि परमेश्वर सब लोगों पर अपना आत्मा उण्डेलेगा।

.... म यूहन्ना बपतिस्मादाता यीशु मसीह का पवित्र आत्मा के बपतिस्मादाता के रूप में परिचय देता है।

पूर्तिकरण

स्वर्ग में जाने से ठीक पहले, यीशु ने अपने अनुयाईयों से कहा कि कुछ दिनों में वे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाएँगे। वे यरूशलेम लौटे और दस दिन तक इंतजार किया। दस दिन के बाद - पिंतेकुस्त के दिन - यह संपन्न हुआ! यीशु ने उन्हे (120 लोगों को) पवित्र आत्मा और आग में बपतिस्मा दिया। और उन्होने उसके द्वारा वायदारत् सामर्थ को पाया के उसके गवाह बन सकें।

‘‘जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे। और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रहते थे। जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं। और वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे; देखो, ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं? ... परन्तु अपनी अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं। (प्रेरितों के काम 2：1-7;11)

पतरस ने पवित्र आत्मा से भरकर लोगों को परमेश्वर का संदेश दियाः वे योएल की भविष्यद्वाणी को पूरा होते हुए देख रहे थे। उन्होने यीशु मसीह को मसीहा नही माना और उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। परंतु परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिंदा कर दिया। यीशु मसीह स्वर्ग में गए और अपने अनुयाईयों के लिए पवित्र आत्मा भेजा। इसने साबित किया कि यीशु ही मसीहा है।

लूका लिखता हैः

‘‘इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं। इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उँडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।’’ (प्रेरितों के काम 2：32-33,36)

यूहन्ना का यह संदेश कि यीशु लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देगा, बिलकुल सही था। यीशु परमेश्वर का मेम्ना, बपतिस्मादाता, परमेश्वर के पुत्र - मसीहा थे। कितना भयानक था कि लोग यीशु पर विश्वास नही कर रहे थे! उनके विश्वास ने उसे क्रूस तक भेज दिया था। क्या परमेश्वर क्षमा कर सकता था?

‘‘तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम क्या करें? पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा। सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्हों ने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।’’ (प्रेरितों 2：37-39,41)

उस क्षण से आगे, प्रेरितों के काम की पुस्तक इस बात का लेख है कि वे किस प्रकार आत्मा से भरकर यीशु के गवाह बने, जहाँ जहाँ वे गए।

क्या आज भी यीशु मसीह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देते हैं? हाँ! योएल की भविष्यद्वाणी उस समय से बढ़कर आज के समय में अधिक पूरी हो रही है। पूरे संसार में लाखों लोगों ने पिंतेकुस्त के अनुभव - पवित्र आत्मा के बपतिस्मा को पाया है। यीशु अनेक कलीसियाओं में जीवन और सामर्थ दे रहे हैं। इसे हम करिस्माई ताजगी कहते हैं। करिस्मा का अर्थ है ‘‘उपहार।’’ पवित्र आत्मा एक उपहार के रूप में आता है और अपने साथ आत्मिक सामर्थ के कई उपहार लाता है।

6 पतरस के अनुसार, यीशु के मसीहा होने और मृतकों में से जी उठने का प्रमाण थाः

अ. उसके अनुयाईयों पर पवित्र आत्मा का आना

इ भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा किए गए चमत्कार

ब स्वर्ग में परमेश्वर के द्वारा दिए गए चिन्ह

7 जब पवित्र आत्मा पिंतेकुस्त के दिन विश्वासियों पर आया तो वहाँ भीड़ इकट्ठी हो गई क्योंकि वे

अ. बीमारों को चंगा कर रहे थे

इ परमेश्वर के बारे में अनेक भाषाओं में बोल रहे थे

ब पापों से मन फिराने वालों को बपतिस्मा दे रहे थे

8 आपने सीखा कि पवित्र आत्मा आपके लिए बहुत कुछ किर सकता है। निम्नलिखित कथनों में से उसके नीचे रेखा खींचें जो आप चाहते हैं कि प्रभु आपके जीवन में करे

अ.आपका सहायक बने

इआपके साथ हमेशा रहे

बआपको यीशु के बारे में बताए

कआपको सच में चलाए

म मसीह के गवाह बनने में आपकी मदद करे

परमेश्वर की महानता के बारे में आपसे अनेक भाषाओं में बात करे

9क्या आप चाहते हैं कि यीशु आपको पवित्र आत्मा का वरदान दे? वह आपको इसी क्षण बपतिस्मा दे सकता है! यदि आप चाहते हैं कि वो करे, तो इस प्रार्थना को दोहराएँ या अपने शब्दों में प्रार्थना करें：

प्रार्थनाः यीशु, मुझे पवित्र आत्मा का वरदान दे। वह मेरा सहायक और शिक्षक बने। वह मुझे अपनी ताकत से भरे कि मैं उसका गवाह बन सकूँ। मैं चाहता हूँ कि वह मुझसे विभिन्न भाषाओं में परमेश्वर की महानता के बारे में बताए। धन्यवाद यीशु! मैं आपके पवित्र आत्मा रूपी उपहार को स्वीकार करता हूँ। आमीन!

इस अध्याय में आपने चंगाईदाता और बपतिस्मादाता के रूप में यीशु के कार्यों के बारे में सीखा। उसके पास यह उपहार है और वह आपको देना चाहता है। आपका कार्य उसे प्राप्त करना है। उसने कहाः

‘‘और मैं तुमसे कहता हूँ; कि मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ों तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। ..... सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़केवालों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा।’’ (लूका 11：9,13)

**अपने उत्तरों को जाँचें**

4 कपवित्र आत्मा

1 ब शरीर, मन और आत्मा

5 निम्न क्रम बनेगाः अ.3, इ5, ब4, क1, म2.

2 अ. हमें बनाया है

6 अ. उसके अनुयाईयों पर पवित्र आत्मा का आना

3 आपका उत्तर। मती 4：23-24 एवं इब्रानियों 13：8 मिलकर एकदम सही उत्तर देंगे।

7 इ परमेश्वर के बारे में अनेक भाषाओं में बोल रहे थे

8 आपका उत्तर।

**अध्याय 8**

**यीशु - मुक्तिदाता**

आपने सीखा कि यीशु चंगाई और पवित्र आत्मा का बपतिसमा देते हैं। ये अद्भुत सच हैं। परंतु वह उससे भी अधिक कुछ करते हैं जो सब कामों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैः यीशु बचाते हैं। यीशु हमारे लिए मरे, जिंदा हुए और हमेशा हमेशा के लिए मृत्यु, पाप एवं नरक पर जय पाई। यीशु कौन है? वह संसार का एकमात्र उद्धारकर्ता अथवा मुक्तिदाता है।

बाइबल कहती है कि यीशु खोए हुओं का खोजने और बचाने आए। यह सरल सा कथन मसीही धर्म का आधार है। दूसरे धर्म जीवन का उच्च स्तर देने का प्रयास करते हैं। वे बताते हैं कि वे क्यों कष्ट में हैं, उनहे कैसे जीना चाहिए और यदि चूक गए तो क्या दण्ड मिलेगा इत्यादि। परंतु वे सबसे महत्वपूर्ण बात से दूर पड़े हैं： वे अपने अनुयाईयों को दूष्टता पर जय पाने की कोई असली सामर्थ नही देते हैं।

इसके बिल्कुल विपरीत, मसीहत मनुष्य की असहाय अवस्था में, उसे बचाने में परमेश्वर के खुद के हल को प्रस्तुत करती है। हर स्त्री एवं पुरूष से यीशु कहते हैं, ‘‘आप अपने लिए परमेश्वर की योजना में हार चुके हैं। परंतु आप जीत सकते हैं। आप पाप के बोध से कलंकित हैं, परंतु आप साफ हो सकते हैं।’’ परमेश्वर हमें यीशु के द्वारा किस प्रकार बचाता है, यही इस अध्याय का विषय है।

**योजना**

अ. यीशु, संसार का उद्धारकर्ता

ब. यीशु, परमेश्वर का मेम्ना

**लक्ष्य**

1. विचार विमर्श करें कि यीशु परमेश्वर के बारे में क्या क्या नाम बताता है?

2. वर्णन करें कि हर कोई को उद्धार पाने की क्या जरूरत है

3. समझाएँ कि ‘‘परमेश्वर का मेम्ना’’ यीशु के दायित्व को कैसे समझता है।

अ. यीशु, संसार का उद्धारकर्ता

लक्ष्य 1： विचार विमर्श करें कि यीशु परमेश्वर के बारे में क्या क्या नाम बताता है?

सुसमाचार का शुभ संदेश यह है कि यीशु पूरे संसार को बचाने के लिए उद्धारकर्ता बनकर आए। यीशु के जन्म के दौरान, कुछ दूतों ने मिलकर गायाः

‘‘मत डरो; क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हँू जो सब लोगों के लिये होगा, कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।’’(लूका 2：10-11)

**यीशु का नाम**

यीशु नाम का अर्थै ‘यहोवा बचाता है’’ अथवा ‘‘उद्धारकर्ता’’ पिता परमेश्वर ने अपने बेटे के लिए यह नाम चुना। परमेश्वर ने यूसुफ (यीशु के दत्तक पिता) को बताया कि उसे मरियम के द्वारा जन्मने जा रहे बच्चे का क्या नाम रखना है। यीशु नाम सदैव उन्हे याद दिलाएगा कि यीशु कौन था और उसका जन्म क्यों हुआ था। वह परमेश्वर का पुत्र था जो हमें पापों से बचाने के लिए स्वर्ग से पृथ्वी पर आया था। स्वर्गदूत ने कहा, ‘‘वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।’’ (मत्ती 1：21)

जब आप यीशु का नाम लेते या सुनते हैं तो याद रखना कि यह आपके लिए शुभ संदेश हैः यहोवा, अनंत जीवन, स्व-निर्भर परमेश्वर आपको बचाने धरती पर आया। परमेश्वर आपको बचाएगा। हमारी प्रार्थना के दौरान कहा जाने वाला यही वायदा है जब हम यीशु के नाम में माँगते हैं। आराधना और प्रार्थना के दौरान इस नाम को लें। उद्धारकर्ता यीशु के बारे में गाएँ। उसके बारे में दूसरों को बताएँ। केवल वही मुक्तिदाता है - जिसे पिता ने हमें बचाने के लिए भेजा है। पतरस और यूहन्ना ने एक लंगड़े को यीशु के नाम से चंगा कर दिया। पतरस ने कहाः

‘‘और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ दी है; और निश्चय उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इस को तुम सब के साम्हने बिल्कुल भला चंगा कर दिया है। और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।’’(प्रेरितों के काम 3：16; 4：12)

1 यीशु का नाम बताता है कि परमेश्वरः

अ. रचता है

इ न्याय करता है

ब बचाता है

2 यीशु का नाम किसने चुना था?

अ. मरियम

इ पिता परमेश्वर

ब यूसुफ

3 मती 1：21 को मन कंठस्थ करें।

4 कई लोग यीशु के नाम को शाप के लिए या तारधार तलवार के रूप में उपयोग करते हैं। यदि आपने ऐसा किया है तो परमेश्वर से माफी मांगें। यीशु और उसके नाम के आपके जीवन में अर्थों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें।

**उद्धार की प्रकृति**

लक्ष्य 2： वर्णन करें कि हर कोई को उद्धार पाने की क्या जरूरत है

बाइबल में वर्णित उद्धार अथवा बचाना शब्द का अर्थ बहुत विशाल एवं बहुअर्थीय है। बचाना का अर्थ है खतरे से बचाना, बंधुवाई अथवा दण्ड से छुड़ाना, सुरक्षित रखना, चंगा करना इत्यादि। हमारे उद्धारकर्ता यीशु ने हमें शैतान की ताकत से, पाप की बंधुवाई से छुड़ाया, न्याय में हमारा स्थान और पापबोध स्वयं पर लिया, हमें सुरक्षित स्थान पर ले आए और हमारे शरीरों एवं आत्मा को चंगाई दी।

यीशु हमें परमेश्वर से दुरस्थ जीवन के खोयेपन एवं खतरे से बचाता है। पाप ने हम सबको परमेश्वर से अलग कर दिया था। हम अपना मार्ग खो चुके थे। हम उद्देश्यरहित एवं व्यर्थ जीवन के अंधेरे घेरे में घूमते रहते हैं। परमेश्वर के बिना, अनंत मृत्यु हमारे इर्दगिर्द थी। परंतु यीशु हमें बचाने और परमेश्वर की ओर वापिस लौटाने के लिए आए। वह हमें सही मार्ग की ओर चलाता, अपनी उपस्थिति की रोशनी देता है और हमारे जीवन को महत्व और मूल्य प्रदान करता है। यीशु हमारे डर को शांत करता, हमें खुशी और शांति देता, हमें धमकी देने वाले नाश से बचाता, और हमें अपने अनंत घर ले जाता है। यीशु ने कहा, ‘‘क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उन का उद्धार करने आया है।’’ (लूका 19：10)

यीशु हमारे पापों के बोध और दण्ड ने हमें बचाने आए। हम सबने परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन किया और उससे अनंत अलगाव के दण्ड के भोगी हैं। परंतु यीशु ने हमारे पापों के इल्जाम को और पूरे मन से हमारा स्थान स्वयं पर लिया कि हमारे पाप क्षमा किए जाएँ।

‘‘क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।’’(रोमियों 6：23)

यीशु हमें शैतान और पाप की सामर्थ से बचाने आए। वह हमें हमारे पापमय, विरोधी एवं स्वार्थी स्वभाव से स्वतंत्र कर हमें परमेश्वर की संतान का नया स्वभाव प्रदान करते हैं। वह परीक्षा की ताकत को तोड़ता एवं हमारी सेहत एवं आत्मा को हानि पहुँचाने वाली इच्छाओं और आदतों से आजाद करते हैं। यीशु में हमें शैतान के हमलों से सुरक्षा मिलती है। युद्ध अब भी होता है, परंतु यीशु हमें विजय दिलाता है।

‘‘जब तुम पाप के दास थे, तो धार्मिकता की ओर से स्वतंत्र थे। क्योंकि उनका अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिससे पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।’’(रोमियों 6：20, 22)

‘‘सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि हैः पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।’’(2 कुरिन्थियों 5：17)

यीशु हमें पाप के प्रभाव एवं इसकी उपस्थिति तक से बचाने आए। वह हमारे शरीर और आत्मा को सहत प्रदान करता है। और एक दिन वह हमें वो शरीर देगा जो रोगों से परे होगा। वह उन सबके लिए स्वर्ग में एक घर बना रहा है जिन्हे वह पापों से बचाता है। हमारे मरने अथवा यीशु मसीह के आगमन पर वह इस धरती पर अपना राज्य स्थापित करेगा और इसे पाप से बिलकुल शुद्ध करेगा। स्वयं प्रकृति भी हिंसा और नाश से आजाद हो जाएगी। सब कुछ सिद्ध होगा। कितना महान उद्धार!

‘‘फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा। और वह उन की आंखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं।’’ (प्रकाशितवाक्य 21：3-4)

ब. यीशु, परमेश्वर का मेम्ना

लक्ष्य 3： समझाएँ कि ‘‘परमेश्वर का मेम्ना’’ यीशु के दायित्व को कैसे समझता है।

‘परमेश्वर का मेम्ना’ शीर्षक यीशु मसीह के संसार के उद्धारकर्ता के मिशन को दर्शाता है। न

मेम्ने का बलिदान

जब यीशु मसीह अपनी सार्वजनिक सेवकाई को शुरू कर रहे थे, तो यूहन्ना बपतिस्मादाता ने यीशु का परिचय करवायाः ‘‘दूसरे दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है।’’(युहन्ना 1：29)

यूहन्ना को सुनने वाला हर कोई उसका केवल एक ही अर्थ जानता था। पाप के बलिदान के लिए मेम्नों को चढ़ाया जाता था। पापी अपना पाप परमेश्वर के सामने स्वीकार करते एवं मेम्ने की मृत्यु को उनके बदले में स्वीकार करने की विनती करते थे। परमेश्वर ने यीशु नामक मेम्ने को पूरे संसार के लिए बलिदान बनने को भेजा - परमेश्वर का मेम्ना जो संसार के पापों को उठा ले जाता है।

महान भविष्यद्वक्ता यशायाह बताता है कि किस प्रकार मसीहा हमारे पापों के लिए बलिदान बनेगा। वह हमारी सारी गलतियों को स्वयं पर लेगा। वह हमारे बदले में मरेगा, कि हमें पापों से छुड़ा सके। तत्पश्चात वो मृत्यु में से जिंदा होगा, अपने बलिदान का परिणाम देखेगा एवं तृप्त होगा।

यह सब यीशु के साथ बिलकुल यशायाह की भविष्यद्वाणी के अनुसार पूरा हुआः

‘‘वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुःखी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हमने उसका मूल्य न जाना।

निश्चय उस ने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा

परन्तु वह हमारे ही अपराधो के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएँ।

हमतो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।

वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला।

अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी।

और उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उस ने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके मुंह से कभी छल की बात नहीं निकली थी।

तौभी यहोवा को यही भया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब तू उसका प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।

वह अपने प्राणों का दुःख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा।

इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूँगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उस ने बहुतों के पाप का बोझ उठ लिया, और, अपराधियों के लिये बिनती करता है।’’(यशायाह 53：3-12)

चारों सुसमाचार हमें बताते हैं कि यीशु किस प्रकार हमारे पापों के लिए मरे। धार्मिक गुरू उसे मसीहा के रूप में स्वीकारने को तैयार नही थे। वे उससे घृणा करते एवं उसे मार डालना चाहते थे। उन्होने राज्यपाल के सामने उस पर आरोप लगाए और न्याय के दौरान झूठे गवाहों को खड़े कर उस पर कई आरोप लगाए। रोमी राज्यपाल पिलातुस जानता था कि यीशु दोषी नही है। परंतु उसने धार्मिक गुरूओं और भीड़ के पक्ष में अपने निर्णय सुनाए।

उन्होने उसकी मृत्यु माँगी और पिलातुस ने उसे उनके हाथों में क्रूस पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया। यह सबसे क्रूर अपराधी का दण्ड था।

कई लोगों ने पूछा है, यीशु को हमें उद्धार देने के लिए मरना क्यों पड़ा। इसलिए क्योंकि परमेश्वर हम पर लगे पाप के दण्ड से यूँ ही नही बच सकते थे। हल कैसे मिल सकता था? केवल परमेश्वर के पुत्र अर्थात यीशु मसीह का बलिदान। परमेश्वर की धार्मिकता में पाप का दण्ड शामिल है और परमेश्वर की दया ने इसका प्रबन्ध किया।

यीशु ने अपने मन से बलिदान दिया। दुष्ट उसके चारों ओर आए परंतु उनके पास उसे मारने की ताकत नही थी। उसने स्वयं इस दायित्व को स्वीकारा।

उस महत्वपूर्ण दिन, उसके दुश्मन उसे ‘‘खोपडी़’’ नामक जगह पर ले गए। उसके हाथों, पैरों मेंकीलें ठुकीं। उन्होने उसके हाथ पैरों पर कीलें ठोंकी और क्रूस पर चढ़ाया कि सब उसे देख सके। दो डाकुओं के बीच, हमारे पापों का बलिदान, परमेश्वर का मेम्ना मारा गया।

**प्रयोग**

5हर सही कथन के सामने के अक्षर पर गोला बनाएँ

अ.यशायाह भविष्यद्वक्ता ने बताया कि लोग मसीहा को तजेंगे और तिरस्कार करेंगे

इ धार्मिक अगुवों ने पिलातुस को जता दिया था कि यीशु दोषी था।

बकेवल यूहन्ना का सुसमाचार ही हमें बताता है कि यीशु हमारे पापों के लिए मरा।

क यद्यपि दुष्टोअ. ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, परमेश्वर ने उसे पापों का बलिदान बना दिया।

6 ‘‘परमेश्वर के मेम्ने’’ के तौर पर अपने मिशन को पूरा करने, यीशु

अ.पापियों के लिए सिद्ध बलिदान बना

इने परमेश्वर के नियम के बारे में पूर्ण तरीके से बताया

बने पवित्रता का सिद्ध नमूना पेश किया

**मेम्ने के प्रति व्यवहार**

यीशु के क्रूसीकरण को देखने वाले लोग हमें संपूर्ण संसार की तश्वीर देते हैं। कुछ लोगों से उसे घृणा के साथ देखा, उसका और उसके कथनों का मजाक उड़ाया। कुछ अलग ही किस्म के दिखाई दिए जो उसकी मौत की घड़ी में भी उसके कपड़े बाँटना चाहते थे। अन्यों से उसे निराशा के साथ देखा। परंतु कुछ लोगों ने उसकी ओर विश्वास, आशा और प्रेम के साथ देखाः

‘‘जब वे उस जगह जिसे खोपड़ी कहते हैं पहुंचे, तो उन्हों ने वहां उसे और उन कुकर्मियों को भी एक को दहिनी और दूसरे को बाईं ओर क्रूसों पर चढ़ाया। तब यीशु ने कहा; हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहें हैं?

जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उन में से एक ने उसकी निन्दा करके कहा; क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आप को और हमें बचा।

इस पर दूसरे ने उसे डाँटकर कहा, क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी तो वही दंड पा रहा है। और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; पर इसने कोई अनुचित काम नहीं किया। तब उसने कहा; हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।

उसने उस से कहा, मैं तुझ से सच कहता हूँ; कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा। (लूका 23：33-34; 39-43)

ये तीनों क्रूसविरोध, छुटकारा एवं मनफिराव को दिखाते हैं। एक पर, एक व्यक्ति पाप में मर रहा था (विरोध), दूसरे पर, एक व्यक्ति पाप के लिए मर रहा था (छुटकारा) और तीसरे पर, एक व्यक्ति पाप के प्रति मर रहा था (मन फिराव)।

**विरोध**

विरोध के क्रूसपर एक व्यक्ति अपने पाप में मर रहा था। उसने गलत कामों के द्वारा अपना जीवन बर्बाद कर लिया था। जीवन ने उसे कठोर और कड़वा बना दिया था। अब वो मौत के सामने था - अंतिम हार। यदि वो बस विश्वास कर लेता, छुटकारा उसके करीब ही मौजूद था। वह परमेश्वर की उपस्थिति में था। परंतु उसके दिल के विरोध ने सच के लिए उसकी आँखों को अंधा बना दिया था। उद्धारकर्ता की पहुंच में होने के बावजूद, वह आत्मा के कड़वे दर्द में ही मर मिटा - घृणा, उदासी और निराशा में।

**छुटकारा**

छुटकारे के क्रूसपर यीशु हमारे पापों के लिए मरा। हम हमारे विरोध के कारण, परमेश्वर के उचित दण्ड म मृत्यु के भागीदार थे। हम परमेश्वर के दुश्मन, शैतान के दास बन चुके थे। यीशु की मृत्यु ने सब कुछ बदल दिया। जब वो मरा तो उसके हमारी माफी की हर कीमत चुका दी। उसके शैतान को पूर्णतया हरा दिया। परमेश्वर ने हमारे बदले यीशु को स्वीकार किया और शैतान छोड़कर जाने को मजबूर हो गया।

‘‘क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादों से चला आता है, उससे तुम्हारा छुटकारा चाँदी सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ।’’ (1 पतरस 1：18-19)

**मनफिराव**

तीसरे क्रूसपर एक पापी अपने पाप के प्रति मरा, यीशु पर विश्वास कर उसने पाप से सर्वदा हमेशा के लिए स्वतंत्रता को पा लिया। यह व्यक्ति सच का सामना करने के लिए तैयार था, उसने अपनी गलती को स्वीकार किया। उसने यीशु को उद्धारकर्ता, मसीहा के रूप में पहचान लिया था। यीशु मर रहे थे परंतु मन फिराने वाले डाकु ने विश्वास किया कि वह दिन दुनिया पर राज करेगा। इसीलिए उसने उद्धारकर्ता को उसे याद रखने (उस पर दया करने)को कहा। जब वो राजा बनकर आएगा। क्या विश्वास है! मरने से पहले यीशु ने सबसे अंतिम कार्य यह किया कि मर रहे डाकु के पापों को क्षमा कर उसे अनंत जीवन दे गया।

हर व्यक्ति स्वयं उद्धारकर्ता के प्रति अपनी प्रतिक्रिया के आधार पर ही अपनी नियति निर्धारित करता है। दोनों डाकुओं को समान अवसर मिला। एक ने अपनी घृणा और विरोध को पकड़े रखा, उसकी हंसी उड़ाई जो उसे बचा सकता था। दूसरे ने मन फिराया और दया की गुहार की। एक अनंत कष्ट के स्थान, नरक की ओर गया तो दूसरा अनंत खुशी की जगह, स्वर्ग अथवा स्वर्गलोक में गया। ये दोनों हम सबकी तश्वीर हैं। एक विराधी था और खो गया। दूसरे ने मन फिराया, अपनी जरूरत को यीशु के सामने अंगिकार किया और उद्धार पा गया। आप किस नमूने को मानते हैं? आप प्रार्थना के द्वारा प्रभु यीशु मसीह के अनंत जीवन, क्षमा, शांति और सहायता को पा सकते हैं। वह आपके पास है।

‘‘कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंतमेंत दिया। हमको उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।’’ (इफिसियों 1：6-7)

‘‘वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ： उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए। क्योंकि तुम पहिले भटकी हुई भेड़ों की नाईं थे, पर अब अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष के पास फिर आ गए हो।’’(1 पतरस 2：24-25)

**प्रयोग**

7 मान लो कि कोई आपसे कहता है, ‘‘मुझे तो यह सिखाया गया है कि मरने के बाद स्वर्ग में जाने के लिए यह जरूरी है कि मैं किसी याजक के पास जाकर अपने पापों को अंगिकार करूँ और बपतिस्मा लूँ। क्या आप सहमत है? क्यों या क्यों नही?

8नीचे बने तीनों क्रूसों के नीचे उनके शीर्षक लिखें। अपना नाम उसक क्रूस के नीचे लिखें जो आपकी जगह को दिखाता है। इस तश्वीर का वर्णन अपने किसी मित्र अथवा रिश्तेदार से करें।

तश्वीर पेज 114

पहला क्रूस ..........................................................................

दूसरा क्रूस ..........................................................................

तीसरा क्रूस ..........................................................................

**अपने उत्तरों को जाँचें**

5 अ.सही

क सही

1 ब बचाता है

6 अ. पापियों के लिए सिद्ध बलिदान बना

2 इ पिता परमेश्वर

7 आपका उत्तर। आपने सीखा कि किस प्रकार डाकु ने मनफिराया और यीशु पर विश्वास किया। उसके पास मानुषिक याजक से बात करने या बपतिस्मा लेने का समय नही था। परंतु यीशु ने उससे कहा कि वह ‘‘आज’’ ही उसके साथ स्वर्गलोक में होगा।

8 बीच के क्रूस का शीर्षक ‘‘छुटकारा’’ होगा। बाकी दोनों को किसी भी क्रम में ‘‘विरोध’’ और ‘‘मनफिराव’’ का शीर्षक दे सकते हैं।

**अध्याय 9**

**यीशु, पुनरूत्थान और जीवन**

मनुष्य जीवन के पथ के अंत में खड़ी मिलती है मृत्यू - दृढ़, अपरिवर्तनीय एवं अंतरिम। गारब हो या अमीर, हर एक को एक दिन इसका सामना करना पड़ेगा। अधिकतर लोगों के लिए मृत्यु एक डर एवं आतंक है। परंतु यीशु पर विश्वास करने वालों के लिए एक यह एकदम अलग सच्चाई है। उन्हे डरने की आवश्यकता नही है क्योंकि उन्होने उस पर विश्वास किया है जो स्वयं पुनरूत्थान और जीवन है।

यीशु लटकाए गए क्रूस अथवा दफनाई गई कब्र में ही पड़े नही रहे। वे मृतकों में से जी उठे। वे आज अनंत जीवन की सामर्थ में आज भी जीवित हैं, और जो भी विश्वास के साथ उससे जुड़ता है, उनके साथ वे यह अनंत जीवन बाँटते हैं।

संसार के धर्मजीवन की नश्वरता के साथ समझौता करने के कई तरीके बताते हैं परंतु वे कुछ भी नही कर सकते हैं। उन सबके संस्थापक अपनी अपनी कब्रो में दबे पड़े हैं। मसीहत कितनी अलग है! मृत्यु नामक बड़ी सच्चाई के सामने भी, उससे बड़ी एक सच्चाई का यह स्वयं एलान करती हैः यीशु मसीह मृतकों में से जी उठे, और चूँकि वो जिंदा हैं, हम भी जीवित होंगे।

जब यीशु जिंदा हुए तो क्या हुआ? हम उसके कार्य को कैसे जान सकते हैं? उसका पुनरूत्थान उसके व्यक्तित्व के बारे में क्या बताता है? उसका हमारे जीवन के वर्तमान और भविष्य के साथ क्या संबंध है? इन्ही प्रश्नों का उत्तर इस अध्याय में दिया गया है।

**योजना**

अ. यीशु मृत्यु पर विजय पाते हैं

ब. यीशु हमारे पुनरूत्थान को प्रमाणित करते हैं

**लक्ष्य**

1. हमारे पास मौजूद प्रमाणों से साबित करें कि यीशु ने मृत्यु पर विजय पाई

2. वर्णन करें कि यीशु मसीह का पुनरूत्थान आपके वर्तमान और भविष्य के जीवन को कैसे प्रभावित करता है।

अ. यीशु मृत्यु पर विजय पाते हैं

लक्ष्य 1： हमारे पास मौजूद प्रमाणों से साबित करें कि यीशु ने मृत्यु पर विजय पाई

यीशु के मृत्यु में से जी उठने का प्रमाण उसकी धरती की सेवकाई एवं स्वयं के पुनरूत्थान दोनों से मिलते हैं।

**पुनरूत्थान**

आराधनालय का सरदार,याईर अपनी बेटी की चंगाई की गुहार करने यीशु के पास आया। जब वो यीशु के साथ लौटा तो बेटी मर चुकी थी।

‘‘और सब उसके लिये रो पीट रहे थे, परन्तु उस ने कहा; रोओ मत; वह मरी नहीं परन्तु सो रही है। परन्तु उसने उसका हाथ पकड़ा, और पुकारकर कहा, हे लकड़ी उठ! तब उसके प्राण फिर आए और वह तुरन्त उठी; फिर उसने आज्ञा दी, कि उसे कुछ खाने को दिया जाए।(लूका 8：52, 54-55)

नाईन की विधवा के मृत बेटे के शरीर को शोक करने वाले कब्रिस्थान की ओर ले जा रहे थे उनकी मुलाकात यीशु से हुई। शोक यात्रा वहीं पर रूक गई।

‘‘तब उसने पास आकर, अर्थी को छुआ; और उठानेवाले ठहर गए, तब उसने कहा; हे जवान, मैं तुझसे कहता हूँ, उठ। तब वह मुरदा उठ बैठा, और बोलने लगाः और उस ने उसे उस की माँ को सौप दिया।’’(लूका 7：14-15)

लाजर और उसकी बहनें मार्था और मरियम यीशु के अच्छे मित्र थे। लाजर मरा और उसे दफना दिया। चार दिन के बाद यीशु पहुँचे।

‘‘यह कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल आ। जो मर गया था, वह कफन से हाथ पाँव बन्धे हुए निकल आया और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ था; यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो।’’(युहन्ना 11：43-44)

प्रयोग

1दफना दिए जाने के बाद यीशु के द्वारा जिंदा किया गया व्यक्तिः

अ. मरियम और मार्था का भाई लाजर

इसरदार याईर की बेटी

बनाईन की विधवा का पुत्र

यीशु के पुनरूत्थान के प्रमाण

अपनी सेवकाई के दौरान हुए पुनरूत्थान साबित करते हैं कि यीशु का मृत्यु पर अधिकार है। तौभी उसके द्वारा जीवित किए गए लोग दुबारा मरे - वे अब भी मरणहार थे। उसका अपना पुनरूत्थान अलग था। यीशु के दुबारा जिन्दा होते ही मृत्यु पराजित हो गई। वह एक अमर शरीर के साथ जिंदा हुआ, जो दुबारा कभी नही मरेगी।

परंतु हमें कैसे पता कि यीशु मृत्यु में से जिंदा हुए? हमें निश्चित होना है कि वे जिंदा हुए। यदि वह जिंदा नही हुए तो हमारा विश्वास व्यर्थ है और उस पर विश्वास कर मरने वाले सभी मूर्ख ठहरे। अनेक प्रमाणों मे दस निम्नलिखित हैं：

1. सैनिकों की सूचनाः सैनिकों ने गुफासमान कब्र पर मूहर लगाई कि कोई भी उसके शरीर की चोरी कर कहे कि वह जिंदा हो गया है। तीसरी सुबह उन्होने स्वर्गदूत को कब्र खोलते हुए देखा। धरती काँपी। डरे हुए, उन्होने देखा कि कब्र खाली है! वे इन सब बातों की खबर देने नगर को दौड़ गए।

2. खाली कब्र एवं कब्र के वस्त्रः उसके तुरंत बाद कुछ स्त्रियाँ कब्र पर आईं। यीशु का शरीर वहाँ नही था। दो स्वर्गदूतों ने स्त्रियों कहा कि यीशु जिंदा हो गए हैं। पतरस और यूहन्ना कब्र की ओर दौड़े परंतु उसे खाली पाया। यीशु का शरीर जा चुका था परंतु उसकी देह पर लपेटे गए वस्त्र वहीं मौजूद थे।

3. स्वर्गदूत का संदेशः कब्र पर स्वर्गदूतों ने स्त्रियों से कहा, ‘‘तुम जीवित को मरे हुओं में क्यों खोज रही हो? वह यहाँ नही है, वरन् जिंदा हो चुका है। (लूका 24：5-6)

4. यीशु का प्रकट होनाः यीशु कई बार निम्न लोगों के सामने प्रकट हुआः

* स्त्रियों का समूह
* मरियम मगदलीनी
* पतरस
* इम्माऊस की जा रहे दो चेले
* यरूशलेम में दस चेले
* यरूशलेम में बारह चेले
* गलीली झील पर सात चेले
* गलील में एक साथ 500 विश्वासी
* यीशु का आधा भाई याकुब
* बैथेनियाह में स्वर्गारोहण के समय चेले

‘‘और उसने दुःख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हे जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहाः और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा।’’ (प्रेरितों के काम 1：3)

* स्वर्ग में जाने के पश्चात यीशु तीन लोगों को दिखाई दियाः

1. स्तिफनुस, पहला मसीही शहीद

2. शाऊल (पौलुस), जब वो दमिश्क जा रहा था

3. यूहन्ना, अपने दर्शन में

5. यीशु के शरीर की प्रकृतिः यीशु को मिले शरीर की प्रकृति दो बातों को साबित करती है, (1)विश्वासियों ने किसी आभास अथवा आत्मा को नही देखा था। यीशु ने उनके साथ भोजन किया। उन्होने उसे छुआ। उसका शरीर और हड्डियाँ वास्तविक थीं। (2) वह कोमा में जाकर वापिस नही लौटे थे अथवा मरणहार शरीर के साथ जिंदा नही हुए थे। उसका शरीर महिमामयी एवं पुनरूत्थित था जो शारीरिक सीमाओं, दर्द अथवा मृत्यु में बंधा नही था। वह बंद दरवाजों में से होकर गुजरा। वह अपनी मर्जी से प्रकट एवं गायब हुआ। वह सबसे देखते स्वर्ग गया। पुनरूत्थान ने उसके शरीर को नई ताकतें दी थीं।

6. पवित्र आत्मा में बपतिस्माः पिंतेकुस्त के दिन घटी घटना जिंदा हुए यीशु की भविष्यद्वाणी का सटीक पूर्तिकरण था। उसके आत्मा की निरंतर उपस्थिति ने साबित किया कि यीशु जिन्दा है।

7. मसीहियों की गवाहियाँ： यीशु के अनुयाई सदैव इसी सच का प्रचार करते रहे कि वह मृतकों में से जिंदा हो चुका है। उन्हे यीशु को इंकार करने अथवा मृत्यु सहने का आदेश दिया गया परंतु उन्होने मृत्यु को चुना। एक झूठ का बचाव करते तो उन्हे मरना नही पड़ता।

8. शाऊल का परिवर्तनः शाऊल, यहूदी व्यवस्था का एक निपुण युवा चिकित्सक, मसीहत को खत्म करने के भरसक प्रयत्न में था। दमिश्क की ओर मसीहियों को गिरफ्तार करने जाते वक्त, उसको यीशु ने स्वयं गिरफ्तार कर लिया। स्वर्ग से सूरज से भी ज्यादा तेज रोशनी चमकी। रोशनी में से, यीशु ने शाऊल का नाम पुकारा और उससे बात की। शाऊल ने अपना जीवन यीशु को सौंपा और महान प्रेरित पौलुस बना।

9. मसीहतः मसीहत पुनरूत्थान के सच पर टिकी है। मसीही विश्वास खाली कब्र पर आधारित है।

10. यीशु के साथ बातचीतः यीशु से मुलाकात ने हमारे जीवन को बदल दिया। हम उससे रोजाना बात करते हैं। वह हमें उत्तर देता है। जिस प्रकार निम्न गीत कहता हैः

करता हूँ मैं जिंदा यीशु की सेवा

वो जो आज संसार में रहता है

पूछो कि वह जिंदा है, मुझे कैसे पता

वह मेरे दिल में रहता है। (ए0 एच0 अक्ली)

**प्रयोग**

2 पुनरूत्थान के बाद यीशु को मिले शरीर की प्रकृति का सही विवरण है कि वहः

अ. दुबारा होश में आई थी

इआत्मिक थी

बपूर्णतः असली परंतु महिमामयी थी।

3 आपने यीशु के जिंदा होने के दस प्रमाणों को देखा। उन पर एक बार और नजर डालें। और फिर नीचे लिखें प्रमाणों में से गायब पाँच और प्रमाणों को अपनी याद से लिखें।

1. सैनिकों की सूचना

2. .....................................................................

3. स्वर्गदूत का संदेश

4. .....................................................................

5. यीशु के शरीर की प्रकृति ..........................................................................

7........................................................................

8. शाऊल का परिवर्तन

9. मसीहत

10. ...................................................................

ब. यीशु हमारे पुनरूत्थान को प्रमाणित करते हैं

लक्ष्य 2： वर्णन करें कि यीशु मसीह का पुनरूत्थान आपके वर्तमान और भविष्य के जीवन को कैसे प्रभावित करता है।

यीशु क्रूस पर मरे परंतु वहीं पर उन्होने मृत्यु पर जय पाई। उसने निदंा और शर्म के प्रतीक - क्रूस को छुटकारे, शक्ति और विजय के प्रतीक में बदल दिया। यीशु के शरीर को कब्र में रखा गया परंतु कब्र उसे कैद में नही रख पाई। उसने मृत्यु का हराया और उस विजय को अपने अनयाईयों में बाँटने के लिए जिंदा हो गया। यह शक्ति अथवा सामर्थ क्या है?

1. प्रमाण कि यीशु कौन हैः उसका मृत्यु में से जी उठना साबित करता है उसके हर कथन को जो उसने कहा कि वह कौन है - परेमश्वर का पुत्र एवं संसार का मुक्तिदाता।

2. उद्धार का निश्चयः यीशु का जिंदा होना साबित करता है कि परमेश्वर ने उसे हमारे पापों के बलिदान के रूप में स्वीकार कर लिया था। उस पर विश्वास करने वाले हर व्यक्ति को पापों की क्षमा मिलती है।

3. यीशु की संगति में नया जीवनः जिंदा यीशु कलीसिया के सिर बने। हम उसकी देह हैं। यह हमेशा हमारे साथ है। उसका जीवन हमारे अंदर है। हमारे द्वारा उसकी सामर्थ कार्य करती है।

‘‘हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिस ने यीशु मसीह को मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया।’’ (1 पतरस 1：3)

4. यीशु में विजयः यीशु का पुनरूत्थान साबित करता है कि उसने शैतान, पाप और मृत्यु को हरा दिया। उसके साथ आपको डर अथवा पापबोध एवं परीक्षा में जीने की आवश्यकता नही है। यीशु आपकी हार को जय में बदल देता है।

5. आशाः मसीही मृत्यु का सामना पूरी आशा के साथ कर सकते हैं। पुनरूत्थान ही कब्र के बाद हमारे जीवन की बड़ी आशा है। उसने कहा, ‘‘इसलिये कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे।’’(युहन्ना 14：19)

6. पुनरूत्थानः यीशु को उसकी पुनरूत्थान की सामर्थ में जानना उसकी ही तरह, उसके समान शरीर में हमारे पुनरूत्थान को भी शामिल करता है। ‘‘परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में पहला फल हुआ।’’ (1 कुरिन्थियों 15：20)

**प्रयोग**

4 पुनरूत्थान की सामर्थ में यीशु को जानने के छह कदमों को नीचे लिखा गया है। उस कथन के नीचे रेखा खींचें जो आप स्वीकार कर चुके अथवा करने को तैयार हैं：

अ. यीशु ने स्वयं के बारे में कहा कि वह कौन है - परमेश्वर का पुत्र

इ परमेश्वर ने मेरे पापों को क्षमा कर दिया है।

ब यीशु का नया जीवन अब मुझमें है

क शैतान, पाप और मृत्यु को हरा दिया गया है।

म मैं पूरी आशा के साथ मृत्यु का सामना कर सकता हूँ

िएक दिन मैं भी महिमामयी देह को पाऊँगा

**उसका वायदा**

लाजर को जिलाने से थोड़ा पहले, यीशु ने मार्था से कहा, ‘‘पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है? (युहन्ना 11：25,26)

जब यीशु कब्र के सामने कहा, ‘‘हे लाजर, बाहर आ’’, लाजर जिंदा होकर उसके सामने आ खड़ा हुआ। एक यीशु इस धरती पर दुबारा आएँगे। उसकी पुकार सुनते ही, अरसों पहले दफनाई गईं और मिट्टी एवं राख बन चुके शरीर एक नए जीवन को पाकर खड़े हो जाएँगे। हम अमर, महिमामयी देह को पहन लेंगे।

‘‘मैं (यीशु) तुमसे सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे। इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्हों ने भलाई की है वे जीवन के पुनरूत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की है वे दंड के पुनरूत्थान के लिये जी उठेंगे।’’ (यूहन्ना 5：24,26,28-29)

आपके समाज का कब्रिस्तान आपको एक संदेश देता है। कुछ लोगों के लिए यह निराशा अथवा आशाहीनता का संदेह है। कब्र याद दिलाती है कि हम सब एक दिन मरेंगे। हम संसार में कुछ भी लेकर नही आए, न ही कुछ लेकर जाएँगे। परंतु वह अंत नही है। याद रखें कि यीशु की कब्र खाली है! यदि वह आपका उद्धारकर्ता है तो उसका पुनरूत्थान आपके पुनरूत्थान की गाारंटी है। आपका शरीर मर सकता है परंतु आत्मा नही। आपका शरीर शायद मिट्टी में मिल जाए, यीशु इसे वापिस ले आएगा। वह पुनरूत्थान और जीवन है।

**प्रयोग**

5पुनरूत्थान की हमारी गारंटीः

अ. जीवन का नयापन है जैसे हम प्रकृति में देखते हैं

इयीशु का पुनरूत्थान

बजीवन पश्चात मृत्यु पर लोगों का कड़ा विश्वास

6यूहन्ना 11：25-26 मन कंठस्थ करें।

**पूर्तिकरण**

स्वर्ग में अपने घर जाने से पहले यीशु ने अपने अनुयायियों से वापिस आने का वायदा दिया।

‘‘और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहां मैं रहूँ, वहाँ तुम भी रहो।’’(यूहन्ना 14：：3)

यीशु के पुनरूत्थान के चालीस दिन के बाद, यीशु उनके सामने सवर्ग की ओर उठा लिए गए और स्वर्गदूतों ने उन्हे यह कहा।

‘‘और कहने लगे; हे गलीली पुरूषों, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा। (प्रेरितों के काम 1：11)

यीशु ने पौलुस को अपने पुनरूत्थान के बारे में कई सारे विवरण दिए। उसने इसके बारे मेे लिखा भी।

‘‘और जो तू बोता है, यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु निरा दाना है, चाहे गेहूं का, चाहे किसी और अनाज का। परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उस को देह देता है; और हर एक बीज को उस की विशेष देह। मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है; और सामर्थ के साथ जी उठता है। स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती हैः जब कि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है। और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे।’’(1 कुरिन्थियों 15：37,38, 42-44, 49)

‘‘देखो, मैं तुमसे भेद की बात कहता हूं： कि हम सब तो नहीं सोएँगे, परन्तु सब बदल जाएंगे। और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगाः कयोंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जांएगे, और हम बदल जाएंगे। क्योंकि अवश्य है, कि वह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। (1 कुरिन्थियों 15：51-54,57)

‘‘पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम पर उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आन ही बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिस के द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।’’(फिलिप्पियों 3：20-21)

‘‘हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है।’’(1 यूहन्ना 3：2-3)

‘‘क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। सो इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।’’ (1 थिस्सलुनीकियों 4：16-18)

**प्रयोग**

7निम्नलिखित कथन प्रभु यीशु मसीह के पुनरूत्थान एवं उस पर विश्वास करने वालों से संबंधित है। 1-7 तक की संख्या का उपयोग कर उन्हे क्रमबद्ध करें：

.......... अ. सभी विश्वासी बादलों में यीशु मसीह से मिलते हैं

.......... इपरमेश्वर की तुरही फूँकी जाती है और यीशु लौटते हैं

.......... बयीशु स्वर्गारोहण करते हैं

.......... कयीशु का पुनरूत्थान होता है

.......... मयीशु अपने लोगों के लिए जगह तैयार करता है

.......... मसीह में जीवित विश्वासी बदल जाते हैं

.......... हमसीह में मरे विश्वासी पुनरूत्थान पाते और बदल जाते हैं

8 इस कथन को कहने का दूसरा तरीका क्या होगा कि यीशु के आने पर विश्वासी महिमामयी हो जाएँगेः

अ. मरणहार अमरता में बदल जाता है

इ वास्तविक झूठ में बदल जाता है

ब प्राणी अप्राणी में बदल जाता है

9मान लो कि कोई आपसे कहता है, ‘‘क्योंकि हम नही जानते कि यीशु आएँगे, इसलिए हम खुद को इसके लिए तैयार भी नही कर सकते हैं।’’ इस अध्याय का कौनसा पद इस गलत धारणा को सही करने में आपकी मदद कर सकता है?

**अपने उत्तरों को जाँचें**

5 इ यीशु का पुनरूत्थान

1 अ. मरियम और मार्था का भाई लाजर

7 सही क्रम हैः अ. 7, इ4, ब2, क1, म3, 6ि, ह5

2 ब पूर्णतः असली परंतु महिमामयी थी।

8 अ. मरणहार अमरता में बदल जाता है

3 आपका उत्तर निम्न से मेल खाए

2 खाली कब्र एवं कब्र के वस्त्र

4 यीशु का प्रकट होना

6 पवित्र आत्मा में बपतिस्मा

7 मसीहियों की गवाहियाँ

10 यीशु के साथ बातचीत

9 आपका उत्तर।सबसे अधिक मदद कर सकने वाला पदः 1 यूहन्ना 3：2-3

**अध्याय 10**

**यीशु मसीह- प्रभु**

समाज में कुछ ऐसे लोग होते हैं जिनका दुसरों पर अधिकार रहता है। सरकारी अधिकारी, पुलिसवाले, मैनेजर, बास, माता पिता इत्यादि, जिसमें लगभग सब लोग आज्ञाकारिता की माँग करते हैं। यीशु के जन्म के दौरान भी समाज कुछ अलग नही था। उस समय रोमी राज था। फिलिस्तीन की गद्दी पर हेरोदेशे बैठा था और रोमी सैनिकों ने उसके राज को सुरक्षित रखा।

जब यीशु के जन्म का समाचार कि यहूदियों के राजा का जन्म हुआ है, हेरोदेश के पास पहुँचा तो वह क्रोधित हो गया। उसने इस नए राजा को मारने की कोशिश की परंतु सफल नही हुआ। यीशु ने धरती पर अपना मिशन पूरा करने के लिए जीवन जिया। उसने कभी भी राजनैतिक क्षेत्र को किसी प्रकार की चुनौती नही दी। परंतु उसने दिखाया कि उसका लक्ष्य केवल मरना ही नही, वरन् राज करना भी था। उसने कहा कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। परंतु फिर क्या हुआ? मसीहियों ने रोमी राज को नही पलटा। यीशु स्वर्ग लौट गए, और आज संसारभर में कपबजंजवते, जलतमदजे और प्रताड़क भरे पड़े हैं। वह प्रभु कैसे हो सकते हैं? उसके पास किस प्रकार का अधिकार है? सबके ऊपर वह कब राज करेगा? इन सभी प्रश्नों का उत्तर इस अध्याय में दिया गया है।

**योजना**

अ. यीशु का प्रभु के रूप में अधिकार

ब. अधिकार का प्रमाण

स. यीशु को प्रभु माना जाता है

**लक्ष्य**

1. बताएँ कि यीशु के बारे में उनका शीर्षक ‘प्रभु’ क्या विवरण देता है

2. उन तरीकों को बताएँ जिनके द्वारा यीशु ने धरती पर अपने अधिकार को दिखाया

3. यीशु की वर्तमान एवं भावी प्रभुता के बारे में वर्णन करें

अ. यीशु का प्रभु के रूप में अधिकार

क्या आप यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं जो मृतकों में से जी उठा? वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। आपका आत्मिक जीवन इसी पर निर्भर है।

‘‘कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।’’(रोमियों 10：9)

**अधिकार का शीर्षक**

लक्ष्य 1. बताएँ कि यीशु के बारे में उनका शीर्षक ‘प्रभु’ क्या विवरण देता है

जब लोगों ने यीशु को प्रभु पुकारा तो उनका मतलब क्या था? पौलुस ने यीशु को 90 बार से अधिक बार प्रभु कहा है। उद्धार पाने के लिए यीशु मसीह पर प्रभु के रूप में विश्वास करने का मतलब क्या है? परमेश्वर क्यों कहते हैं कि सब जुबान अंगीकार करेगी कि यीशु प्रभु है?

नये नियम में ‘प्रभु’ के लिए युनानी भाषा में उपयोग किया गया शब्द ‘कुरियोस’ अधिकार का पद है। लोग सम्मान दिखाने के लिए इसका उपयोग करते थे। हिन्दी में उपयुक्त ‘श्रीमान’ के समान यह विनम्र संबोधन का एक तरीका हो सकता है। परिवार का मुखिया घर का प्रभु हुआ करता था। सेवक अपने स्वामियों को प्रभु बुलाते थे। दास अपने शासकों को यही सम्मान देते थे।

‘कुरियोस’ आराधना का एक शीर्षक था जो सच्चे परमेश्वर, यहोवा समेत कई धर्मों के देवताओं के लिए इस्तेमाल होता था। इस अर्थ में, बाइबल पिता परमेश्वर एवं पुत्र यीशु मसीह, दोनों के लिए इस पद का उपयोग करती है। यीशु को ‘प्रभु’ कहना उसकी दैविकता, पिता के साथ उसकी सहभागिता, संसार पर उसकी सर्वोच्चता एवं जीवनों पर उसके अधिकार को पहचानना है।

जब यीशु हमारा प्रभु है, तो हम आदेशों के लिए उसे सूचना देते और उसके निर्देशों को मानते हैं। हम सब कुछ उसके पास प्रार्थना में ले जाते हैं। उसका वचन हमारे दैनिक जीवन के लिए हस्तपुस्तिका है। हमें किसी बात की कोई चिंता नही करनी। हमारे प्रभु के पास सारी सामर्थ है, वो सब कुद जानते हैं, और वो हमसे प्रेम करते हैं। हमें केवल उस पर विश्वास करना एवं उसकी बात माननी है।

**प्रयोग**

1रोमियों 10：9 मन कंठस्थ करें

2जब हम यीशु को प्रभु कहते हैं तो उसके किस रूप को प्रकट करते हैं?

अ. दैविकता एवं अधिकार

इ मित्रता एवं प्रेम

ब बुद्धि एवं ज्ञान

ब. अधिकार का प्रमाण

लक्ष्य 2： उन तरीकों को बताएँ जिनके द्वारा यीशु ने धरती पर अपने अधिकार को दिखाया

यीशु मसीह ने अपनी शिक्षाओं में अपने अधिकार को स्पष्ट किया। अपने स्वाभिमान के द्वारा उसने लोगों को चकित कर दिया जिसके माध्यम से उन्होने परमेश्वर एवं मानव जीवन के सच को प्रकट किया। उसने स्वयं को मार्ग, सत्य और जीवन कहा।

यीशु ने प्रकृति पर अपना अधिकार प्रकट किया। वह तुफानी लहरों पर चला। उसके शब्दों, ‘चुप, शांत हो जा’ ने एक बड़े उफान को शांत कर दिया। उसने पानी को दाखरस में बदला। उसने पाँच रोटियों और दो मछलियों से, 5000 पुरूषों (स्त्रियाँ और बच्चे अतिरिक्त) को खिलाया। (मती 14：21)

यीशु ने रोग और मृत्यु पर अपना अधिकार दिखाया। उसके स्पर्श से बहरे सुनने, अंधे देखने और लंगड़े चलने लगे। उसने मरे हुओं को जीवित कर दिया। वह मरा और फिर जी उठा।

यीशु ने अपने नैतिक अधिकार को प्रकट किया। उसने पाप क्षमा किए। उसने प्रताड़ितों में से दुष्टात्माओं को निकाला। उसने अपने पिता के कार्यों को किया और संसार के सामने परमेश्वर को प्रकट किया। वह स्वर्ग को गया और पवित्र आत्मा को अपनी कलीसिया में भेजा।

यीशु ने कलीसिया पर अपना अधिकार दिखाया। प्रभु होने के नाते, उसने अपने चेलों को संसारभर में सुसमाचार सुनाने भेजा और उन्हे अलौकिक सामर्थ प्रदान की। जब हम उसकी बातों को मानते हैं तो वह स्वर्ग के सारे अधिकार से हमारी मदद करता है।

‘‘तुम मुझे गुरू, और प्रभु, कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ।’’ (युहन्ना 13：13)

‘‘यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्रा और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।’’ (मत्ती 28：18-20)

**प्रयोग**

3यीशु ने हर परीक्षा पर जय पाई और धरती पर एक सिद्ध जीवन जिया। यह किस क्षेत्र में यीशु के अधिकार को दिखाता है?

अ. नैतिकता

इ प्रकृति

ब आत्मिकता

4यीशु के किसके माध्यम से अपनी शिक्षाओं के द्वारा अपने अधिकार को प्रकट किया?

अ. लंगड़ी और झुकी स्त्री को चंगा कर

इयह कहकर कि पिता की ओर का मार्ग वही है

बअपने चेलों से हर जगह जाकर चेले बनाने की आज्ञा देकर

स. यीशु को प्रभु माना जाता है

लक्ष्य 3： यीशु की वर्तमान एवं भावी प्रभुता के बारे में वर्णन करें

आज धरती पर, कलीसिया यीशु को प्रभु मानती है। स्वर्ग में वह सभी आत्मिक ताकतों के ऊपर है। और एक दिन पूरा संसार उसे सही शासक एवं प्रभु स्वीकार करेगा।

जो उसने (परमेश्वर ने) मसीह के विषय में किया, कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दहिनी ओर। सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया। और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दियाः और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। (इफिसियों 1：20-22)

**कलीसिया का सिर**

यीशु मसीह को उद्धारकर्ता एवं प्रभु मानने वाले सभी कलीसिया के सिर हैं। बाइबल कहती है कि यीशु हमारे सिर और कलीसिया उसका शरीर है। हमने मसीह के साथ सहभागिता के लाभ को देखा। उन सबका आनंद हम तभी ले सकते हैं जब उसे हम अपने जीवन में प्रथम स्थान दें। सिर शरीर को निर्देश देता है, शरीर सिर को नही। हर सदस्य का उस शरीर में अपना कर्तव्य है। हम सबको शरीर की भलाई के लिए मिलकर कार्य करना और हमारे सिर, यीशु मसीह के उद्देश्यों को पूरा करना है।

‘‘और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं। और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।’’ (कुलु. 1：17,18)

‘‘वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं। और जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न भिन्न बरदान मिले हैं, तो जिस को भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे।’’(रोमियों 12：5,6)

हम हर चीजों में उसकी बात मानते हैं। मसीह में होने का अर्थ यही है। हम समाज का विचार नही,परंतु कलीसिया को दिए गए मसीह के विचारों को मानते हैं। हम जहाँ भी जाएँ, उसकी योजनाओं को मानते हैं： घर में, कार्य पर, खेल के दौरान। यह हमारे चारों के लोगों को दिखाता है कि वह हमारा प्रभु है। एक दिन हम उसके सामने खड़े होंगे। हम पर हमारे पापों का न्याय नही होगा क्योंकि उन्हे क्षमा कर दिया गया है। परंतु वह देखेगा कि हमारा जीवन कैसा था और हमने उसे कैसे जिया।

‘‘क्योंकि अवश्य है, कि हम सबका हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए।’’ (2 कुरिन्थियों 5：10)

एक रोमी शासक के न्याय की कुर्सी को ‘बीमा (ठम्ड।)’ कहा जाता था। रोमी शहर में, यदि किसी व्यक्ति के कार्य का निर्णय बीमा कुर्सी पर हो जाता तो कोई फर्क नही पड़ता कि कौन क्या कह रहा है। बाइबल यीशु मसीह की न्यास की कुर्सी को भी बीमा कहती है। इस प्रकार, धरती पर लोग अपने प्रभु, यीशु मसीह की सेवा करने को रहते हैं। दूसरों का सोचना कोई मायने नही रखना। हमारे जीवन के प्रति यीशु के विचार महत्वपूर्ण हैं।

बाइबल ऐसे लोगों के उदाहरण देती है जिन्होने सच्चाई के विरोध में आए नियमों और रीतियों का सामना किया। निर्णय लेना कठिन हो सकता है, मृत्यु लायक तक। आप इस बात को अवश्य पहचानने पाएँ कि समाज के नियम कहाँ पर यीशु के नियमों का विरोध करते हैं। यीशु ने अपने अनुयाईयों को ऐसा बनने को कहाः

‘‘देखो, मैं तुम्हें भेड़ों की नाई भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ, सो सांपों की नाई बुद्धिमान और कबूतरों की नाई भोले बनो।’’ (मत्ती 10：16)

याद रखें कि आप उसके राज्य के नागरिक और उसके शरीर के भाग हैं। यदि आप अपने प्रभु के रूप में उसकी बात मानते हो तो आपका जीवन उसको प्रसन्न करने वाला होगा। उसकी मान्यता कितना अद्भुत इनाम होगी! तो बेवजह, सताव सहना, कितना शर्महाक होगा!

**प्रयोग**

5 बाइबल कहती है कि एक दिन मसीह हमारा न्याय करेगा,

अ. यह निर्धारित करने कि किस पाप की हम सजा भुगतें

इ यह देखने कि हम उद्धार के योग्य हैं या नही

ब हमारे द्वारा अर्जित इनाम हमें देने

6 मसीहियों में क्या देखकर, लोग देख सकते हैं कि यीशु आज भी प्रभु है?

अ. कलीसियाओं की इमारतें

इहर बात में यीशु की आज्ञा मानना

बदुष्ट शासकों को बलपूर्वक निकाल फेंकना

7क्या यीशु वास्तव में हमारा प्रभु है? क्या आप एक शरीर, कलीसिया के भाग के रूप में अपने भाईयों बहनों के साथ मेल में जीवन जीते हो? उससे मदद माँगें कि आप उसे प्रभु मानकर, हर चीज में उसकी आज्ञा मान सको।

राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु

हम देख सकते हैं कि यीशु आज कलीसिया और मसीही जीवनों का प्रभु है। परंतु उसको संपूर्ण रूप से जानने के लिए, भविष्य में भी देखना जरूरी है। वहाँ हमउसे संपूर्ण महिमा, हर वस्तु पर राज करने आ रहे राजा के रूप में देख सकते हैं：

‘‘देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है; और हर एक आँख उसे देखेगी, बरन जिन्होंने उसे बेधा था, वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हाँ। आमीन। प्रभु परमेश्वर वह जो है, और जो था, और जो आनेवाला है; जो सर्वशक्तिमान हैः यह कहता है, कि मैं ही अल्फा और ओमिगा हूँ।’’ (प्रका. 1：7,8)

यीशु प्रथम - प्रारंभ और वास्तविकता के स्रोत हैं। यीशु ही अंतिम - परमेश्वर के अनंत उद्देश्यों को अंतिम रूप देने वाले हैं। वही सब चीजों को अपनी अपनी जगह पर सही बिठाएगा। वह सभी बुराईयों पर जय पाएगा और सदा सर्वदा राजाओं का राजा एवं प्रभुओं का प्रभु बनकर राज करेगा।

बाइबल कहती है कि यीशु के वापिस आने से पहले धरती युद्ध, अकाल, महामारी, भूकंप, दुषित जल, मर रही मछलियाँ, नाश हो रही फसल, राजनैतिक उत्पीड़न इत्यादि से भर जाएगी। बाइबल के वचन सच्चे हैं। आज हम ये सब हमारे चारों ओर होते हुए देख सकते हैं। परंतु एक दिन, एक बहुत बड़ा बदलाव आ जाएगा।

यीशु मसीह पूरे संसार को अपना लेने के लिए आएगा। उसके पास राज करने का दुगुना अधिकार हैः उसने संसार को बनाया; और उसने संसार को अपने लहू से धोकर साफ किया। बाइबल की अंतिम पुस्तक, प्रकाशितवाक्य में, हम एक सिंहासन देख सकते हैं। उस सिंहासन के केंद्र में एक मेम्ना है। वह मेम्ना प्रभु यीशु मसीह है, जिसने हमें बचाने के लिए अपनी जान दी। वह राज करेगा!

‘‘फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा। और वह उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं। और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ, फिर उसने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।’’ (प्रकाशितवाक्य 21：3-5)

इस छोटे पाठ्यक्रम में आप प्रभु यीशु मसीह के शीर्षक, एवं उसके अद्भुत राज्य के बारे में सब कुछ नही पढ़ सकते हैं। परंतु हम आशा करते हैं कि अब आप उसे और भी बेहतर जान पाए हैं और आप उससे अब प्रेम करते हैं। हमारी प्रार्थना है कि आप उसे हर दिन और बेहतर तरीके से जानं और उसके आगमन का इंतजार करते रहें। और फिर, एक दिन, जब वो वापिस आएँगे तो आप उसको आमने सामने देख सकेंगे, उसे वास्तव में जान सकेंगे, और मेम्ने के सर्वभौमिक गीत में शामिल हो सकते हैं।

यूहन्ना परमेश्वर के द्वारा दिए गए एक दर्शन को बाँटता है जो परमेश्वर ने उसे दिया और जिसमें एक बड़ी भीड़ को मेम्ने का गीत गाते हुए देखता है।

‘‘और वे यह नया गीत गाने लगे, कि तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध होकर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं। और जब मै ने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों की चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिन की गिनती लाखों और करोड़ों की थी। और वे ऊंचे शब्द से कहते थे, कि वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है। फिर मैं ने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उन में हैं, यह कहते सुना, कि जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे।प्रकाशितवाक्य 5रू9-13

**प्रयोग**

8यीशु मसीह के शीर्षक की संख्या (दाहिनी और) को सामने लिखे इसके सबसे अच्छे वर्णन को बताने वाले अक्षर के सामने लिखें।

अ. दैविकता 2) कुरियोस

इकलीसिया का निदेशक 3) प्रथम और अंतिम

ब प्रभु और स्वामी 5) शरीर की देह

क परमेश्वर के उद्देश्य को पूरी करना 4) परमेश्वर का मेम्ना

10 पापों को क्षमा

9प्रकाशितवाक्य हमें सिंहासन पर एक मेम्ने को देखता है। यह हमें समझने में मदद करता है कि सब कुछ जानने वाला भी वही है जोः

अ. बलिदान के रूप में मरा

इ एक अच्छा जीपन जिया

ब आत्मिक सच सिखाए

10 हम यीशु की संपूर्ण तश्वीर को तभी देख सकते हैं जबः

अ. धरती पर आने से पहले का जीवन देखें

इकलीसिया के शासक के रूप में आज का जीवन

बमहिमा में राज कर रहे महिमामयी

11आपने उन कारणों को देखा कि किस प्रकार प्रभु के रूप में हमारी आराधना और आज्ञाकारिता के पात्र हैं यीशु मसीह। प्रकाशितवाक्य 5：9-13 को अपनी गवाही और उसको स्तुति के आधार पर, प्रकाशितवाक्य 5：9-13 पढ़ें।

**अपने उत्तरों को जाँचें**

6 इहर बात में यीशु की आज्ञा मानना

2 अ. दैविकता एवं अधिकार

8 यीशु मसीह के शीर्षक की संख्या (दाहिनी और) को सामने लिखे इसके सबसे अच्छे वर्णन को बताने वाले अक्षर के सामने लिखें।

अ. 1) कुरियोस

इ 3) शरीर की देह

ब 1) कुरियोसप्रभु और स्वामी

क 2) प्रथम और अंतिम

10 4) परमेश्वर का मेम्ना

3 अ. नैतिकता

9 अ. बलिदान के रूप में मरा

4 इयह कहकर कि पिता की ओर का मार्ग वही है

10 बमहिमा में राज कर रहे महिमामयी

5 बहमारे द्वारा अर्जित इनाम हमें देने

**बधाईयाँ**